* ओ३म् *
खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० २६

कुरान दर्पण

(यह पुस्तक केवल आर्य समाजियों के लिये है।)

ग्रन्थकार—
आचार्य डा० श्रीराम आर्य

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर 5332
पु. परिग्रहण क्रमांक .....

* ओ३म् *

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० २६—२

गुरु विरजानन्द दण्डी
[illegible] पु 5332
परिग्रहण क्रमांक
दयानन्द महिला महा[illegible]

कुरान दर्पण

(यह पुस्तक केवल आर्य समाजियों के लिये है)

ग्रन्थकार

'खंण्डन मण्डन ग्रन्थ माला' के समस्त

ग्रन्थों के यशस्वी प्रणेता

"आचार्य डा० श्रीराम आर्य"

कासगंज (उ० प्र०)

प्रकाशक :

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

[illegible] संख्या 2826
विषय १८.३.१६
दिनांक 24.7.68

दयानन्दाब्द १४२

प्रथमवार सृष्टि संवत् १९७२९४९०६६

११०० सन् १९६६ ई० मू० २) रु०

प्रकाशक
वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज

॥ सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित ॥

मुद्रक:
साहित्य प्रिंटिंग प्रेस
हाथरस ।

भूमिका

कुरान शरीफ को बने हुए लगभग १४०० वर्ष हो चुके हैं। इसकी रचना हजरत मुहम्मद साहब ने मक्का तथा मदीना आदि स्थानों में बैठकर की थी। कुरान की रचना का मुख्य उद्देश्य मक्का और उसके आसपास के रहने वाले लोगों को डराना मात्र था। इस बात को कुरान शरीफ पा० ७ सूरे अनआम आयत ९२ तथा पा० २५ सूरे शूरा आयत ७ में स्पष्ट शब्दों में बतलाया गया है। कुरान में जिन घटनाओं का उल्लेख है वे भी मक्का अथवा अरब प्रदेश से ही सम्बन्ध रखती हैं। कुरान को अरबी में बनाने का उद्देश्य भी यही बताया गया है ताकि अरब के रहने वाले उसे समझ सकें। इस प्रकार कुरान बनाने का उद्देश्य सीमित सिद्ध हो जाता है। वह सारे संसार के लिये नहीं बनाया गया था। इसलिये जो लोग यह कहते हैं कि वह मनुष्य मात्र के लिये है, वह गलती करते हैं।

मुसलमान लोग मौहम्मद साहब को पैगम्बर (ईश्वरीय दूत) मानते हैं। वे कुरान को भी ईश्वरीय आदेशों का संग्रह मानते हैं। स्वयं कुरान भी यही बताता है कि उसकी आयतें समय २ पर धीरे २ खुदा की ओर से जिब्रील फरिश्ते के द्वारा मौहम्मद साहब पर उतरा करती थीं। कुरान में स्थान २ पर खुदा की ओर से भी यही कहा गया है कि यह कुरान मेरी तरफ से है। खुदा ने कसमें खा खा कर कुरान के इलहाम होने की बात पचासों बार कही है। यह बात स्वयं शक पैदा कराने वाली है। इस एक बात को पचासों बार कहना और बिना

जरूरत कसमें खाना, फरिश्तों की गवाहियां पेश करना, कभी लोगों को कुरान की जैसी १ सूरत कभी १० सूरतें बनाने की चुनौती देना और न बना सकने पर कुरान को ही खुदाई किताब मानने को मजबूर करना, यह सब बातें बहुत कमजोर तर्क प्रस्तुत करती हुई, यह प्रगट करती हैं कि कुरान वस्तुतः इलहाम नहीं था, वरन् जब लोग उसके इलहाम होने में शक करते थे तो उसके रचयिता मुहम्मद साहब खुदा की ओर से इसके इलहाम होने में आयतें बनाकर बार २ उसके खुदाई होने का दावा पेश किया करते थे।

यदि कुरान इलहामी पुस्तक होती तो उसमें प्राणी मात्र के कल्याण के उपदेश होते। मनुष्यों में परस्पर ईर्षा, द्वेष, पक्षपात, मांसाहार, परस्पर विरुद्ध बातों का कथन, अनित्य मानव इतिहास, ज्ञान विज्ञान, सृष्टि नियम, भूगोल खगोल के विरुद्ध वर्णन उसमें देखने को न मिलते। ईश्वर की पवित्र सत्ता पर कलंक लगाने वाले उल्लेख, हजरत लूत वगैर की मामूली सी घटनाओं का वर्णन उसमें नहीं होता। बहिश्त और दोजख के बे सर पैर के वर्णन उसमें न दिये जाते। कयामत की कहानियां जिन पर कोई बुद्धिमान व्यक्ति विश्वास नहीं कर सकता है उसमें न दी गई होतीं। फरिश्तों और जिन्नों की मिथ्या कल्पनाओं का उसमें अभाव होता। उल्कापात को शैतानों के मारने को तारों का टूटना न बताया जाता, निरीह पशुओं ऊंटों आदि को कत्ल करके उनको खाने के गन्दे आदेश उसमें न होते, तलाक की गन्दी प्रथा और इसमें दूसरे पति से सम्भोग करा लेने के बाद ही स्त्री को पहिले पति द्वारा ग्रहण करने योग्य अन्यथा अयोग्य न बताया गया होता। खुदा के द्वारा सैकड़ों बार बे सर पैर की कसमें खाने की बातों से उसके

कई सिपारे न भरे पड़े होते, मुहम्मद साहब की बीबियों और उनके घरेलू मामलों में खुदा को एक घरेलू मेम्बर (सदस्य) के रूप में दखल देता न दिखाया गया होता। कुरान यदि खुदाई पुस्तक होती तो उसमें खुदा को एक फरिश्ते (शैतान) को खुद ही बे इन्साफी से गुमराह करके शैतान न बनाया गया होता, और उस शैतान फरिश्ते के मुकाबिले पर खुदा की खुली हार का वर्णन न किया गया होता।

कुरान में सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अल्पशक्तिमान, सर्वव्यापक को एक देशीय सातवें आसमान पर अर्श (तख्त) पर बैठने वाला, अल्पज्ञ, क्रोधी, अन्यायी, अपनी बात को पलटने वाला, एक बार आयत उतार कर फिर उनको मंसूख करने वाला अथवा संशोधन करने वाला, पोल आकाश को ठोस बताने वाला, सात आसमान बनाने वाला आदि न बताया गया होता।

कुरान से ही जाहिर है कि कुरान बनाने वाले मुहम्मद साहब को जबकि वे अपने को खुदा का पैगम्बर बताकर अपने पर कुरान उतरना बताते थे तो उस वक्त के लोग उनको पागल शायर मानते थे। इससे स्पष्ट है कि वे शायर तो अवश्य ही थे। तथा उनके बारे में यह कहना कि वे बिलकुल बे पढ़े लिखे थे सर्वथा गलत ही जाता है।

कुरान शरीफ को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर उसकी स्थिति साफ हो जाती है कि उसमें परस्पर विरोधी, ज्ञान विज्ञान, खगोल भूगोल विरुद्ध वर्णन भरे पड़े हैं। कयामत दोजख बहिश्त और फरिश्ते के वर्णन देख कर यह स्पष्ट है कि अन्ध विश्वास पूर्वक उसे पढ़ने वालों पर अज्ञान का प्रभाव होगा, लोग सत्य को मिथ्या और कुरान की मिथ्या बातों को सत्य मानने लगेंगे

जैसा कि आज मुसलमानी जगत कुरान के अन्ध विश्वास के कारण ज्ञान का शत्रु बना हुआ है।

हमने कुरान शरीफ को अनेक बार पढ़ा है, हम उसकी असलियत को समझते थे। परन्तु कभी हमने उस पर कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं समझी थी। क्योंकि हम समझते थे कि कुरान को केवल मुसलमान ही पढ़ते हैं और उनका उसमें अन्ध विश्वास है। यदि हम उसके बारे में कुछ लिखेंगे तो हमारी बात सत्य होते हुए भी कट्टर पन्थी मुसलमानों को सम्भव है अप्रिय लगे। इसलिये हमने कभी अपने विचारों को लिखना उचित नहीं समझा था। अभी हाल में हमारे देखने में एक 'हिन्दी कुरान' की प्रति आई है। उसके लेखक हैं श्री अहमद बशीर साहब एम. ए. कामिल, दबीर कामिल, मौलवी (फिरंग महल)। तथा प्रकाशक है प्रभाकर साहित्यालोक, रानी कटरा, लखनऊ। इस कुरान में हिन्दी अनुवाद मात्र है, मूल आयतें उसमें न देकर उनके नम्बर दिये गये हैं।

इस कुरान की भूमिका श्री नन्दकुमार अवस्थी नामक किसी ब्राह्मण महोदय ने लिखी है। उन्होंने अपनी जाति परम्परा का पालन करते हुए ठीक उसी प्रकार कुरान की प्रशंसा के पुल बांधे हैं जैसे चरण-भाट लोग हमेशा दूसरों की तारीफों में बांधा करते थे। हमको यह भूमिका अत्यन्त आपत्तिजनक लगी है। इसमें कुरान की वास्तविक स्थिति को सर्वथा छुपाकर उसका प्रचार हिन्दू मात्र में करने के लिये उसे गलत रूप में जनता के सामने उपस्थित किया गया है, गीता आदि हिन्दू शास्त्रों के भी उद्धरण देकर कुरान हमारे मान्य ग्रन्थों के समक्ष लाकर खड़ा किया गया है ताकि लोग उसे पढ़कर उसके प्रभाव को ग्रहण करें।

मुहम्मद साहब को पैगम्बर (खुदा का पैगाम लाने वाला) के स्थान पर जननायक बताया गया है। सातवें आसमान पर तख्त पर बैठने वाले एक देशीय खुदा को सर्व व्यापक बताया है, कुरान को ईश्वरीय महान ज्ञान का ग्रन्थ बताया है, उसे विश्व के सभी धर्मों को मान्य सदाचार का प्रचारक माना है। उसे 'धर्म-नीति-सदाचार-समाज-न्याय को सर्वतोमुखी शिक्षा देने वाला पवित्र ग्रन्थ इस्लामेतर बन्धुओं के लिये भी माननीय और आदरणीय लिखा है। बरबस धर्म परिवर्तन और कत्ले आम की कुरान की समर्थित बातों को कुरान के विरुद्ध बताया है। 'कुरान किसी का शत्रु नहीं, सब का सखा सबको हितकर, है यह भी लिखा गया है। ईश्वर को कुरान में 'सर्वत्र निराकार स्वरूप का प्रतिपादन है' यह मिथ्या बात भी उसमें लिखी है। जहाद जिसका कुरान में अन्य मतवालों के साथ युद्ध व सख्तियां करने का आदेश है उसे निष्काम और निस्संग कर्म का स्वरूप बताया गया है और उसकी तुलना गीता के सन्यास और योग से की है। कुरान के फरिश्तों को 'सद्ध बुद्धि और पाप बुद्धि ही के प्रतिनिधि' माना है। उनका स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं माना है जो कि कुरान विरुद्ध है। काफिर का अर्थ भी ईश्वर के एकत्व और सत्ता से इन्कार करने वाला लिखा है जो कि सर्वथा मिथ्या है। दंड व्यवस्था में कुरान की पूरी आयत को छोड़कर थोड़ा सा अंश लेकर तारीफ की है कि आंख के बदले आंख प्रत्येक अंग के बदले अंग का दंड अपराधो को मिले' इसे ठीक बताया है, तथा आयत के शेष अंश कि 'औरत के बदले (बेगुनाह) औरत' इसे छोड़ दिया है। क्योंकि वह कुरान को सच्चा बढ़िया ग्रन्थ साबित करने चले हैं।

अन्त में आप उपदेश देते हैं कि 'अब कुरान तथा सभी

धर्म ग्रन्थों की वास्तविक शिक्षा के अनुसार सद्भावना, सह अस्तित्व और सर्वकल्याण का मार्ग सबको अपनाना उपयुक्त है।'

हमें इस्लाम और कुरान परस्त अवस्थी जी की भूमिका को पढ़कर बड़ा धक्का लगा और हमने सोचा कि हिन्दू जाति को गुमराह करने का सदैव से ठेका पौराणिक ब्राह्मणों के ही हाथ में रहा है। किसी न किसी लोभ लालच के वशीभूत होकर इन्हीं लोगों ने मुसलमान आक्रान्ता लोगों की सदैव सहायता की है जो इतिहास के पन्नों में देखी जा सकती है। और आज भी भारत की धर्म प्राण भोली जनता को किसी अदृश्यस्वार्थ से प्रेरित हो कर यह पौराणिक अवस्थी जी कुरान के सत्यस्वरूप को छिपाकर अपनी भूमिका द्वारा उसे इस्लाम ग्रहण करने को प्रेरित कर रहे हैं। उनको यदि भूमिका ही लिखनी थी तो कुरान का वास्तविक स्वरूप ज्योंका त्यों अपने लेख में प्रदर्शित करना था। जनता का कर्तव्य था कि वह उसे पढ़कर सत्य को स्वयं समझ लेती। भूमिका लेखक अपने कर्तव्य से गिर जाता है यदि वह ग्रन्थ में दिये विषयों के सत्य स्वरूप को किसी प्रलोभन वश छिपाकर चापलूसी की बातें लिख देता है। यह लेखक के पतन की चरम अवस्था है।

हमने अपने सहधर्मियों को विवश होकर मिस्टर अवस्थीजी के भूमिका द्वारा प्रदर्शित जाल और कुरान की गलत शिक्षाओं से सावधान करने के लिये इस पुस्तक को लिखा है। हमने कुरान शरीफ में से विषयवार जितनी आयतों को इसमें देखा है और आवश्यक समझा है उनको विभिन्न अध्यायों में संग्रहीत किया है जिससे प्रत्येक पाठक स्वयं ही समझ सकेगा कि कुरान का उस २ विषय में क्या अभिमत है और इस्लाम परस्त इन अवस्थी जी द्वारा फैलाया गया जाल कितना गलत है।

हमने संक्षेप में प्रत्येक अध्याय पर बाद को अपनी समीक्षा भी प्रस्तुत की है जो कि पाठकों को विषय के समझने में सहायक बनेगी।

इस पुस्तक की रचना का उद्देश्य केवल अवस्थीजी की गलत भूमिका का कुरान के शतशः प्रमाणों से खंडन करना है। हमारा उद्देश्य न तो कुरान का खण्डन करना है और न किसी कुरान परस्त मुसलमान का दिल दुखाना है। यह पुस्तक केवल आर्य समाजियों के ही लिये लिखी गई है क्योंकि वे ही लोग इतना साहस कर सकते हैं कि विभिन्न सम्प्रदायों के धर्म ग्रन्थों को पढ़ सकें। हिन्दुओं में जो लोग श्री वशीर अहमद जी के कुरान को पढ़ें और उसकी गलत भूमिका की परीक्षा करना चाहें वे इस पुस्तक को पढ़ सकेंगे। पर जिनको सत्यान्वेषण की इच्छा न हो वे हमारी इस पुस्तक को भूलकर भी न पढ़ें।

कुरान के मानने वाले धर्मान्ध कुछ पन्थी लोगों का कुरान में अन्धविश्वास होता है। वे उसकी समालोचना में एक शब्द भी सुनना नहीं चाहते हैं। अतः हम आग्रह पूर्वक कहते हैं कि वे हमारी इस पुस्तक को हरगिज हरगिज न पढ़ें। और यदि वे हमारे बार २ मना करने के बावजूद भी न मानें और इसे पढ़ें तो फिर वे हमसे कुरान के गलत साबित होने से दिल दुःखाने की शिकायत भी न करें। क्योंकि इस पुस्तक में सत्य असत्य का निर्णय है और वह केवल उन्हीं आर्यों के लिये है जो सत्य की खोज करना चाहते हों। कट्टर पन्थी लोगों के लिये यह किताब नहीं लिखी गई है और न उनको इसे छूना चाहिये। हमने इस पुस्तक में कुरान की सत्य स्थिति को प्रगट करने का यत्न किया है। एक भी वाक्य पर शब्द जिसमें किसी का दिल दुःखे हमने इसमें नहीं लिखा है। अतः किसी को शिकायत का

इस पुस्तक के अन्दर जो भी आयतें दी गई हैं वे ही अर्थ लगभग सभी कुरान भाष्यकारों ने किये हैं। कहीं कहीं शब्द भेद तो हैं पर अर्थ भेद तथा भाव भेद प्रायः नहीं हैं। इसके अर्थ हमने श्री बशीर अहमद, तथा अन्य भाष्यकारों के आधार पर लगभग उन्हीं के शब्दों में दिये हैं। अतः अर्थों की जिम्मे-वारी इन्हीं भाष्यकारों की रहेगी।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक हमारे आर्य समाजी कार्यकर्ताओं को उपयोगी सिद्ध होगी तथा वे इसके द्वारा अवस्थी जी के फैलाये गये पाखण्ड से हिन्दू जनता को सचेत कर सकेंगे।

अन्त में हम उक्त हिन्दी कुरान के प्रकाशकों से भी निवे-दन करेंगे कि वे अवस्थी जी की गलत भूमिका को अपने कुरान के संस्करण में से निकाल देवें और कुरान को बिना उस भूमिकाके प्रकाशित करें ताकि लोग उसके सत्य स्वरूप को स्वयं समझ सकें, न कि अवस्थी जी की गलत भूमिका से प्रभावित गलत मस्तिष्क से इस हिन्दी कुरान को पढ़कर भ्रमित होवें।

धार्मिक आर्य जगत में इस हमारे प्रयास का समादर होगा, इस भावना से हम उस पुस्तक को लिखकर अपने सहधर्मियों को भेंट कर रहे हैं।

कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष — निवेदक—
नवम्बर सन् १९६६ — आचार्य डा० श्रीराम आर्य

* ओउम् *

समर्पण

—:():—

शास्त्रार्थ समर में समस्त विपक्षी विद्वान जिनके समक्ष नत मस्तक होकर अपनी पराजय स्वीकार करते रहे हैं, जिनके मंत्र मुग्धकारी धारा वाहिक खण्डन मण्डनात्मक व्याख्यानो की सारे भारत में धूम मची रहती थी, तथा जो अब बृद्धावस्था के कारण प्रचार क्षेत्र से हटकर भी आर्य जगत के प्रकाश स्तम्भ बने हुए हैं, उन्ही कुरान तथा बाइबिल के महान मर्मज्ञ, यशस्वी आर्य विद्वान, तार्किक शिरोमणि, अजेय शास्त्रार्थ महारथी, महामहो पदेशक,

—०—

'पूज्य श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी"

के कर कमलों में

अपनी 'खण्डन मण्डन ग्रन्थ माला' का यह २६ वां पुष्प

'कुरान दर्पण'

सादर समर्पित करता हूँ

निवेदक:—

कासगंज (उ० प्र०)
ता० १-११ ६६

आचार्य डा० श्रीराम आर्य

विषय—अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१	कुरान की स्थिति (कुरान में परिवर्तन)	१
२	कुरान में कुरान का वर्णन	७
३	कुरान में खुदा पैगम्बर और काफिर	२१
४	कुरान में सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन	५०
५	कुरान और कयामत।	६८
६	कुरान और बहिश्त (स्वर्ग)	८७
७	कुरान और दोजख (नरक)	९४
८	कुरान और फरिश्ते	१०२
९	कुरान में मुहम्मद की बीबियां और खुदा	११९
१०	कुरान में बीबियां और तलाक	१२४
११	कुरान और मांसाहार (हराम और हलाल)	१२८
१२	कुरान और ईसामसीह	१३६
१३	कुरान और हजरत मूसा	१४२
१४	कुरान और हजरत नूह	१४८
१५	कुरान और हजरत लूत	१५१
१६	कुरान और गौ	१५५
१७	कुरान में विचित्र दण्ड व्यवस्था के दृष्टान्त	१५९
१८	कुरान में फौरन सजा की मिसालें	१६१
१९	कुरान में कसमें	१६५
२०	कुरान में (i) खुदा ने सलाम (ii) रोजों में विषय भोग जायज, (iii) नरबलि प्रथा, (iv) मूर्ति पूजा निषेध, (v) सूद खाना पाप है (vi) कुरान और ओम	१७२

पहिला अध्याय

कुरान की स्थिति

(कुरान में परिवर्तन)

कुरान शरीफ की सर्व प्रथम आयत में सूरे फातिहायी १ में लिखा है 'बिस्मिल्लाह रहमानुल्लरहीम' अर्थात् 'शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम के साथ, जो निहायत रहम करने वाला मिहरबान है।'—यह आयत स्वतः यह बताती है कि कुरान को लिखने वाला अल्लाह के अलावा कोई दूसरा ही आदमी है जो कुरान लिखना प्रारम्भ करने से पहिले अल्लाह का नाम लेकर उसे लिखना प्रारम्भ करता है। यह आयत कुरान के खुदाई पुस्तक होने का प्रबल खण्डन करती है। यह प्रबल युक्ति कुरान के ईश्वरीय ग्रन्थ के रूप में माने जाने में बाधक है।

(क) कुरान के स्वरूप के विषय में भी मुसलमानी विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहे हैं। हम नीचे कुछ उदाहरण इसके उपस्थित करते हैं।

नाम पुस्तक जिसके मत में कुरान की अक्षर संख्या कितनी थी।

१	सुयूती इब्ने अब्बास के कुरान में	३२३६७१
२	,, उम्मिब्ने खत्ताब ,, ,,	१०२७०००
३	सिराजल्कारी अब्दुल्ला हिब्ने मसऊद	३२२६७१

४ मुजाहिद		३२११२१
५ उम्दतुल्बयान अब्दुल्ला हिब्ने मसऊद		३२२६७०
६ सिराजुल्कारी	पुस्तक कर्ता	३२०२६७०
७ उम्दतुल्ब्यान	,, ,,	३५११८२
८ कसीदतुल्किराअत	,, ,,	३२०२६७०
९ दुआये मुतबर्रक	,, ,,	४४५४८२
१० रमूजुल कुरआन मुहम्मदहसन अली		४०२६५

ऊपर की अक्षर संख्या में मतभेद के ही समान कुरान के शब्दों की संख्या में निम्न प्रकार मतभेद है—

नाम पुस्तक	शब्द संख्या	लेखक
उम्दतुल्ब्यान	२६२५०	हमीद आरज
,,	७०४३९	अब्दुल अजीजिब्ने अब्दुल्लाह
सिराजुलकारी	७६४३०	हमीद आरज
,,	७६२५०	मुजाहिद
,,	७०४३९	अब्दुल अजीजिब्ने अब्दुल्लाह
कसीदतुलकिराअत	८६४३०	
दुआये मुत्त	७६०००	
सिराजुल्कारी	७६४२०	
सुयूती का अनुवाद	७७९३३	मुहम्मद हलीम अन्सारी
मुहम्मद हलीम की टिप्पणी	७७४३७	
रमूजुल कुरान	७६४२	मुहम्मद हसन अली

ऊपर के प्रमाणों से सिद्ध है कि कुरान के अक्षरों व शब्दों की संख्या में भारी कमीवेशी की जा चुकी है।

अब हम कुरान की सूरतों व आयतों के फर्क के बारे में प्रमाण देते हैं—

१. सिराजुल्कारी, उम्दतुल्ब्यान फीतफसीरिल कुरान-तफसीरे इत्तेकान,' कसीदतुल्किराअत, रमूजुल कुरान और दुआये मुतबर्रक: में इमाम अबूहनीफ जैदिब्ने साबित अन्सारी और मुल्ला मुहम्मदअली इत्यादि के मतानुसार कुरान में ११४ सूरतें थीं।

२. मुल्ला जलालुद्दीन सुयूती अपनी तफसीरे इत्तेकानको उसूमिल कुरान में लिखते हैं कि मुसहफ (कुरान) इब्नेमसऊद में ११२ सूरतें थीं।

३. उबैयिब्ने काब के कुरान में ११६ सूरतें थीं।

४. इब्ने अब्बास के ,, ,, ,, ,,

५. जलालुद्दीन के एक लेख से यह भी सिद्ध होता है कि किसी समय हजरत उस्मान के कुरान में १११ सूरतें थीं।

६ उमिय्यतिब्ने अब्दुल्लाह के समय खुरासान देश में एक ऐसा कुरान भी पाया जाता था जिसमें ११६ सूरतें थीं।

७. सिराजुल्कारी में मुजाहिद के विचारानुसार कुरान में ११३ सूरतें थीं।

८. कई एक के विचारानुसार उबैयिब्ने काब के कुरान में ११५ सूरतें थीं।

९. वर्तमान कुरानो में ११४ सूरतें ही मिलती हैं।

(ख) कुरान की आयतों में निम्न प्रकार भेद मिलता है।

१ दुआय मुतबर्रक: कसीदतुल्किराअत उम्दतुल बयान फीतफसीरिल कुरान, सिराजुल्कारी तथा रमूजुल कुरान में

लिखा है कि सम्पूर्ण कुरान की ...६६६६ आयतें हैं।

२ तफ़सीरे इत्तेकान फ़ी उलूमिल कुरान इत्यादि में लिखा है कि ६२१४ आयतें हैं।

३	मदानियों के समीप	६२१४ आयतें हैं
४	मक्कियों के ,,	६२१२ ,, ,,
५	शामियों ,, ,,	६२५० ,, ,,
६	बसियों ,, ,,	६२१६ ,, ,,
७	इराकियों ,, ,,	६२१४ ,, ,,
८	कूफियों ,, ,,	६२३६ ,, ,,
९	अब्दुल्लाहिब्ने मसऊद ,, ,,	६२१८ ,, ,,
१०	सुयूती के अनुसार इब्ने अब्बास ,, ,,	६६१६ ,, ,,
११	अद्दानी के अनुसार	६००० ,, ,,

इसी प्रकार अन्य लोगों में किसी किसी ने ६२०४, ६२१४, ६२१९, ६२२५, ६२३६ आयतें कुरान में मानी हैं,

इस सारे वर्णन से स्पष्ट है कि कुरान में भारी कमीबेशी होती रही है। अतः वह ज्यों का त्यों प्रारम्भ में बना हुआ ग्रन्थ नहीं है।

कुरान में पाठ २ सू यूसुफ आ २ में लिखा है कि कुरान अरबी भाषा में उतारा गया है। 'परन्तु अल्लामः जलालुद्दीन सूयूती अपनी किताब तफ़सीरे इत्तेकानफ़ी उलूमिल कुरान में अनेक उलमाओं की साक्षी देकर लिखते हैं कि कुरान में ७४ भाषाओं के शब्द मिलते हैं। उनके नाम निम्न प्रकार हैं—

कुरैशी. किनानो हुजैलो, खश्अमो, खजरजी, अश्अरो. नमीरो, कैसेगोलानी, जरहमी, यमनी, अजविश्नोई, कब्दी, तमीमी, हमीरी, मदचनी, लहमी, सादुल्अशीरी, हजरमूती, सुदूसी, अत्रामकी, अनमारी, गस्सानी. मजहजी, खुजाई, गतफानी, सबाई, अम्मानो, बनूहनीफिया, सालबी, तई, आमरिब्नेसाअसी, औसी, मजीनी, सकीफी, जुजामो बलाई, अजरही, हबजानी. अनमरी, यमानी सलीमी, अम्मारी अश्ऐनी, मुसरिब्नेमुआबीय्यी. अकी, हुज्ञाजो, नबई, ईसी, कुजाई, काविब्नेउम्री, कबिब्नेलवी, तहारीय्यी, रवीय्यी, जब्बती, तैमी, रबाबी असदिब्नेखुजैमी, सादिन्नेबक्री, हिन्दी जंगी, अजमी, तुर्की, निब्ती सुर्यानी, इब्रानी, अजजी, जसमिब्नेबक्री, संस्कृत, हबशी, फारसी रूमी, बरबरी, किब्ती, यूनानी;।—७४ भाषाओं के शब्दों का प्रयोग कुरान में किया गया है। इस प्रकार यह बात कुरान को गलत होजाती है कि उसे केवल अरबी जबान में ही बनाया गया है।

(ग) कुरान पा० ५ सूरते निसा आ० ८२ में लिखा है कि "तो क्या यह लोग कुरान में विचार नहीं करते, और अगर खुदा के सिवाय (किसी और के पास से यह कुरान) आया होता तो जरूर उसमें बहुत भेद पाते (इसमें बहुत बिरोध होता है)। कुरान की इस आयत का खण्डन निम्न प्रमाणों से हो जाता है।

(१) तौजीहुल् अहकाम बहवाला फइजनसलखल्, अशहोरूल होरोमो फकतोलुल मुशरेकीन है-सो वजत्तो मुहम । पारा १० सू० तौबा आ० ५ अर्थात् जब अदब के महीने निकले जावे तो मुशरिकों को जहां पाओ कत्ल करो इनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो,—।"इस पर इमाम जाहिद

फ़रमाते हैं कि इस आयत के उतरने से कुरान की ७० आयतें मंसूख हो गई हैं। और बहबाला इत्तेकान फी तफसीरिल कुरान में लिखते हैं कि इस आयत के उतरने से कुरान की १२४ आयतें मन्सूख हो गई हैं। जिनमें पहिले जिनके पहिले मुशरकीन को न मारने की आज्ञा थी।

(२) इत्तेकान फी तफसीरिल कुरान में लिखा है कि ऐसी २ १६, २०, अथवा २१ आयतें निश्चित रूप से मंसूख होगई हैं।

(३) नज्मेखुशवाले के कथनानुसार ६६ आयतें मंसूख हैं।

(४) बहबाला तफसीर फौजुल कबीर कुरान की ५०० आयतें मन्सूख हैं।

उपरोक्त विवरण से कुरान की स्थिति स्पष्ट है कि उस में भारी कमी वेशी की जाती रही है। फिर चाहे वह कमी वेशी उसके बनाने वाले मुहम्मद साहब ने की हो, या खुदा ने की हो, अथवा बाद के मौलाना लोगों की करामात रही हो। इस प्रकार कुरान कटा छटा अधूरा एवं परस्पर विरुद्ध बातों से युक्त ग्रन्थ होने से विद्वानों को तथा धार्मिक लोगों को बिलकुल माननीय नहीं हो सकता है।

नोट—इस अध्याय की सारी सामग्री हमने मौ० गुलाम हैदर साहब की पुस्तक 'कुरान में परिवर्तन' से ली है जो सन् १६२७ में नीची बाग बनारस से छपी थी। उस मौलाना साहब ने कुरान पर अविश्वास हो जाने पर वैदिक धर्म ग्रहण कर लिया था और उनका नाम पं० सत्यदेव जी रखा गया था।

दूसरा अध्याय

कुरान में कुरान का वर्णन

(कुरान शरीफ के बारे में स्वयं कुरान में निम्न प्रकार वर्णन मिलता है)—

"और वह जो हमने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर कुरान उतारी है, अगर तुमको उसमें शक हो तो तुम उसके समान एक सूरत बना लाओ और सच्चे हो तो अल्लाह के सिवाय अपने हिमायतियों को बुला लो ।२३।"

"कुरान जो हमने उतारी है उस पर ईमान लाओ (वह) उस किताब (लौटने) की तस्दीक करती है जो तुम्हारे पास है" ।४०।

"बस अगर इतनी बात भी न कर सका और हरगिज न कर सकोगे, तो दोजख की आग से डरो, जिसके ईंधन आदमी और पत्थर होंगे और वह काफिरों (इन्कार करने वालों) के लिये तैयार है" ।२४। कु० सूरेबकर पा० २ ।

'हम कोई आयत मंसूख कर दें या बुद्धि से उसको उतार दें तो उससे अच्छी या वैसी ही पहुँचा देते हैं। क्या तुमको मालूम नहीं अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है' ।१०६।

'रमजान का महीना जिसमें खुदा की तरफ से कुरान उतरा है (और कुरान) लोगों को राह दिखाने वाला है और हिदायत और तमीज के खुले स्पष्ट हुक्म मौजूद हैं, तो तुममें से जो शख्स इस महीने में मौजूद हो तो चाहिये कि इस महीने

के रोजे रखे और जो बीमार या यात्रा में हो तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी करलो' ।१२५।

जो शख्स खुदा पर झूंठा लंफट बांधे या उसकी आयतों को झुठलाये और उससे बढ़ कर जालिम कौन है, जालिमों को किसी तरह छुटकारा नहीं होगा' ।२१। इनमें ऐसे भी हैं कि तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं और उनके दिलों पर हमने पर्दे डाल दिये इनके कानों में बोझ है ताकि तुम्हारी बात न समझ सकें और अगर यह करामात भी देखलें तो भी ईमान लाने वाले न हों, यहां तक कि जब तुम्हारे पास झगड़े हुए आते हैं तो काफिर बोल उठते हैं कि कुरान तो सिर्फ अगलों की कहानियां हैं ।२५। कु० सूरे अनआम पा० ७ ।

'जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं अंधेरे में गूंगे और बहरे हैं.....।' (कु० सूरे अनआम पा० ७ आ० ३९)

'जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनके हुक्म न मानने के सबब सजा होगी' ।४९।

'जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं वे जब तुम्हारे पास आया करें तो उनको सब्र दिलाया करो...'।५४।

'यह कुरान तो दुनियां जहान के लोगों के लिये उपदेश है' ।९०।

'और यह किताब आसमानी है जिसको हमने उतारा है बरकत वाली है और जो किताबें इससे पहले की हैं, उनकी तसदीक करती है और हे पैगम्बर हमने इसको इस वजह से उतारा है कि तुम मक्का वालों को और जो लोग उसके आस-पास रहते हैं उनको डराओ और जो लोग कयामत का यकीन

रखते हैं वह तो इस पर ईमान ले आते हैं और वह अपनी नमाज की खबर रखते हैं' ।९२। (कु० सूरे अनआम पारा ७)

'और उससे बढ़ कर और जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठे लंफट बांधे या दावा करे कि मुझ पर खुदा का पैगाम आया है हालांकि उसकी तरफ कुछ भी खुदा का सन्देश न आया हो,और जो कहे कि अल्लाह जैसे उतारता है वैसे ही मैं भी उतार सकता हूँ। चुनाचे जालिम जब मौत की बेहोशियों में पड़े होंगे और फरिश्ते हाथ फैला के कहेंगे अपनी जानें निकालो। अब तुमको जिल्लत के दंड की सजा दी जायेगी। इसलिये कि तुम खुदा पर व्यर्थ झूंठ बोलते और उसकी आयतों से अकड़ा करते थे' ।९३। (कु० सूरे अनआम पा० ७)

'यह किताब हमने ही उतारी है बरकत वाली है, तो इसी पर चलो और डरते रहो शायद तुम पर रहम किया जाय। ।१५५। (और ऐ मुशरिकीन अरब ! हमने यह इस लिये उतारी) कि कहीं यह न कह बैठो कि हमसे पहिले बस दो ही गिरोहों पर किताब उतरी थी और हम तो उसके पढ़ने-पढ़ाने से बिलकुल बेखबर थे' ।१५६। (कु० सू० अनआम पारा ८)

'यह किताब तेरी तरफ इस लिये उतरी कि तेरा दिल तंग न हो (कोई शक न रहे) ताकि तू इसके जरिये से डरावे और ईमान वालों को शिक्षा मिले ।२। (कु० सू० आराफ पा० ८)

'यह किताब (कुरान) इस किस्म की नहीं कि खुदा के सिवाय और कोई इसे अपनी तरफ से बना लावे। बल्कि जो (किताबें) इसके पहले की हैं उनकी तसदीक है और उन्हीं की तफ़सील है। इसमें सन्देह नहीं कि यह खुदा का ही उतारी हुई है ।३७। क्या वह कहते हैं कि इसे खुद पैगम्बर (मौहम्मद)

ने बना लिया है (तू कह दे) यदि सच्चे हो तो एक ऐसी ही सूरत तुम भी बना लाओ और खुदा के सिवाय जिसे चाहे बुला लो' ।३०। (कु० सू० यूनिस पा० ११)

('ए पैगम्बर) क्या (काफिर) कहते हैं कि इसने कुरान को अपने दिल से बना लिया है तो इनसे कह दो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी तरह की बनाई हुई दस सूरतें ले आओ और खुदा के सिवाय जिसको तुम बुलाते बन पड़े बुलालो अगर तुम सच्चे हो' ।१३। बस अगर काफिर तुम्हारा कहना न कर सकें तो जाने रहो कि (कुरान) खुदा ही के इल्म से उतरा है···'।१४। (कु० सू० हूद पा० १२)

'क्या तुमको झुठलाते हैं और तुम पर ऐतराज करते और कहते हैं कि कुरान इसने खुद बना लिया है (तुम उनको जबाब दो) कि अगर कुरान मैंने खुद बना लिया है तो मेरा गुनाह मुझ पर है और जो गुनाह तुम करते हो मेरा कुछ जिम्मा नहीं' ।३५। (कु० सू० हूद पारा १२)

'हमने इस कुरान को अरबी भाषा में उतारा है ताकि तुम समझ सको' ।२। 'यह कुरान और तो नहीं सब संसार को शिक्षा है' ।१०४। (कु० सू० यूसुफ़ पा० १२)

'अगर कोई कुरान ऐसा होता जिससे पहाड़ चलने लगते या उससे जमीन के टुकड़े हो सकते या उससे मुर्दे जी उठें और बोलने लगें तो वह यही होता···'।३१। (कु० सूरे राद पा० १३)

'ए पैगम्बर सूरज के ढलने से रात के अंधेरे तक नमाजें पढ़ा करो और कुरान सुबह पढ़ना चाहिये । निःसन्देह कुरान का सुबह पढ़ना (खुदा के) सामने होना है' ।७८। और रात के

एक हिस्से में कुरान पढ़ा करो और यह फर्ज से ज्यादा बात तेरे लिये है…'।७९। (कु० सू० बनइसाइल पा० १५)

(ए पैगम्बर इन लोगों से) कहो कि अगर सब आदमी और जिन्न ऐसा कुरान बनाने को जमा हों तो भी ऐसा न बना सकेंगे, अगर्चे उनमें एक दूसरे की बड़ी मदद करें।८८।

(कु० सू० बनी इसाइल पा० १५)

'और (ए पैगम्बर) किताब जो हमने ईश्वरी सन्देशे से तुम पर उतारी है, यह ठीक है (जो किताबें) इससे पहिले की हैं यह उनकी सचाई साबित करती है…'।३१।

(कु० सू० फातिर पा० २२)

'हिकमत वाले पक्के कुरान की कसम' ।२। यह कुरान शक्तिमान और मेहरबान ने उतारा है ।५। ताकि तुम ऐसे लोगों को डराओ जिनके बाप डराये नहीं गये और वह बेखबर हैं' ।६। (कु० सू० यासीन पा० २३)

'फिर याद कर कुरान पढ़ने वालों की कसम' ।३।

'और कहते थे कि भला हम अपने पूजितों को एक पागल शायर के लिये छोड़ दें' ।३६। (कु० सू० साफ्फात पा० २२।

'(ए पैगम्बर) अगर हमने यह कुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि खुदा के डर के मारे झुक गया और फट गया होता और हम यह मिसाल लोगों के लिये बयान फर्माते हैं ताकि वह सोचें' ।२१। (कु०सूरे हशर पा०२८)

'और काफिर (कुरान की निस्वत) कहते हैं कि यह तो निरा झूठ है जिसको इस (पैगम्बर) ने गढ़ लिया है और दूसरे लोगों ने उसकी मदद की है। यही लोग झूठ और जुल्म पर

हैं ।४। और कहते हैं कि कुरान अगले लोगों की कहानियां हैं, जिसको इस मौहम्मद ने किसी से लिखवा लिया है और वही सुबह शाम पढ़ २ कर सुनाया जाता है ।५। (हे पैगम्बर) कहो कि यह कुरान उसने उतारा है जो आसमान और जमीन की सब छिपी बातों को जानता है…'।६। (कु० सु० फुर्कान पा० १८)

'यह कुरान बड़ी शान का है ।२१। लोहे महफूज में लिखा हुआ है ।२२। कु० सु० बुरुज पा० ३०। (लोहे महफूज लोहे की एक तख्ती है जिसमें खुदा ने सब कुछ शुरू से आखीर तक लिख रखा है जो दुनियां में होने वाला है। उसे जान लेना इन्सान की ताकत के बाहर है।')

'और कुरान जो हमने उतारी है उस पर ईमान लाओ (और वह) उस किताब की तसदीक करता है जो तुम्हारे पास है ।४१। (कु० सू० बकर पा० १)

'उसी ने तुम पर यह किताब बाजिब उतारी, जो उन किताबों की तसदीक करती है जो उससे पहिले उतर चुकी है, और उसीने पहिले लोगों को नसीहत के लिये तौरात और इन्जील उतारी…'।३। कु० सू० आलइमरान पा० ३।

'और क्या यह लोग कुरान में विचार नहीं करते और अगर खुदा के सिवाय (किसी और के पास से) आया होता तो जरूर उसमें बहुत से भेद पाते' ।८२। कु० सू० निसा पा० ५।।

'हमने सच्ची किताब तुम पर उतारी है जैसा कि तुमको खुदा ने बतला दिया है उसके बमूजिब लोगों के आपसी झगड़े चुका दिया करो…'।१०५। कु० सू० निसा पा० ५।।

'लेकिन जो कुछ खुदा ने तुम्हारी तरफ उतारा है अल्लाह

गवाही देता है कि समझकर उसे उतारा है और फरिश्ते गवाही देते हैं, और अल्लाह की गवाही काफी है' ।१६६।
कु० सू० निरा पा० ६।।

'और जब इनसे कहा जाता है कि कुरान जो खुदा ने उतारी है उसे मानो तो कहते हैं कि हम उसी को मानते हैं जो हम पर पहिले उतरी है और उसके अतिरिक्त दूसरी किताब को नहीं मानते । हालांकि यह कुरान सच्चा है और जो किताब उनके पास है उसकी तसदीक भी करता है…'।।
कु० सू० बकर पा० १।।

'ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे पालन कर्ता की ओर से हुज्जत (निशानी) आ चुकी है और हमने तुम पर जगमगाती हुई रोशनी (कुरान) उतार दी' ।१७५। कु० सू० निसा पा० ६।।

'अगर खुदा के यहां से हुक्म तहरीरी पहिले से न हो चुका होता तो जो कुछ तुमने लिया है, उसमें अवश्य तुमको बुरी सजा मिलती' ।६८। कु० सू० अन्फाल पा० १०।।

'जब हम एक आयत को बदल कर उसकी जगह दूसरी आयत उतारते हैं और जो हुक्म उतरता है उसको वही खूब जानता है…।१०१। ऐ पैगम्बर ! कहो कि सच तो यह है कि इस (कुरान को) तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से पाक रूह (जिब्रील)लेकर आये हैं…।१०२।कु.सू.नहल पा.१४। (ऐ पैगम्बर) कुरान को हमने थोड़ा-थोड़ा करके उतारा कि तुम अवकाश के साथ लोगों को उसे पढ़ २ कर सुनाओ और हमने उसे धीरे २ उतारा है ।।१०६।। कु० सू० बनी इसराइल पा० १५।।

'(ए पैगम्बर) हमने तुम पर कुरान इसलिये नहीं उतारा

कि तुम मेहनत उठाओ ।२। यह उसका उतारा हुआ है जिसने जमीन और ऊंचे आसमानों को पैदा किया ।४। और ऐसे ही हमने अरबी जवान में कुरान उतारा है और उसमें तरह-तरह के डर सुना दिये हैं ताकि लोग बचलें या उनमें विचार पैदा हो ।११३। बस अल्लाह सबसे ऊंचा सच्चा बादशाह है और तू कुरान के लेने में जल्दी न कर जब तक कि उसका उतरना पूरा न हो और प्रार्थना कर कि ऐ मेरे परवर्दिगार ! मेरी समझ बढ़ा' ।।११४।। कु० सू० ताहा पा० १६।।

'और (यह कुरान) दुनियां के परवर्दिगार का उतारा हुआ है ।१९२। इसको जिब्राईल अमीन ने उतारा है । (१९२) तेरे दिल पर ताकि तू डराने वालों में हो जाय ।१९४। साफ अरबी जवान में ।१९५। इसकी खबर अगले पैगम्बरों की किताबों में है ।१९६। क्या लोगों के लिये यह दलील नहीं है कि इसराईल के बेटों में विद्वान इस होनहार से जानकार है ।।१९७।। और अगर हम कुरान को किसी ऊपरी जवान वाले पर (उसकी जवान में) उतारते ।।१९८।। और वह उसे इन (अरब वालों) को पढ़ कर सुनाते 'तो वह उस पर ईमान न लाते ।।१९९।। कु० सू० शुअरा पा० १९।।

'उसमें कुछ शक नहीं कि कुरान संसार के परवर्दिगार की ओर से उतरता है ।।२।। क्या यह कहते हैं कि इसको इसने (अपने दिल से) बना लिया है । बल्कि यह ठीक तुम्हारे परवर्दिगार की ओर से है ताकि तुम उन लोगों को जिनके पास तुमसे पहिले कोई डराने वाला नहीं पहुंचा डराओ । अजब नहीं कि यह लोग राह पर आजावें ।'

।।३।। कु० सू० सज्दह पा० २१।।

'यह कुरान दुनियां जहान के लोगों को शिक्षा है।'

॥८७॥ कु० सू० साद पा० २३॥

'जोरावर हिकमत वाले अल्लाह की तरफ से इस कुरान का उतरना हुआ है ॥१॥ हमने तेरी तरफ ठीक किताब उतारी है···॥२॥ कु० सू० जुमर पा० २३॥

यह (कुरान) किताब है जिसकी आयतें अरबी बोलो में समझदार लोगों के लिये व्यौरे के साथ बयान कर दी गई हैं'

॥३॥ कु० सू० हमीद सज्दह पा० २४॥

'और इसी तरह अरबी कुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्के के आस-पास हैं उनको डरावें और कयामत के दिन की मुसीबत से डरावें।'

॥७॥ कु० सू० शूरा पा० २५॥

'(यह) जबर्दस्त हिकमत वाले अल्लाह की उतारी हुई किताब है ॥२॥

'आसमान और जमीन के परवर्दिगार की कसम यह (कुरान) सच है जैसा कि तुम बोलते हो।'

॥२३॥ कु० सू० जारियात पा० २६ ॥

'कुरान बड़ी शान का है । २१॥ लोहे महफूज पर लिखा हुआ है' ॥२२॥ कु० सू० बुरुज पा० ३०॥

(नोट—लोहे महफूज–लोहे की एक तख्ती है जिसमें खुदा ने सब कुछ शुरू से आखीर तक लिख रखा है जो दुनियां में होने वाला है। इसे जान लेना इन्सान को ताकत के बाहर है।)

(कु० पृ० ५८६ से फुटनोट)

'···अपने परवर्दिगार का नाम लेकर जिसने पैदा किया कुरान पढ़े चलो' ॥१॥ कु० सू० अलक पा० ३०

'हमने यह कुरान कदर की रात से उतारना शुरू किया है' ॥१॥ कदर की रात हजार महीनों से बढ़कर है ।३। कु० सू० कदर पा० ३०॥

'यह किताब तो रात जो हमने तुमको दी है इसको मजबूती से पकड़े रहो सुनो और पल्ले बांधो ।९३। कु० सू० बकर पा०१।

समीक्षा—हमने ऊपर देखा कि कुरान शरीफ को इलहाम सावित करने के लिये खुदा ने पचासों दावे किये हैं। कसमें भी खाई हैं, फरिश्तों की और अपनी शहादत (गवाही) भी दी है। उसने उन लोगों से जो कुरान को इलहाम नहीं मानते थे कुरान की जैसी एक एक सूरत बना लाने की भी शर्त दो बार लगाई है। तीसरे स्थान पर खुदा एक की जगह दस सूरतें बना लाने की शर्त लगाता है। अर्थात् अपनी ही पहली शर्त से मुकर जाता है खुदा दावा करता है कि इन्सान की कोई ताकत नहीं कि ऐसी किताब बना सके। इन्सान अकेला तो क्या, अगर सारे आदमी और जिन्न भी मिल जावें तब भी ऐसा कुरान नहीं बना सकते हैं। खुदा कहता है कि यह कुरान बड़े शान का है। यह खुदा के यहां लोहे महफूज पर लिखा हुआ मौजूद है। जिब्रोलफरिश्ते के मार्फत यह मुहम्मद पर अरबी जबान में उतारा गया है। यह रमजान के महीने में उतरा है। खुदा दावा करता है कि कुरान खुदा ने अगर किसी पहाड़ पर उतारा होता तो वह डर के मारे झुक गया होता। यदि कुरान खुदा के अलावा किसी और के पास से आया होता तो उसमें बहुत से भेद दिखाई देते। खुदा कहता है कि अगर किसी कुरान से पहाड़ चलने लगते, मुर्दे जिन्दा हो सकते, जमीन के टुकड़े हो जाते तो वह यही कुरान होता। यह कुरान अपने से पहिले आई किताब-इञ्जील तौरेत जबूर

की तस्दीक भी करता है। इत्यादि अनेक प्रकार के दावे स्थान २ पर करके खुदा ने कुरान को इलहाम (ईश्वरीय पुस्तक) बताने की कोशिशें की हैं। खुदा कहता है कि जो लोग कुरान पर ईमान नहीं लाते हैं वे दोज़खी, पापी हैं। उनको क़यामत के दिन भारी सज़ा मिलेगी। वे लोग अन्धे गूंगे और बहरे हैं। वे बड़े ज़ालिम हैं। जो यह कहते हैं कि कुरान को मुहम्मद ने खुद शायरी करके बना लिया है।

खुदा ने हर तरह से इतमीनान दिलाने की कोशिश की है। फिर भी लोग कुरान को मुहम्मद साहब की शायरी ही मानते रहते थे। तो परेशान होकर खुदा मुहम्मद से कहलवाता है कि अगर क़ुरान मैंने खुद बना लिया है तो मेरा गुनाह मुझ पर है और जो कुछ तुम करते हो उस से मुझे कुछ सरोकार नहीं है। अर्थात् तुमको मानना हो तो मानो, न मानना हो तो मत मानो। क़ुरान से भी यह स्पष्ट है कि लोग मुहम्मद को पागल शायर मानते थे जैसा कि ऊपर प्रमाण आया है।

ऊपर जितने तर्क क़ुरान को इलहाम साबित करने के दिये हैं तथा जो कस्में खुदा ने खाई हैं। वास्तव में उनमें से एक भी तर्क ठीक नहीं है। क़ुरान को इलहाम सिद्ध करने के लिये उसके अन्दर गम्भीर उपदेश, ज्ञान, विज्ञान, ईर्षा, द्वेष से रहित शिक्षायें, परमेश्वर को निष्कलंक साबित करने वाली बातें, दया, प्रेम तथा प्राणी मात्र का हित करने वाले नियम, सृष्टि नियम के अनुकूल, तर्क व प्रमाण की कसौटी पर ठीक उतरने वाली बातों का समावेश होना चाहिये जिन पर चल कर मनुष्य संसार में सुख प्रेम व शान्ति पूर्ण जीवन बिता सकते। ईश्वरीय

पुस्तक में इतिहास, असम्भव कल्पना में बेतुके चमत्कार, परमेश्वर को कलंकित करने वाले उपदेश लोगों में घृणा पैदा कराने वाली बातें, सृष्टि नियम तथा प्रत्यक्ष के विरुद्ध गल्पों का समावेश नहीं होना चाहिये था जैसा कि कुरान में है। इस कसौटी पर कसने पर कुरान इलहाम नहीं उतरता है। इस विषय में उनके प्रमाण इसी पुस्तक में विभिन्न अध्यायों में दिये गये हैं।

ऊपर दो प्रमाणों में लिखा है कि 'हम कोई आयत मन्सूख कर दें या बुद्धि से उतार दें तो उससे अच्छी या वैसी ही पहुँचा देते हैं। "जब हम एक आयत को बदल कर उसकी जगह दूसरी आयत उतारते हैं और जो हुक्म उतरता है उसको वही (खुदा) खूब जानता है।"

यह कुरान की आयतें साबित करती हैं कि खुदा को इतनी भी अक्ल नहीं है कि एक बार में ही सही और ठीक आयतें (हुक्म) उतारदे। वह एक हुक्म भेजता है. फिर उसमें संशोधन [तरमीम] करता रहता है कभी उससे बढ़िया आयत उतारता है तो कभी वैसी ही दूसरी बनाकर उतार देता है। इससे कुरानी खुदा अल्पज्ञ (कम अक्ल वाला) साबित होता है।

प्रायः यह दावा किया जाता है कि कुरानशरीफ दुनियां (जहान) के लोगों के लिये है। कुछ जगह कुरान में ऐसा भी लिखा मिलता है। मगर वास्तव में कुरान बनाने का मुख्य उद्देश्य तो अरब के और खास कर मक्के के लोगों को डराना था। यह वहीं के लिये बनाया गया था इस का सबूत खुदा ने कुरान में निम्न प्रकार दिया है।—

"और यह किताब आसमानी है जिसको हमने उतारा है। बरकत वाली है, और जो किताबें इससे पहिली हैं उनकी तस्दीक करती है। हे पैगम्बर! हमने इसको इस वजह से उतारा है कि तुम मक्का वालों को और जो लोग उसके आस पास रहते हैं। उनको डराओ ... ।६२। कु० सू० अनआम पा० ७।

"और इसी तरह अरबी कुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्के के आस पास हैं उन को डरावे और क़यामत के दिन की मुसीबत से डरावे।

।।कु० सू० शूरा पा० २५।।

उपर एक नहीं बल्कि दो बार दो जगहों पर कुरानी खुदा डंके की चोट बता रहा है कि कुरान शरीफ के उतारने का केवल एक ही उद्देश्य था कि मुहम्मद साहब उसके ज़रिये से मक्का और उसके पास चन्द मील तक रहने वालों को डरावें। इसलिये कुरान को दुनियां भर के लोगों के लिये आया हुआ बताना सरासर दुनियां को धोखा देना है। अगर कोई आदमी किसी से कहे कि काजल आँख में लगाना और उसके आस पास लगाना तो इस आस पास के मानी यह नहीं होंगे कि काजल को सारे मुँह और जिस्म पर पोत लिया जावे। आस पास के मानी बहुत करीब की जगह होती है।

इस प्रकार यह भी कुरान से ही साबित हो गया कि कुरान सिर्फ मक्के वालों और उसके पास के बसने वालों को डराने ही के लिये बनाया गया था। इसलिये इसमें वहीं की कहानियां लिखी गई हैं। उसको पढ़ने वाले जानते हैं। कि उसमें ऐसी कोई भी बात नहीं है जिससे उसके बहुत बढ़िया ज्ञान की किताब

होने का सबूत मिल सके। वह एक अच्छे शायर की शायरी मात्र है जिसने अपने को खुदा का पैगम्बर बता कर और अपनी शायरी को इलहाम बनाकर अरब के भोले लोगों को बहिश्त और दोजख की गल्पों के आधार पर बहकाकर अपना नया मजहब होशियारी के साथ चलाया था।

कुरान का दावा है कि काफिरों को दोजख में झोंककर सजा दी जावेगी, परन्तु पत्थरों को दोजख में क्यों भरा जायगा यह बात समझ में नहीं आई। पत्थर तो बेजान चीज है, न तो वे काफिर या मुसलमान बन सकते हैं और न दोजख में सजा का अनुभव कर सकते हैं तब उनको उसमें भर देना कुरानी खुदा की अक्लमन्दी जाहिर नहीं करता है। अगर उसमें बजाय पत्थरों के लकड़ी भर दी जाती तो आग के काम तो आ सकती थी।

कुरान का यह दावा है कि सारे आदमी और जिन्न मिल कर भी ऐसा कुरान बनाने को जमा हों तो भी ऐसा नहीं बन सकेगा, वास्तव में इस अर्थ में ठीक हो सकता है कि इतना घटिया तो नहीं परन्तु बुद्धिमान लोग इससे कहीं बेहतर पुस्तक लिख सकेंगे जो बुद्धि तथा सृष्टि नियम के अनुकूल होगी और उसमें खुदा की जात को पाक साबित करते हुए जो भी बात लिखी जायगी वह सत्य होगी। परस्पर विरुद्ध-तर्क तथा विज्ञान के विपरीत मिथ्या बे सर पैर की बातों से भरी हुई पुस्तक कोई बुद्धिमान व्यक्ति नहीं बना सकेगा यह बात सत्य है। इस कुरान से तो खुदा के गुणों तथा अवगुणों का पर्दा फाश हो जाता है। इस पर कोई भी अक्लमन्द आदमी विश्वास नहीं ला सकता है और यह कुरान खुदाई किताब (इलहाम) मानी व साबित की जा सकती है, चाहे कुरानी खुदा या उसका बनाने वाला लाखों कसमें खाकर उसके खुदाई होने का दावा करता रहे।

तीसरा अध्याय

कुरान में पैग़म्बर और क़ाफ़िर

(इस विषय में कुरान शरीफ़ से निम्न प्रकार वर्णन मिलता है) (जिन लोगों ने इन्कार किया) उनके दिलों पर और उनके कानों पर अल्लाह ने मोहर लगादी है और उनकी आंखों पर परदा हैं और क़यामत में उनके लिए बड़ी सजा है।७। उनके दिलों में इन्कारी का रोग था–अब अल्लाह ने उनका मरज बढ़ा दिया और उनको झूठ बोलने की सजा में दुःखदाई दण्ड मिलता हैं।१०। अल्लाह उनसे हँसी करता है और उनको ढील देता है। वे इस सरकशी में भटकते रहेंगे।

।१५। सु बकर पा ।।१।।

जो लोग काफ़िर हैं उनकी मिसाल उस शख़्स जैसी हैं जो एक चीज (मूर्ति) के पीछे पड़ा चिल्ला रहा है और वह सुनती ही नहीं तो उसको बुलाना पुकारना बे सूद है। बहरे गूँगे अन्धे की तरह उनको भी समझ नहीं।

।।१७१।। कु० सूरे बक़र पा २।।

'मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़कर क़ाफ़िरों को अपना दोस्त न बनावें। और जो वैसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं। मगर किसी तरह पर उनसे बचना चाहो (मसलहतन) तो जायज है।

।२८। कु० सू० आलइमरान पा ३ ।।

क्या तुम यह चाहते हो कि जिसको खुदा ने भटका दिया उसको सीधे रास्ते ले आओ। जिसको अल्लाह भटकावे सम्भव नहीं कि तुम में से कोई उसके लिए रास्ता निकाल सको।८८। खुदा काफ़िरों को मुसलमानों पर हरगिज जीत न देगा।१४१। काफ़िर खुदा को धोखा देते हैं हालांकि खुदा उन्हीं को धोखा दे रहा है।१४३। ईमान वालो! ईमान वालों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ, क्या तुम जाहिर खुदा का अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो।

।१४४। कु० सू० निसा पा ५।।

'जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बरों से घिरे हुए हैं और अल्लाह और उसके पैगम्बरों में जुदाई डालना चाहते हैं और कहते हैं हम किसी को मानते हैं किसी को नहीं, और चाहते हैं कि इन्कार और ईमान के बीच में कोई राह निकालें।१५०। तो ऐसे लोग बेशक काफ़िर हैं और काफ़िरों के लिए हमने जिल्लत की सजा तैयार कर रखी है। १५१। और जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लायें और उनमें से किसी एक को दूसरे से जुदा नहीं समझा तो ऐसे ही लोग हैं जिनको अल्लाह उनके फल देगा और अल्लाह बख्शने वाला मेहरवान है। कु० सू० निसा. पा ६ ।।१५२।।

'जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर से लड़ते और फसाद की गरज से मुल्क में दौड़े फिरते हैं उनकी सजा तो यही है कि मार डाले जांय या उनको सूली दी जाय या उनके हाथ पांव उल्टे काट दिए जांय (दांया हाथ व बाँया पैर या बांया हाथ व दांया पैर काटा जाय) या उनको देश निकाला दिया जाय। .....३३।' काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ ...।'

।५७। कु० सू० मायदा पा ६।।

'और हमने हर बस्ती में बड़े २ अपराधी पैदा किये ताकि वहां फ़साद करते रहें·····।१२३। कु० सू० अनआम पा ८।। जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं अन्धेरे में गूँगे और बहरे हैं। खुदा जिसे चाहे भटका दे और जिसे चाहे सीधे रास्ते पर लगादे ।३९। खुदा जिसको सीधी राह दिखाना चाहता है उसके दिल इस्लाम के लिए खोल देता है और जिस शख्स को भटकाना चाहता है उसके दिल तंग कर देता है··· ।

।१२५। कु० सू० अनआम पा ८।

'उसी ने एक गिरोह को हिदायत दी और एक गिरोह को भटका दिया। इन लोगों ने खुदा को छोड़कर शैतान को पकड़ा और समझते हैं सीधी राह पर हैं ।३०। कु० सू० आराफ पा ८।

'यह भुगत लो और जान लो कि काफिरों को दोजख की सजा है ।१४। यह बात जान लो कि खुदा को काफिरों की तदवीरों का नाकिस कर देना मंजूर है' ।१८। अल्लाह के नजदीक सब जानवरों में निकृष्ट (नीच) बहरे और गूँगे हैं जो नहीं समझते ।२२। अगर इनमें अल्लाह भलाई पाता तो इनको सुनने की योग्यता भी जरूर देता लेकिन अगर खुदा इनको सुनने की काब्लियत दे भी दे तो भी यह लोग मुँह फेर कर उल्टे भागें ।२३। जब काफिर तुम पर फरेब करते थे कि तुम को पकड़ कर रखें या मार डालें या तुमको देश निकाला कर दें और काफिर फरेब करते थे और अल्लाह भी फरेब (कपट) करता था और खुदा फरेब करने वालों में अच्छा फरेबी है। ।३२। काफिरों से लड़ते रहो यहां तक कि फसाद न रहे और सब खुदा ही का दीन हो जाय··· ।३९। कु० सू० अन्फाल पा ९।

'किताब वाले जो न खुदा को मानते हैं और न कयामत

को और न अल्लाह और उसके पैगम्बर की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन को मानते हैं, इनसे लड़ो यहाँ तक कि जलील होकर (अपने) हाथों जजिया दें ।२९। कु० सू० तौबा पा १०।

इस पर उनकी जाति के सरदार जो नहीं मानते थे कहने लगे कि हमको तो तुम हमारे ही जैसे आदमी दिखाई देते हो, और हमारे नजदीक सिर्फ वही लोग तुम्हारे सहायक हो गये हैं, जो हम में नीच हैं और हम तो तुम लोगों में अपने से कोई विशेषता नहीं पाते, बल्कि हम तुमको झूठा समझते हैं··· ।

।२७। कु० सू० हूद पा १२।

'फिर अदब के महीने निकल जावें तो मुशरिकों को जहाँ पाओ, कत्ल करो । उनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो ।५। ऐ पैगम्बर ! काफिरों और मुनाफिकों से जहाद करो और उन पर सख्ती करो और उनका ठिकाना नरक है···।७३। मुसलमानो ! अपने आस पास के काफिरों से लड़ो और चाहिए कि वह तुमसे सख्ती मालूम करें··· ।'

।१२३। कु० सू० तौबा पा १०।

'काफिरों के लिए उनके कुफ्र की सजा में पीने को खौलता पानी और दुःखदाई सजा होगी ।४।

'अल्लाह सलामती के घर (जन्नत) की तरफ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता हैं ।२५।

'फिर हम उनके आपस में फूट डाल देंगे –।२८। इसी तरह हम बेहुक्म लोगों के दिलों पर मुहर कर दिया करते हैं ।७४। और ऐ पैगम्बर ! तुम्हारा परवदिगार चाहता तो जितने आदमी जमीन की सितह में हैं सबके सब ईमान ले आते । तो क्या तुम

5332

लोगों को मजबूर कर सकते हो कि वह ईमान ले आवें ।९६। किसी शख्स के हक में नहीं है कि बिना हुक्म खुदा के ईमान ले आवे । गन्दगी उन्हीं लोगों पर डालता है जो बुद्धि को काम में नहीं लाते ।१००। कु० सू० यूनिस पा ११।

'अगर तुम्हारा परवदिगार चाहता तो लोगों का एक ही मत कर देता लेकिन लोग हमेशा भेद डालते रहेंगे ।११२। मगर जिस पर तुम्हारा परवदिगार मेहरबानी करे और इसी लिये तो इनको पैदा किया है और तुम्हारे परवदिगार का कहा हुआ पूरा हो कि हम जिन्नों और आदमियों से दोजख को भर देंगे ।११९। कु० सू० हूद पा १२।

'अल्लाह जिसकी रोजी चाहता है बढा देता है और (जिसकी चाहता है) कम कर देता है । और वे काफिर दुनिया की जिन्दगी से खुश हैं हालांकि दुनियां की जिन्दगी कयामत के सामने बिलकुल ना चीज है ।२६। अल्लाह जिसको चाहता है भटकाया (गुमराह) करता है और जो रुजू होता है उसको अपनी तरफ का रास्ता दिखाया करता है ।२७। ..अगर खुदा चाहे तो सब लोगों को राह पर लावे ।३१।.....जिसको खुदा गुमराह करे तो उसको कोई राह दिखाने वाला नहीं ।

।३३। कु० सू० राद पा १३।

'जब कभी हमने कोई पैगम्बर भेजा तो उसी की जवान में (बात चीत करता हुआ) भेजा ताकि वह उनको समझा सके । इस पर भी खुदा जिसको चाहता है फिर भटकाता है और जिसको चाहता है राह देता है ।४। कु० सू० राद पा १३।

'और हमने तुमसे पहिले भी अगले लोगों के गिरोह में पैगम्बर भेजे थे ।१०। कु० सू० हिज पा १३॥

और (दीन के रास्ते दो पुकार के हैं,) एक सीधा खुदा तक है और दूसरा टेढ़ा, और खुदा चाहता तो तुम सबको सीधा रास्ता दिखा देता ।९। हमने हर एक गिरोह में एक पैगम्बर भेजा है कि खुदा की पूजा करो और शैतान से बचते रहो ।

।३६। कु० सू० नहल पा १४।।

'खुदा चाहता तो तुम (सब) को एक ही गिरोह बना देता मगर वह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है सुझाता है, और जो कुछ तुम करते रहे हो उसकी तुमसे पूछ होगी ।९३। अल्लाह इन्कारियों को हिदायत नहीं दिया करता ।१०७। यही वह लोग हैं जिनके दिलों पर और जिनके कानों पर और जिनकी आंखों पर अल्लाहने मुहर करदी है और यही गाफिल है ।१०८। कु० सू० नहल पा १३।।

'हमने काफिरों के लिए दोजख का जेलखाना तैयार कर रखा है ।८। जब तक हम पैगम्बर को न भेज लें (किसी को उसके अपराध की सजा नहीं दिया करते) ।१५। हमको जब किसी गांव को मार डालना मंजूर होता है हम उसके खुश हाल लोगों को आज्ञा देते हैं। फिर वह उसमें बे हुक्मी करते हैं, तब उन पर यह सजा सावित हो जाती है। फिर हम उस वस्ती को मार कर तबाह कर देते हैं। ।१६। ऐ पैगम्बर खुदा के साथ किसी दूसरे की इबादत (उपासना) नहीं करना। नहीं तो तुम दुर्दशा पाकर बैठे रह जाओगे ।२२। ऐ पैगम्बर तुम लोगों से कहो कि तुम (खुदा को) अल्लाह कह कर पुकारो, या रहमान कह कर पुकारो जिस नाम से भी पुकारो तो उसके सब नाम अच्छे हैं ।११०। कु० सू० बनी इसराइल पा १५।।

'जिसको खुदा राह दे वही रास्ते पर है और जिसको वह गुमराह करे तो फिर तुम कोई उसको राह पर लाने वाला न पाओगे ।१। कु० सू० कहफ़ पा १५।।

'और उससे बढ़ कर जालिम कौन है जो खुदा की आयतों से समझाये जाने पर भी उसकी तरफ से मुंह फेरे और अपने पहिले कामों को भूल जावे। हम ही ने इनके दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं ताकि (सच बात) न समझ सकें और इनके कानों में एक तरह का बोझ (पैदा कर दिया है।) और (ऐ पैगम्बर) अगर तुम इनको सच्ची राह की तरफ बुलाओ तो भी यह कभी राह पर आने वाला नहीं' ।५७। कु० सू० कहफ पा० १५।

'रहमान (कृपालु) अर्श तख्त पर विराज रहा है।
।५। कु० सू० ताहा पा० १६।

'एक अल्लाह के होके रहो उसके साथी साझी न ठहराओ और जो खुदा का साझी बनावे गोया वह आसमानों से गिर पड़ा···'।३१। कु० सू० हज्ज पा० १७।

'अल्लाह आसमान और जमीन की रोशनी है। उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है जैसे एक आला है, उस आले में एक चिराग और चिराग एक शीशे की कंडील में धरा है (और) कंडोल एक सितारे की तरह चमकता है। जैतून के बरकत के पेड़ से उस चिराग में तेल जलता है जो न पूर्वी और न पश्चिमी है। उसका तेल (ऐसा साफ है) कि अगर उसको आंच भी छुये तो भी जल उठे। रोशनी पर रोशनी। अल्लाह अपनी रोशनी की तरफ जिसको चाहता है राह दिखाता है

।३५। अल्लाह जिसे चाहता है बे हिसाब रोजी देता है।३८।
कु० सू० नूर पा० १८।

'और जब तक तेरा परवर्दिगार किसी बस्ती में पैगम्बर न भेज ले और वह उनको हमारी आयतें पढ़कर न सुना दें, तबतक वह बस्तियों को मार नहीं सकता और हम बस्तियों को तभी मार डालते हैं जबकि वहां के लोग पापी हो जाते हैं'
।५९। कु० सू० कसस पा० २०।

'…अल्लाह ही अपने सेवकों में से जिसे चाहे रोजी देता है और जिसे चाहे नपी-तुली कर देता है अल्ला ही हर चीज से जानकार है' ।६२। कु० सू० अन्कबूत पा० २१।

(खुदा) जिन्दे को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को जिन्दे से निकालता है और जमीन को उसके मरे पीछे जिन्दा करता है और इसी तरह तुम (लोग भी मरे पीछे जमीन से) निकाले जाओगे ।१९। कु० सू० रूम पा० २१।

'तो जिसको खुदा गुमराह करे उसको कौन सीधी राह पर ला सकता है, और ऐसे लोगों का कोई मददगार न होगा'।
।२९। कु० सू० रूम पा० २१।

'अल्लाह जिसको चाहे गुमराह करता है और जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है…'।८। कु० सू० फर्गतर पा० २२।

'और कहते थे कि भला हम अपने पूजितों को एक पागल शायर के लिये छोड़ दें' ।३६। कु० सू० साफ्फात पा० २३।

'(ऐ पैगम्बर ! कहो) और मुझे आज्ञा मिली है कि मैं सबसे पहिला मुसलमान बनूं', ।१२।

'जिसका दिल खुदा ने इस्लाम के लिये खोल दिया, फिर वह अपने परवर्दिगार की रोशनी में है' ।।२२।। कु० सू० जुमर पा० २३।। और जिसको खुदा शिक्षा दे तो उसको कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या खुदा जबर्दस्त बदला देने वाला नहीं ।३७।

'लोगों के मरते समय अल्लाह उनकी जानों को बुला लेता है और जो मरे नहीं उनकी जानें सोते समय (नींद में) बुला लेता है'···।४२। कु० सू० जुमर पा० २४।

'साहिब ऊंचे दर्जे के तख्त का मालिक···'।

।१५। कु० सू० मोमिन पा० २४।

'और खुदा चाहता तो लोगों का एक ही फिरका बना देता लेकिन वह जिसको चाहे अपनी कृपा में ले और पापियों का कोई हामी और मददगार न होगा ।८। (ऐ पैगम्बर) तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से एक वक्त मुकर्रर तक का वायदा पहिले से न हुआ होता तो उनमें फैसला कर दिया गया होता'

।कु० सू० शूरा पा० २५।

'और किसी आदमी की ताकत नहीं कि खुदा से बात करे, मगर आकाशवाणी से या पर्दे के पीछे से या किसी फरिश्ते को उसके पास भेज दे और वह खुदा के हुक्म से जो मंजूर होता है पहुँचा देता है···'।५१। कु० सू० शूरा पा० २५।

(ऐ पैगम्बर) भला देखो तो जिसने अपने ख्वाहिशे को अपना पूजित ठहराया और इल्म होते हुए भी अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया और उसके कानों पर और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आंखों पर परदा डाल दिया तो

खुदा के (गुमराह किये) पीछे उसको कौन हिदायत दे, क्या तुम नहीं सोचते ।२३। कु० सू० जासियह पा० २५।

'जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये और (कुरान) जो मौहम्मद पर उतरा है। उसे मान लिया है और वह सच है उनके परवर्दिगार की तरफ से खुदा ने उनके पाप उन पर से उतार दिये और उनकी हालत दुरुस्त करदी ।२। ऐ ईमान वालो ! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे पांव जमाये रखेगा ।'

।७। कु० सू० मुहम्मद पा० २६।

'(ऐ पैगम्बर !) हमने तुमको हाल बताने वाला और खुशी और डर सुनाने वाला बनाके भेजा है ।८। ताकि तुम अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और खुदा की मदद करो और उसका अदब रक्खो और सुबह शाम उसकी माला फेरते रहो ।९। और आसमानी और जमीन की बादशाही अल्लाह ही की है जिसको चाहे माफ करे और जिसको चाहे सजा दे। अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है।'

।१४। कु० सू० फतह पा० २६।

'मुसलमानो ! अपनी आवाजों को पैगम्बर की आवाज से ऊंचा न होने दो और न उसके साथ बहुत जोर से बात करो जैसे तुम आपस में बोला करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारा किया धरा सब बेकार हो जावे और तुम्हें खबर भी न हो ।२। मुसलमान वह हैं जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाये फिर शक नहीं किया और अल्लाह की राह में अपनी

जानों और मालों से कोशिश की यही सच्चे हैं।'

।१५। कु० सू० हुजरान पा० २६।

'बल्कि इन काफिरों को अचम्भा हुआ कि इन्हीं में का एक डर सुनाने वाला (पैगम्बर बनकर) इनके पास आया तो काफिर कहने लगे यह तो अद्भुत बात है'।२। कु०सू०काफ पा०२६।

'(खुदा) जो जोरावर है। फिर सीधा बैठा।६। और वह आसमान के ऊंचे किनारे पर था।७। फिर वह नजदीक हुआ और करीब आ गया।८। फिर दो कमान के बराबर या उससे भी कम फर्क रह गया।९। उस वक्त खुदा ने फिर अपने बन्दे (मुहम्मद) पर हुक्म भेजा। जो भेजा'।१०। कु०सू०नज्म पा०२७।

'ऐसा कौन है जो अल्लाह को खुशदिली से उधार दे, फिर वह उसको उसके लिये दूना करदे और उसके लिये इज्जत का फल है।११। बेशक खैरात करने वाले और खैरात करने वालियां और (जो लोग) खुदा को खुशदिली से उधार देते हैं उन्हें दूना मिलेगा और उनकी प्रतिष्ठा का फल मिलेगा।'

।१२। कु० सू० हदीद पा० २७।

'अगर तुम अल्लाह को खुशदिली से उधार दो तो वह तुमको उसका दूना करेगा और तुम्हारे पाप क्षमा करेगा और अल्लाह कदर जानने वाला दयालु है'।१७। कु.सू. तगाबुन पा.२८।

'इमरान की बेटी जिसने अपनी शिहबत की जगह रोकी और हमने उसमें अपनी रूह फूंकदी और वह अपने परवर्दिगार की बातें और उसकी किताब को मानती थी और खुदा की हुक्मबरदार थी।१२। कु० सू० तहरीम पा० २८।

'खुदा के मुकाबिले में जो सीढ़ियों (आसमान) का मालिक

है ।३। उनसे फरिश्ते और रूह उसकी तरफ एक दिन में चढ़ते हैं और उसका अन्दाज ५० वर्ष का है ।'

।४। कु० सू० मआरिज पा० २९ ।

'कहो कि मैं अपने परवर्दिगार को पुकारता हूँ और किसी को उसका शरीक नहीं करता' ।२०। कु० सू० जिन्न पा० २९ ।

'''निमाज पर कायम रहो और जकात दो और अल्लाह को खुशदिली से कर्ज दे दिया करो और जो नेकी अपने लिये पहिले से भेज दोगे उसको अल्लाह के यहां पाओगे'''।'

।२०। कु० सू० मुज्जमिल पा० २९।

'इसी तरह खुदा जिसको चाहता है भटकाता है और जिसको चाहता है राह दिखाता है और तुम्हारे परवर्दिगार के लश्करों का हाल उसके सिवाय कोई नहीं जानता'''।३१।

कु० सू० मुद्दसिर पा० २९ ।

'न कोई उससे पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ ।३। और न कोई उसकी समता का है' ।४। कु० सू० इखलास पा३०।

'तुम्हारा पूजित एक ईश्वर है, इसके सिवाय कोई पूजित नहीं वह बड़ा दया करने वाला कृपालु है ।'

।१६३। कु० सू० बकर पा० २ ।

'कहो कि जो कुछ खुदा ने हमारे लिये लिख दिया है वही हमको पहुंचेगा, वही हमारा काम संभालने वाला है।'

।५१। कु० सू० तोवा पा० १० ।

'और हमने किसी गांव को नहीं मारा जब तक उनके पास डर सुनाने वाले पैगम्बर न आयें' ।२०८। कु०सु०शुअरा पा०१९।

"....ए पैगम्बर जिस किल्ले पर तुम थे हमने उसको इसी मतलब से ठहराया था कि हम को मालूम हो जावे कि कौन २ पैगम्बर के आधीन रहेगा और कौन उल्टा फिरेगा —।१४३। (पगम्बर) तुम कहीं से भी निकलो अपना मुँह इज्जत वाली मस्जिद (काबा) की तरफ कर लिया करो और जहाँ कहीं हुआ करो उसी की तरफ अपना मुँह करो, ताकि गैर को तुम से झगड़ने की जगह न रहे ।१५०। कु० सू० बकर पा० २।।

"....अल्लाह जिसे चाहे बे हिसाब रोजी दे २१२।

... अल्लाह जिसे चाहे सच्ची राह दिखलाये ।२१३।

'कोई है जो खुदा को खुश दिली से कर्ज दे कि उसके कर्ज को उसके लिये कई गुना बढ़ा देगा ...।२४५। कु० सू० बकर पा० ४

'खुदा मुल्क का मालिक है जिसे चाहे राज्य दे और जिससे चाहे छीन ले...।१२६। जिसको चाहे बे हिसाब रोजी दे । ।।२७।। जो कुछ तुम्हारे दिलों में हैं, उसे छिपाओ या उसे जाहिर करो वह अल्लाह को मालूम है...।।२९।। यहूद ने(ईसा से) दांव (कपट) किया । अल्लाह ने उनसे (यहूद से) दांव (कपट) किया और अल्लाह दांव [फरेब]करने वालों में अच्छा दांवदार(फरेबी कपटी) है ।।५४।।कु० सू० आलइमराम पा० ३ ।। कह दो कि तुम अपने घरों में भी होते तो जिन के भाग्य में मारा जाना लिखा था निकल कर अपने पछड़ने की जगह आ मौजूद होते .....।"

।१५५। कु० सू० आलइमराम पा० ४।।

"अल्लाह रत्ती भर जुल्म नहीं करता बल्कि भलाई हो उसको बढ़ाता है बल्कि अपने पास से बड़ा बदला देता है। ।४०।। खुदा के शरीक ठहराने वालों को खुदा माफ नहीं करता और जिसने खुदा का शरीक ठहराया उसने बड़ा पाप बांधा है ४८।

"जिसने पैगम्बर का हुक्म माना उसने अल्लाह ही का हुक्म माना और जो फिर बैठो तो हमने तुम को कुछ इन लोगों का

निगहबान नहीं भेजा ८०।...जैसी २ सलाहें रातों को करते हैं अल्लाह लिखता जाता है ...८१॥ अल्लाह के सिवाय कोई पूजा के काबलि नहीं ...।८७। ऐ ईमान वालो! जब तुम नशे में हो नमाज़ न पढ़ा करो जब तक न समझो कि क्या कहते हो, और नहाने की जरूरत हो, तो भी नमाज के पास न जाना, यहां तक कि स्नान न कर लो। हां रास्ते चले जा रहे हो और अगर तुम बीमार हो या मुसाफिर या तुम में से कोई पाखाने से आवे या स्त्रियों से प्रसंग करके आया हो और तुम को पानी न मिल सके तो पाक मिट्टी लेकर मुंह और हाथ पर मल लो। अल्लाह माफ़ करने वाला वख्शने वाला है।"

४३॥ कु० सू० निसा पा० ५॥

"...अल्लाह ने मूसा से बातें की।"

१६४ कु० सू० निसा पा० ६॥

"मुसलमानो! जब नमाज के लिये तैयार हो तो अपने मुंह हाथ कोहनियों तक धो लिया करो और अपने सिर को मल लिया करो, पैरों को मुरवा तक धो लिया करो, और अगर ना पाक हो तो नहा लिया करो और अगर बीमार हो या सफर में हो, या तुम से या तुम में से कोई पाखाने से आया हो, या तुमने स्त्रियों से सुहबत किया हो और तुमको पानी न मिल सके तो साफ मिट्टी लेकर उस से तयम्मुन यानी उस से अपने मुंह और हाथों को मल लिया करो। अल्लाह तुम पर किसी तरह की कड़ाई नहीं करना चाहता बल्कि तुमको साफ सुथरा रखना चाहता है। खुदा चाहे जिसको माफ करे और जिसको चाहे सजा दे ...।१८। भाईयो पाक ज़मीन जो खुदा ने तुम्हारे भाग्य में लिख दी है उसमें दाखिल हो और पीठ न फेरना नहीं तो उलटे घाटे में आजाओगे।२१।

क्या तुमको मालूम नहीं कि आसमान और ज़मीन में अल्लाह

ही को हुकूमत है जिसको चाहे सजा दे और जिसको चाहे क्षमा करे अल्लाह हर चीज पर ताकतवर है ।४०।अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही दीन पर कर देता ।···।४८।···खुदा जालिमों को सीधा रास्ता नहीं दिखलाया करता।

।५१। कु० सू० मायदा पा० ६ ।

"अगर खुदा चाहता तो वे शरीक न ठहराते और हमने तुमको इन पर निगहवान नहीं किया और न तुम पर वकील ही ।

कु० सू० अनआम पा० ८ आ १०७ ।।

(ऐ पैगम्बर) कहो मेरे परिवर्दिगार ने इन्साफ का और हर मस्जिद में सीधा मुँह रखने का हुक्म दिया है और खालिस उसी की सेवा ध्यान में रखकर उसको पुकारो। जिस तरह तुमको पहिले पैदा किया था (उसी तरह) तुम दुबारा भी पैदा होगे।

।२९। कु० सू० आराफ पा० ८।।

हर कौम की एक मियाद है फिर जब उनकी मौत आवेगी तो न एक घड़ी घटेगी और न एक घड़ी बढ़ेगी ।

।३४। कु० सू० आराफ पा० ८।

"मुसलमान वही है कि जब खुदा का नाम लिया जाता है तो उनके दिल दहल जाते हैं और जब खुदा की आयतें उनको पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वह उनके ईमान को ज्यादा कर देती है और वह अपने परवर्दिगार का भरोसा रखते हैं ।। २।। जो नमाज पढ़ते और जो उनको हमने रोजी दी है उसमें से खर्च करते हैं।।३।। यही सच्चे मुसलमान हैं । इनके लिये इनके परवर्दिगार के यहाँ दर्जे हैं और माफी और इज्जत की रोजी है ।४।

मुसलमानो ! अल्लाह और पैगम्बर का हुक्म मानो ···।२४। ऐ पैगम्बर ! अल्लाह और मुसलमान जो तुम्हारे आज्ञाकारी हैं तुमको काफी हैं ।६४। कु० सू० अन्फाल पा० ।१०।

(मुसलमान वह है जो) अल्लाह की मस्जिद को वही आवाद रखता है, जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाता है और

नमाज़ पढ़ता है और जकात देता रहा और जिसने खुदा के सिवाय किसी का डर न माना तो ऐसे लोगों के निस्बत उम्मीद की जा सकती है कि ये शिक्षा पाने वालों में होंगे

।१८।। कु० सू० तौबा पा० १०।

"खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता और खुश खबरी सुनाता हूँ।

२ कु०सू० हर पा० ११ ।।

"...अल्लाह अन्यायियों को बिचला देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है ।२७। कु० सू० इब्राहीम पा० १३।

"व्यभिचार के पास न फटकना क्योंकि वह बेशर्मी और बुरा चलन हैं ।३२। कु० सू० इसराइल पा० १५

"अल्लाह तो उनके कर्मों को गिनता गया है और ये उनको भूल गये और अल्लाह सब चीजों का निगरां है

।६। कु० सू० मुजादिल पा० २८।

"...निमाज़ पर कायम रहो, जकात दो और अल्लाह को खुश दिली से कर्ज दे दिया करो और जो नेकी अपने लिये पहिले से भेज दोगे उसको अल्लाह के यहां पाओगे

।२०। कु० सू० मुज्जम्मिल पा० २९

"अल्लाह के सब नाम अच्छे हैं तो उसके नाम लेकर उसको (जिस नाम से चाहो) पुकारो और जो लोग उसके नामों में बुराई करते हैं उनको छोड़ दो वह अपने किये का अंजाम पावेंगे ।१८०। कु० सू० आराफ़ पा० ९।।

"(खुदा) ने फर्माया कि तुम हमको हर गिज न देख सकोगे मगर हां पहाड़ पर नजर करो। बस अगर पहाड़ अपनी जगह ठहरा रहा तो तू भी हमें देख सकेगा फिर जब उसका पालन (प्रकाश) पहाड़ पर जाहिर हुआ तो उसको चकना चूर कर दिया और मूसा मूर्छा खाकर गिर पड़ा

।।१४३।। कु० सू० आराफ पा० ९।।

"(ऐ पैगम्बर) यह चन्द बस्तियां हैं जिनके हालात हम तुमको सुनाते हैं, और उनके पैगम्बर इन लोगों के पास करामात भी लेकर आये, मगर यह लोग ऐसी तबियत के न थे कि जिस चीज को पहिले झुठला चुके हों उस पर ईमान ले आवें काफिरों के दिलों पर खुदा उसी तरह मुहर लगा दिया करता है

॥१०१ कु० सू० आराफ पा० ६॥

"जिनको खुदा राह दिखावे वही राह पाते हैं और जिनको वह गुमराह करे वही लोग घाटे में हैं ॥१७८॥ और हमने बहुतेरे जिन्न और मनुष्य दोजख के ही लिये पैदा किये हैं उनके दिल तो हैं (मगर) उनसे समझने का काम नहीं लेते। सारांश यह कि यह लोग पशुओं की तरह हैं, बल्कि उनसे भी गिरे हुए हैं, यही बेखबर हैं ॥१७९। कु० सू० आराफ पा० ६॥

"अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही दीन पर कर देता। लेकिन यह चाहा गया है कि जो हुक्म दिये हैं उनमें तुमको आज लाया जावे' सो तुम नेक कामों की तरफ चलो "।

।४८। (कु० सू० मायदा पा० ६।

"अल्लाह बे परवाह है ।२। न उससे कोई पैदा हुआ और न वह किसी से पैदा हुआ ॥३ न कोई उसकी बराबरी का है।

॥४॥ कु० सू० लहब ॥पा० ३०॥

समीक्षा—कुरान की कोई भी बात अक्ल की नजर नहीं आती है। कुरानी खुदा कहता है कि अगर वह चाहता तो सभी आदमी इस्लाम को कबूल करके मुसलमान बन जाते, मगर खुदा को यह मंजूर नहीं था। खुदा ने काफिरों को पैदा ही इस लिये किया है कि उनसे दोजख को भरेगा। अर्थात् केवल दोजख को भरने के ही लिए जिन्न और काफिर पैदा किये गये हैं। यदि सभी लोग मय काफिरों के मुसलमान हो

जावें तो दोजख को काफिरों से भरने का खुदा का वायदा झूठा हो जावेगा। इसीलिये कुरानी खुदा चिल्ला चिल्ला कर बता रहा है कि ऐ मुहम्मद! तुम कितनी भी कोशिश करो यह लोग तुम्हारी बात नहीं मानेंगे। हमने इनके आंख-कान दिलों तथा दिमागों पर मौहर लगादी है ताकि ये लोग सही रास्ते पर न आ सकें। खुदा जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है और बिना वजह जिसे चाहे गुमराह किया करता है।

इतनी स्पष्ट बात खुद ही लिखने के बाद खुदा मुसलमानों को काफिरों से दोस्ती न होने, उनके ऊपर सख्ती करने, उनके हाथ पांव काटने तथा कत्ल करने का भी आदेश देता है। खुदा काफिरों के साथ हँसी करता है, उनके साथ मकर (छल कपट) करके अपने को बड़ा भारी मकर करने वाला घोषित करता है। झगड़े फिसाद कराने के लिये ही खुदा ने फिसादी पैदा किये और उनसे फिर लड़ाई करने को हुक्म भी देता है। यह भी कहता है कि जब हम किसी वस्ती को मार डालना चाहते हैं तो हम खुद ही वहां के रहने वालों को गुमराह व गुनहगार बना देते हैं। फिर जब वे हमारे हुक्म से ही गुनाह करते हैं तो हम उन सबको मार डालते हैं। यह खुदा है या साक्षात शैतान है। इसकी एक भी बात शराफत की नहीं है। सारी की सारी बातें दुष्ट लोगों की सी हैं। खुद ही बदमाश बनाता है फिर खुद ही मारता है। ऐसे अन्यायी खुदा को शूली पर चढ़ा दिया जावे तब भी थोड़ा है। खुदा का काम तो नेकी का प्रचार करना होना चाहिए था न कि खुद ही बदमाशियों के गुनाहों का प्रचार करें, लोगों से मकर (छल, कपट) व मजाक करे यह उसका वर्ताव उसे खुदा के लायक नहीं बताता है।

जब खुदा ही नहीं चाहता कि लोग मुसलमान बनें तो मुसलमानों का गैर लोगों से इस्लाम का प्रचार करना कुरान के खिलाफ क्यों नहीं माना जावे। अगर सभी मुसलमान बन गये तो दोजख खाली पड़ी रहेगी और खुदा की बात झूठी हो जावेगी, यह मौलवी लोगों को समझाना चाहिये।

खुदा को जब अन्धे बहरे लोगों से नफरत है तो उनको उसने पैदा ही क्यों किया। इससे तो खुदा खुद ही गुनहगार साबित हो जाता है। अपनी औलाद को खुदा को हमेशा बढ़िया बनाना चाहिये था तथा सभी से एक सी मुहब्बत करनी चाहिये थी। हर माँ बाप के लिये उनकी सभी औलाद एक जैसी प्यारी होती है, तब खुदा में यह कमी क्यों दिखाई देती है। जब खुदा को काफिरों की हर तदबीर नाकिस (नाकाम) बना देना मंजूर है तो पाकिस्तानी मुसलमानी फौजें भारतीय जवानों के द्वारा क्यों पीस डाली गईं? खुदा का यह वायदा भी झूठा हो गया। वह मुसलमानों को हरवाता है न कि उनकी जीत कराता है। और या यह बात होगी कि काफिर (हिन्द) मुसलमानों और उनके खुदा दोनों से ज्यादा ताकतवर बन गये होंगे। यह कुरान और कुरानी खुदा ही दुनियां में लड़ाई झगड़े की जड़ है। गैर मुस्लिमों से मुसलमानों का मेल-जोल तब तक नहीं हो सकता है जब तक कि मुसलमान कुरान को मानते और उस पर अमल करते रहेंगे। क्योंकि कुरान ने मुसलमानों को गैर मुस्लिमों से दोस्ती नहीं रखने का स्पष्ट हुक्म तो दिया ही है, बल्कि उन पर खूब सख्तियाँ करने व उनसे लड़ने का भी आदेश दिया गया है।

आखिर लोगों को बिना वजह गुमराह करने और किसी को बिना वजह सीधी राह दिखाने में खुदा को क्या मजा आता

है ? खुदा को दुनियां के कमजोर लोगों को जाहिल बनाने, उनको मुसीबतों में फँसाने में क्यों मजा आता है ? इसके मानी तो यह हैं कि खुदा अत्यन्त बेरहम आदमी है। उसको वह काफिरों और मुशरिकों को कत्ल करने, उनकी घात में छुप कर बैठने, उन पर जुल्म करने का आदेश भी देता है। उसमें रहम दिलो व इन्सानियत रत्ती भर भी नहीं है। दुनियां को गुमराह करने का दोष कहीं खुदा शैतान पर लगाता है और कहीं ऐलान करता है कि हम ही जिसको चाहते हैं गुमराह करते हैं। तब खुदा और शैतान में अन्तर (फर्क) ही क्या रह जाता है। बल्कि खुदा तो शैतान से भी बड़ा शैतान साबित होता है क्योंकि शैतान तो किसी २ इन्सान को बहकाता है पर खुदा काफिरों को जन्म से ही बहरा-गूँगा-अन्धा और गुमराह पैदा करता है और भले लोगों को हुक्म भेजकर गुनहगार बना देता है और फिर खुद ही उनको मार डालता है। खुदा चाहता तो शैतान किसी को गुमराह नहीं कर सकता था।

अल्लाह किसी की रोजी क्यों बढाता है और किसी की क्यों कम कर देता है, इसकी वजह नहीं बताई गई। अगर बिना वजह अपनी मरजी से करता है तो खुदा जबर्दस्त बे इन्साफ आदमी है। अगर उनके कर्मों के अनुसार करता है तो फिर जब कर्मों का फल यहां ही मिल गया तब कयामत के दिन क्या खाक फैसला करेगा। जिन कर्मों का नतीजा यहां मिल जावेगा क्या वे उनके कर्म लेखा पत्रों में से और खुदा के यहां के रजिस्टरों में से दफ्तरों में काट दिये जावेंगे ? कुरान का तो वायदा है कि कर्मों के फल कयामत के दिन ही मिलेंगे तब फर यहां रोजी घटाने बढ़ाने की क्या जरूरत है।

खुदा कहता है कि जब तक हम पैगम्बर पहिले न भेज लेवें,

किसी गिरोह को सजा नहीं दिया करते हैं। तो यह पूछना है कि चीन, भारत वर्ष, लंका, अमरीका, अफरीका में दो सौ करोड़ वर्षों से खुदा ने कौन २ से पैगम्बर भेजे थे उनके नाम बताये जावें। और यदि नहीं भेजे तो इन मुल्कों के लोगों के फैसले कैसे होंगे ? अगर मुहम्मद आखिरी पैगम्बर थे तो उनको भारत व अन्य देशों में घूमने व प्रचार करने क्यों नहीं भेजा गया ? उनसे पहिले जो लोग इन मुल्कों में हो चुके हैं, उनका फैसला कौन सा पैगम्बर किस जिम्मेदारी से करावेगा ?

खुदा की आयतों को तथा हजरत मुहम्मद साहब को पैगम्बर न मानने वालों को कुरान में जाहिल बताना खुदा को अपनी ही बेवकूफी जाहिर करना है, क्योंकि खुदा ने खुद ही ऐसा न मानने वालों के दिलों व दिमागों पर मुहर लगादी है ताकि वे सच बात को (जो कुरान मानता है) न समझा सकें। तब लोगों को जाहिल क्यों बताया गया है। यह जिम्मेवारी तो खुदा की ही है। यदि वह सभी के दिल खोल देता तो सभी पक्के मुसलमान बन जाते। खुदा आयतें उसे ही गुनहगार बताती हैं न कि काफिरों को।

कुरान पा २३ आ० ३६ सूरे साफ्फात से साफ जाहिर है कि मुहम्मद साहब शायर थे और कुरान उनकी ही अपनी शायरी की किताब है जैसा कि उनके जमाने के लोग मानते थे। यह एक वास्तविकता है जिसे कुरान ने उसी समय के लोगों की राय बताकर प्रगट कर दिया है। समझदार लोग हजरत मौहम्मद साहब को 'पागल शायर' बताते थे क्योंकि वे अपने को खुदा का पैगम्बर बताते थे और कुरान की अनेकों बेतुकी बुद्धि विरुद्ध बातें लोगों को खुदा की ओर से सुनाया करते थे।

खुदा यदि असंख्य लोगों की जानों (रूहों) को अपने पास बुला लेता है तो उनको कहां पर जमा करता है, यह नहीं बताया गया है। खुदा के रहने की जगह जमीन से कितनी दूर है ? सोते समय किसी भी आदमी की रूह शरीर में से निकल कर कहीं नहीं जाती है, यह एक सच्चाई है। तब रूह के निकलते ही जिस्म मुरदा होकर खराब होने लगता है उसमें से बदबू आने लगती है। ऐसा सोते हुए आदमी या किसी भी प्राणी के साथ नहीं देखा जाता है। अतः कुरान की यह बात गलत है कि खुदा सोते आदमी की रूह अपने पास बुला लेता है।

खुदा ही फिरके परस्ती पैदा करके झगड़े फिसाद कराता है यह कु० सू० शूरा पा २५ आ ८ से प्रगट है। सारे झगड़ों की जड़ खुदा ही है। वह दुनियां में एकता नहीं होने देता है। ऐसे खुदा का जितना जल्दी हो बहिष्कार कर दिया जाय उतना ही अच्छा होगा।

खुदा पैगम्बर (मुहम्मद) कयामत, बहिश्त, दोजख और इस्लाम को न मानने वालों को कुरान में काफिर बताया गया है। यह परिभाषा बड़ी आपत्ति जनक है। कुरान ने मुसलमानों को ऐसे लोगों पर जुल्म व युद्ध करने का आदेश दिया है।

कुरान में कई जगह अल्लाह की मदद करने तथा खुश दिली से उसे कर्जा देने की बात कही गई है। और वायदा किया गया है कि खुदा जो कर्ज लेगा उसे वह दूना करके वापिस करेगा, और बदले में कर्ज देने वाले अपने साहूकारों के गुनाहों को भी माफ कर देगा। जो अल्लाहमियाँ इन्सानों की मदद का मोहताज हो और कर्ज का भूखा हो तथा सूद मिलाकर दूनी रकम वापिस करने का वायदा करे और साथ ही गुनाहों को

माफ करने का लालच लोगों को इस ख्याल से देवे कि लोग खुदा को बडे २ कर्ज देवें तो ऐसा व्यक्ति संसार का मालिक खुदा नहीं हो सकता है। शायद कुरान बनाने वालों ने खुदा बन्द को भी इन्सानी जमीदार की तरह समझ लिया होगा। जो कि अपनी रियाया (प्रजा) से मदद तथा कर्जा लेते हैं और वे उनकी (कर्ज देने व मदद करने वालों की) गलतियों को खुश होकर माफकर देते हैं। कुरानी खुदा और मामूली जमीदारों में कोई फर्क नहीं रह गया है। इस कुरान ने खुदा को हर तरह से बदनाम करने का ठेका ले रखा है। उसे कर्ज का भूखा भी लिख मारा है। ऐसी गलत किताब को कोई समझदार आदमी कैसे मान सकता है।

खुदा आसमान के ऊँचे किनारे पर रहता है। वहां बैठता है व कभी खड़ा हो जाता है। वहीं से उतर कर आदमी के पास आता है। वह मुहम्मद साहब के भी पास आता जाता था और दो कमान की दूरी (करीब ४-५ गज की दूरी) पर बैठ कर हुक्म देता था। इससे खुदा का सर्व व्यापक होना खत्म हो गया। खुदा आसमान पर अपने मकान पर से भी हुक्म नहीं भेज सकता था यह भी उसकी कमजोरी थी। शायद उस जमाने में लाउडस्पीकर नहीं होंगे और न रेडियो की जानकारी खुदा को होगी। वरना (ट्रान्समीटर से) रेडियो पर आसानी से खुदा अपने महल में तख्त (अर्श) पर बैठे २ मुहम्मद साहब से बातें कर सकता था।

कु० सूरे काफ आ २ पा २६ में साफ लिखा है कि मुहम्मद साहब भी काफिरों में से ही एक थे। यह भी खुदा की गलती थी। उसे उनको किसी ऊँची बढ़िया कौम मे पैदा करना चाहिये था। खुदा जमीन से इतनी दूरी पर रहता है कि फरिश्तों

और रूहों को उसके पास तक पहुंचने में ५० साल तक लग जाते हैं। अगर फरिश्तों की दौड़ने की रफ्तार अर्थात् एक साल में कितने मील चलते हैं) भी लिख दी जाती तो खुदा के महल की ऊंचाई का हिसाब भी लगाया जा सकता था। कुछ भी हो यह तो स्पष्ट है कि कुरानी खुदा हमारी जमीन पर नहीं रहता है। वह बेहद दूरी पर बैठा रहता है। इसलिये मुसलमानों का खुदा को हाजिर नाजिर (सर्व व्यापक) मानने का सिद्धान्त गलत है, वह कुरान विरुद्ध है।

कुरान सू० मुदसिर पा० २९ आ० ३१ का यह कहना है कि 'उसके लश्करों का हाल उसके सिवाय कोई नहीं जानता है।' यह सावित करता है कि खुदा को भी डर लगा रहता है, और इसीलिये वह फौजी लश्कर भी रखता है। वरना सर्व शक्तिमान *यदि खुदा होता तो उसे लश्कर रखने की क्या जरूरत थी।* फौजें तो लड़ाई व अपनी हिफाजत के ही लिये रखी जाती हैं।

कु० सू० बकर पा० २ आ० १६३ में खुदा को केवल अपने ही पूजित बताना और किसी को नहीं बताना और कु० सू० निसा पा० ६ आ० १५१ व १५२ में खुदा और मौहम्मद साहब को एक बताना, दोनों में कोई फर्क समझने वालों को काफिर बताना, दोनों परस्पर विरुद्ध बातें हैं। मुसलमानों के कल्मे में 'मुहम्मद रसूलअल्लाह' शब्द जोड़कर मुहम्मद साहब को भी अल्लाह के साथ पुजवाया जाता है। या तो यह मानना चाहिए कि कुरान में परस्पर विरोध है और या मुहम्मद साहब को खुदा के साथ याद करना या पूजना कुफ्र है, कुरान विरुद्ध है।

खुदा ने जो मनुष्य के भाग्य में लिख दिया है वही उसे मिलना है तो फिर पुरुषार्थ करना व्यर्थ है। वह तो हर हालत

में मिलेगा ही। यह पूछना बेजां न होगा कि खुदा सारे इन्सानों के भाग्य में अच्छी बुरी अलग २ बातें लिखने वाला कौन है। उसने सबको एकसी ही उम्दा बात उनके भाग्य में क्यों नहीं लिखी। आखिर बिना वजह किसी को दुःखी किसी को सुखी किसी को राजा, किसी की नौकर, गरीब, भिकारी आदि क्यों बना दिया? इससे तो खुदा बड़ा गुनहगार-बेइन्साफ आदमी साबित होता है।

बेजान इज्जत वाली (काबे) की मस्जिद की ओर मुँह करने का हुक्म देना खुदा का एक तरह से बुत परस्ती का प्रचार क्यों न माना जावे। जैसे पत्थर के बुत न कुछ सुनते हैं, न बोलते हैं और उनकी पूजा (इज्जत) करने का निषेध कु० सूरे बकर पा० २ आ० १७१ तथा कु० सूरे साफ्फात पा० २३ आ० ९५ व ९६ में किया है कि उनको खुद इन्सान पत्थर छील कर बनाता है, उसी तरह मस्जिद की दीवारें छत और फर्श भी तो इन्सान के ही बनाये होते हैं। तो मस्जिद (बड़े बुत खाने) की इज्जत (पूजा) करना भी तो बुत परस्ती ही साबित होगी। कुरान का यह आदेश बुत परस्ती का ही प्रचार है।

बिना बजह किसी का राज्य छीनना और किसी को देना खुदा को जालिम, बेइन्साफ बताता है। इसी तरह किसी को बेहिसाब रोजी देना और किसी को भूखा मारना भी खुदा को जालिम साबित करता है। खुदा को फरेबी (दगाबाज) बताना कुरान के खुदा को गाली देना नहीं तो क्या है। कु० सू० आलइमरान पा० ३ व ४ की आयतें तथा कु० सू० बकर पा० २ व ४ की आयतें जो पीछे दी हैं. खुदा की पाक जात पर भारी कलंक लगाने वाली हैं।

खुदा अपने साथ मुहम्मद को शरीक ठहराने वाले मुसलमानों

को सख्त सजा देगा, उनका कल्मा गलत है यह बात कु० सू० निसा पा० ५ आ० ४८ से भी साफ जाहिर है। आर्यों को चाहिये कि वे मुसलमानों को सावधान कर देवें।

पाखाना करके आने पर हाथों से (जिनमें बदबू होती है) और मुंह से मिट्टी मल देने से वे कैसे बिना पानी के पाक हो जावेंगे और कैसे बदबू मिट जावेगी। यह बात प्रत्यक्ष के विरुद्ध होने से अमान्य है। इसी तरह विषय भोगों तथा पाखाने के अङ्गों की गन्दगी भी बिना पानी के कैसे मिट सकेगी, यह भी सोचा जा सकता है। पाखाना जाने तथा विषय भोग के बाद मुंह से मिट्टी मलने की क्या तुक है यह भी कुरान में नहीं खोली गई जो कि बताना जरूरी बात थी।

खुदा जालिमों को सीधा रास्ता नहीं दिखाता यह भी बेजां बात है। रास्ता तो उन्हीं को दिखाया जाना चाहिये जो गुमराह होवें। जो सीधे रास्ते पर पहिले ही से हों उन्हें रास्ता कोई क्या दिखावेगा। अतः कु० सू० मायदा पा० ६ की आ० ५१ भी खुदा को बदनाम करने वाली है।

कु० सू० अनआम पा० ८ आ० १०७ बताती है कि खुदा की शिरकत खुदा ही की मर्जी से की गई है। तब फिर उसी बात को कु० सू० निसा पा० ५ आ० ४८ में बुरा बताना परस्पर विरुद्ध बात कहना है। कुरान की यही विशेषता है कि उसमें परस्पर बिरोधी स्थलों (आयतों) की भरमार है।

कु० सू० इब्राहीम पा० १३ आ० ६४ में लिखा है "ऐ पैगम्बर ! अल्लाह और मुसलमान जो तुम्हारे आज्ञाकारी हैं तुमको काफी हैं।" इसके मानी हैं कि खुदा भी मुहम्मद साहब का हुक्म बरदार था। कैसी अजीब सी बात है कि खुदा भी आज्ञाकारी हो सकता है।

व्यभिचार यदि पाप है तो व्यभिचार किसे कहते हैं उसकी मर्यादा क्या है, यह भी खोलना जरूरी था. जो कि कुरान में हमको कहीं नहीं मिल सकी है। अनेकों औरतों-बांदियों, लूट की या दुश्मनों की औरतों से व्यभिचार करना भी व्यभिचार क्यों नहीं माना गया जोकि कुरान में जायज़ बताया गया है।

अल्लाह की यादाश्त कमजोर है इसीलिये वह इन्सान के कर्मों को गिनता तथा लिखता रहता है। यदि वह उनमें से कुछ भूल जावे या लिखे रजिस्टर गुम हो जाव तो इसको भी सम्भावना हो सकती है। तो फैसला कयामत के दिन कैसे हो सकेगा ?

खुदा जब पहाड़ पर प्रगट हुआ तो उसके प्रकाश से पहाड़ चूर-चूर हो गया, यह भी कोरी गप्प है। रोशनी से कोई भी चीज चमक सकती है न कि चूर-चूर हो सकती है। कुरान लिखने वालों की कम समझ का यह आयत खुला सबूत है। क्योंकि कुरान में रोशनी से पहाड़ चूर २ होना लिखा है न कि खुदा के बोझ से वह चूर २ हुआ था।

जमीन और आसमान बनाने से पहिले ही खुदा ने इन्सान की तकदीर में जो चाहा सो लोहे महफूज पर लिख दिया था तो वैसा ही इन्सान कर्म करेगा। तब फिर कु० सूरे मायदा पा० ६ आ० ४८ में यह खुदा का लिखना बे मानी है (मिथ्या है) कि लोगों को आजमाने के लिये अलग-अलग गिरोहों में पैदा किया है। इन्सान की क्या हस्ती है जो जैसा खुदा ने लिख रखा है उसके खिलाफ़ चल कर खुदा के लिखे को झूंठा कर सकें। जब खुदा सर्वज्ञ है तो उसे सब कुछ पहिले ही से जानना चाहिये था। आजमायश की बात ही उसकी बे मानी (निरर्थक) है।

कुरान के अनुसार खुदा की बराबरी का तो कोई नहीं हो सकता है मगर शैतान खुदा से भी जबर्दस्त निकल गया जो खुदा से लड़ बैठा और खुदा अपना जोरदार हुक्म भी उससे न मनवा सका था। तब खुदा का कु० सू० लहब पा० ३० आ० ४ में यह कहना कि खुदा से बड़ा कोई नहीं है, मिथ्या हो जाता है। हां, यह हो सकता है कि खुदा लम्बाई चौड़ाई तथा वजन में बड़ा हो और शैतान जिस्मानी व दिमागी ताकत में उससे जबर्दस्त हो। कुछ भी हो शैतान ने खुदा के बड़े होने का दावा झूठा करके दिखा दिया था।

कुरान सू० हूद आ० २७ पा० १२ से स्पष्ट है कि मुहम्मद साहब के प्रभाव में अरब का कोई समझदार आदमी उसकी शायरी कुरान को सुनकर नहीं आया था। लोग उनकी असलियत को समझते थे। परन्तु भोलेभाले बे पढ़े लिखे गरीब नीच लोगों पर उनका जादू चल गया था। इस्लाम की आधार शिला गरीब भोले नीच लोग ही बने थे। आज भी बुद्धिमान लोग जो इस्लाम में पैदा नहीं हुए हैं, इस मजहब को गलत समझकर उसे स्वीकार नहीं करते हैं। धोखे से, लालच से या तलवार से विश्व में इस्लाम का फैलना इतिहास से स्पष्ट है। कुरान की यह कमजोरी का प्रमाण है।

नमाज पढ़ते वक्त, आपस में बातें करते समय या मुहम्मद साहब से बातचीत के वक्त जोर से (मुहम्मद साहब की आवाज के मुकाबिले ऊंची आवाज से) न बोलने की शिक्षा देना भी क्या कोई खुदाई कलाम हो सकता है ? क्या जरा २ सी बातें भी खुदा कहने आता था ? मुहम्मद साहब अपनी तरफ से इतनी सी बात भी क्यों नहीं कहना जानते थे ? असल बात तो यह है कि मुहम्मद साहब को जो कुछ भी कहना होता था

खुदा के नाम से शायरी बनाकर कह देते थे, ताकि भोले लोग उसे ईश्वरीय आदेश मानकर अमल करें।

इमरान की बेटी ने जब अपनी शिहबत गाह (नारी जननेन्द्रिय) को संयम से रोका था तो खुदा को उसमें रूह फूंकने की क्या जरूरत थी। यह बेशरमी का काम खुदा को नहीं करना चाहिये था। क्या खुदा बिना शिहवत की जगह में से रूह फूंके गर्भ धारण नहीं करा सकता था ? रूह तो नाक में से भी फूंकी जा सकती थी। एक क्वारी स्त्री के बिना पुरुष से मिले सन्तान होने की बात ही गलत है, सृष्टि के नियम से विरुद्ध होने से कुरान को यह आयत गलत है।

इस अध्याय में हमने देखा कि कुरान ने खुदा को हर तरह से बदनाम किया है। उसे लोगों में फूट डालकर लड़ाने वाला, लोगों को गुमराह करने वाला, उनके दिलो दिमागों, कानों व आंखों पर परदा डालने वाला, उनको गूंगा-बहरा बिना वजह बनाने वाला, उनको बिना कारण सजा तथा इनाम देने वाला, एक स्थान पर ऊपर आकाश में तख्त पर बैठा रहने वाला, कभी-कभी उतर कर जमीन पर आने वाला, अल्पज्ञ, अल्पशक्तिमान, मिथ्या उपदेश देने वाला, संसार के प्राणीमात्र का मित्र होने के स्थान पर दुनियां का शत्रु साबित किया है। इससे प्रगट है कि कुरान खुदाई किताब नहीं है, और न उसका बनाने वाला ही कोई विशेष बुद्धिमान व्यक्ति था। अथवा यह मानना होगा कि कुरान का खुदा ऐसा ही कमजोर आदमी था जैसा कि कुरान से साबित है। बुद्धिमान लोग ऐसे खुदा को नहीं मान सकते हैं।

———

चौथा अध्याय

कुरान में सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन

(कुरान शरीफ़ में जगत उत्पत्ति के बारे में निम्न प्रकार वर्णन मिलता है।)

'तुम्हारा परवर्दिगार अल्लाह है जिसने छः दिन में जमीन और आसमान को पैदा किया फिर तख्त पर जा विराजा। वही रात को दिन का पर्दा बनाता है।...उसी ने सूर्य और चन्द्रमा और तारों को पैदा किया कि यह सब खुदा के फर्मावर्दार हैं' ॥५४॥ (कु० सू० औराफ़ पा० ८)

'वही है जिसने तुमको एक शरीर से पैदा किया और उससे उसकी स्त्री को निकाला ताकि मर्द औरत की तरफ ध्यान दे।'

॥१८९॥ (कु० सू० आराफ़ पा० ९)

'पूछो कि तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा भी है कि जहांन को अब्बल पैदा करे, फिर उनको दुबारा पैदा करे। कहो अल्लाह ही सृष्टि को प्रथम बार पैदा करता है फिर उनको दुबारा पैदा करेगा...'॥३४॥ (कु० सू० यूनिस पा० ११)

'वही है जिसने आसमान और जमीन को ६ दिन में बनाया और उसका तख्त किब्रियाई (पानी) पर था ...।'

॥७॥ कु० सू० हूद पा० १२॥

'अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बिना किसी सहारे ऊंचा खड़ा किया (जैसा कि) तुम देख रहे हो, फिर तख्त पर

का विराजा और चांद सूरज को काम में लगाया कि हर एक वक्त मुकर्रर तक चलता रहे…'॥२॥ कु० सू० राद पा० १३॥

'हमने आसमान में बुर्ज बनाये और देखने वालों के लिये उसको तारों से सजाया' ॥१६॥ 'और हर निकाले हुए शैतान से हमने उसकी रक्षा की ॥१७॥ और हमने जमीन को फैलाया और हमने उसमें पहाड़ गाड़ दिये '।१९। कु० सू० हिज पा०१४।

'हमने सड़े हुए गारे से जो सूख कर खनखना बेलवाता है आदमी को पैदा किया' ॥२६॥ कु० सू० हिज पा० १४।

'और उसीने रात और दिन, सूरज, चांद और सितारे को तुम्हारे काम में लगा रखा है और सितारे और तारे उसीके आज्ञाकारी हैं…॥१२॥ पहाड़ जमीन पर गाड़े ताकि जमीन तुम्हें लेकर किसी तरफ न झुकने पावे और नदियां और रास्ते बनाये शायद तुम राह पाओ।'

॥१५॥ कु० सू० नहल पा० १४॥

'जब हम किसी चीज को चाहते हैं तो हमारा कहना उसके बारे में इतना ही होता है कि हम उसको फर्मा देते हैं कि 'हो' और वह हो जाता है' ॥४०॥ कु० सू० नहल पा० १४॥

'और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चांद को पैदा किया कि तमाम चक्र (दायरे) में फिरा करते हैं।'

॥३३॥ कु० सू० अम्बिया पा० १७॥

'और हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाये और पैदा करने में हम अनाड़ी न थे' ॥१७॥ कु० सू० मोमनून पा० १८॥

'क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह बादल को हांकता है फिर बादलों को आपस में जोड़ता है, फिर उनको तह पर तह करके रखता है, फिर तू बादल में से मेह को निकालते हुए देखता है और आसमान में ओलों के पहाड़ जमे हुए हैं, जिस वक्त

चाहता है ओले बरसाता है जिसे चाहता है बचा देता है…।' ।४३। 'अल्लाह ने तमाम जानदारों को पानी से पैदा किया है…'

।।४५।। कु० सू० नूर पा० १८।।

'जिसने आसमान और जमीन, जो कुछ आसमान और जमीन में है (सबको) छः दिन में पैदा किया, फिर तख्त पर जा बैठा…'।५६। 'बड़ी बरकत है उसकी जिसने आसमान में बुर्ज बनाये और उसमें चिराग और चांद उजाला करने वाला रखा'। ६१। कु० सू० फुर्कान पा० १६।।

'क्या लोगों ने नहीं देखा कि खुदा किस तरह सृष्टि को पहिली बार पैदा करके फिर उसी तरह सृष्टि बार-बार पैदा करता रहता है, यह अल्लाह के लिये साधारण बात है।'

।।१६।। कु० सू० अन्कबूत पा० २०।।

'अगर हम चाहें तो इनको जमीन में धंसा दें या इन पर आसमान के टुकड़े गिरादें' ।६। कु० सू० सवा पा० २२।।

'अल्लाह ने आसमान और जमीन को थाम रखा है कि टल न जायें और टल जांय तो फिर उसके सिवाय कोई नहीं जो उनको थाम सके…'।४१। कु० सू० फातिर पा० २२।

'इन आदम के बेटों को हमने लसदार मट्टी से पैदा किया है' ।११।

'उसका हुक्म यही है कि जब किसी चीज (के बनाने) का इरादा करे तो उसे कहे 'हो' और वह हो जाता है।'

।८२। कु० सू० साफ्फात पा० २३।

'(ए पैगम्बर) कहो क्या तुम उससे इन्कार करते हो जिसने दो दिन में जमीन को पैदा किया…'।६। 'उसीने जमीन में पहाड़ बनाये और उसी में मांगने वालों के लिये चार दिनों में खुराकें ठहरा दी ।१०। फिर आसमान की तरफ सीधा हो गया और

वह धुआं था, जमीन और आसमान दोनों से कहा कि तुम खुशी से आये या लाचारी से। दोनों ने कहा हम खुशी से आये ।११। इसके बाद दो दिन में उस (धुंऐ) से सात आसमान बनाये और हर एक आसमान में अपना हुक्म उतारा और पहिले आसमान को हमने तारों से सजाया और हिफ़ाजत रखी यह जोराबर कुदरत वाले से सधा है।'

।१२। कु० सू० हमीद सज्जदह पा० २४।

'लोगों ! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी जातें और बिरादरी ठहराईं··· ।'

।१३। कु० सू० हजरात पा० २६।।

'और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके बीच में है छः दिन में बनाया और हम नहीं थके··· ।'

।३७। कु० सू० जारियात पा० २६।।

'और उसी ने आसमान को ऊँचा किया है और तराजू बना दी' ।७। उसी ने मनुष्य को पपड़ी की तरह बजती हुई मिट्टी से पैदा किया ।१४। और जिन्नों को आग की लौ से।

।१५। कु० सू० रहमान पा० २७।।

'वही है जिसने छः दिन में आसमानों और जमीन को बनाया फिर तख्त पर जा विराजा। जो चीज जमीन में दाखिल होती है और जो चीज जमीन से बाहर आती है, और जो चीज आसमान से उतरती है और जो चीज आसमान की तरफ चढ़ती है वह जानता है··· ।' ।४। कु० सू० हदीद पा० २७।।

'···अल्लाह जमीन को उसके मरे पीछे जिलाता है··· ।'

।१७। कु० सू० हदीद पा० २७।।

जिसने तर ऊपर सात आसमान बनाये (भला) तुमको

दयामान की कारीगरी में कोई कसर दिखाई देती है फिर एक निगाह दौड़ा कहीं दरार दिखाई देती है ।३। हमने पहले आसमान को दीपकों से सजा रखा है और हमने इन (चिरागों) को शैतानों के लिए मार की चीज बनाई है और हमने उनके लिये दोजख की सजा तैयार कर रखी है ।'

।५। कु० सू० मुल्क पा० २९।।

'क्या तुमने न देखा कि अल्लाह ने कैसे तर ऊपर सात आसमान बनाये ।१५। और उनमें चन्द्रमा को उजाले के लिये और सूर्य को चिराग बनाया' ।१६। कु० सू० नूह पा० २९।।

'क्या हमने जमीन को फर्श । ६ । और पहाड़ों को मेखें नहीं बनाया । ७ । हम ही ने तुम्हारे ऊपर सात पुख्ता (आसमान) बनाये । १२ । और हमने चमकता चिराग (सूर्य को) बनाया । १३ । (कयामत के दिन) आसमान फट कर दरवाजे दरवाजे हो जायंगे' ।१९। कु० सू० नवा पा० ३०।।

'आसमान की कसम जिसमें बुर्ज हैं ।'

।१। कु० सू० बुरुज पा० ३०।।

'मनुष्य को चाहिए कि वह जिस चीज से पैदा किया गया है ।५। वह पानी से पैदा किया गया है जो (वीर्यपात के समय) उछल कर ।६। पीठ और छाती की हड्डियों से निकलता है ।'

।७। कु० सू० सारिफ पा० ३०।।

'क्या इन लोगों ने अपने ऊपर आसमान की तरफ नहीं देखा कि हमने उसको जैसे बनाया और उसको सजाया और उसमें कहीं दर्ज नहीं है ।' ।५। कु० सू० काफ पा० २६।।

'अल्लाह बे पर्वाह है ।२। न कोई उससे पैदा हुआ है न वह किसी से पैदा हुआ ।३। न कोई उसकी बराबरी का है ।'

।४। कु० सू० लहब पा० ३०।।

'और हमने आसमानों को अपने बाहु बल से बनाया और हम सामर्थ वाले हैं' ।४७। 'और हमने जमीन को बिछाया सो हम क्या खूब बिछाने वाले हैं' ।४८। 'और हमने हर चीज के जोड़े बनाये । शायद तुम ध्यान दो ।'

।४९। कु० सू० जारियात पा० २७।।

'वही है जिसने तुम्हारे लिये धरती की चीजें पैदा कीं फिर आसमान की तरफ ध्यान दिया, तो सात आसमान हमवार बना दिये और वह हर चीज से जानकार हैं' ।२९। 'जिसने तुम्हारे लिये जमीन का फर्श बनाया और आसमान को छत ।२२। 'वह आसमान और जमीन का बनाने वाला है और जब किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसके लिये फर्मा देता है कि 'हो' और वह हो जाता है ।' ।११७। कु० सू० बकर पा० १।।

'ऐ लोगो ! अपने परवर्दिगार से डरो जिसने तुमको एक शख्स से पैदा किया और उससे उसकी बीबी को पैदा किया और उन दो से बहुत मर्द और औरत फैला दिये··· ''

।१। कु० सू० निसा पा० ४।।

'वही है जिसने तुम लोगों के लिये तारे बनाये ताकि जंगल और नदी के अंधेरे में उनसे हिदायत पाओ ।' 'और वही है जिसने तुमको एक शरीर से पैदा किया···।'

।९८। कु० सू० अनआम पा० ७।।

और याद करो वह समय जब तुम्हारे परवर्दिगार ने आदम के बेटों से उनकी पीठों से उनकी सन्तान को निकाला था···।'

।१७२। कु० सू० आराफ पा० ९।

नोट – मनुष्य और वह जीव जो आंखों से दिखाई नहीं देते और इसीलिये जिन्न कहलाते हैं । कु० पृ० ५२७

'खुदा वह है जिसने सात आसमानों को बनाया और उसी के मानिन्द जमीन भी। इन दोनों के बीच हुक्म उतरते रहते हैं···।' ।१२। कु० सू० तलाक पा० २८।।

'तुम्हारा परवर्दिगार वही अल्लाह है जिसने ६ दिन में आसमान और जमीन को बनाया फिर अर्श पर जा विराजा...।'

।३। कु० सू० यूनिस पा० ११।।

'वही जिसने सूरज को चमकीला बनाया और चांद को रोशन और उसकी मंजिलें ठहराईं ताकि तुम वर्षों की गिनती का हिसाब मालूम कर लिया करो···।'

।५। कु० सू० यूनिस पा० ११।।

'···कहो अल्लाह ही सृष्टि को प्रथमबार पैदा करता है, फिर उसको दुबारा पैदा करेगा···।'

।३४। कु० सू० यूनिस पा० ११)

'और सूरज और चांद को जो चक्कर खाते हैं एक दस्तूर पर तुम्हारे काम में लगाया और रात दिन को तुम्हारे अधिकार में कर दिया।३३। कु० सू० इब्राहीम पा० १३।

'और ऐ पैगम्बर! उस वक्त को याद करो। जब कि तुम्हारे परवर्दिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं सड़े हुए गारे से जो खनखनाने लगता है एक आदमी को पैदा करने वाला हूँ ।२८। तो जब मैं उनको पूरा बना चुकूँ और उसमें रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सिजदा (दन्डवत्) करना।'

।२९। कु० सू० हिज पा० १४।।

'लोगो तुम्हारा एक खुदा है सो जो लोग पिछली जिन्दगी का विश्वास नहीं करते उनके दिल इन्कारी हैं और वह घमण्डी हैं' ।२२। ०कु सू० नहल पा० १४।।

'यह उसका उतारा हुआ है जिसने जमीन और ऊंचे आसमानों को पैदा किया' ।४। कु० सू० ताहा पा० १६।।

'क्या जो लोग इन्कार करने वाले हैं उन्होंने नहीं देखा कि आसमान और जमीन दोनों का एक पिण्ड सा था। सो हमने (उसको तोड़कर) जमीन और आसमान को अलग अलग किया और पानी से तमाम जानदार चीजें बनाईं···।३०। और हमही ने जमीन में पहाड़ रखे ताकि लोगों को लेकर झुक न पड़े और हमही ने चौड़े रास्ते बनाये ताकि लोग राह पावें।'

।३१। कु० सू० अम्बिया पा० १७।।

'और आसमान जमीन पर गिरने से थमा है मगर उसके हुक्म से···' ।६५। कु० सू० हज्ज पा १७।।

'और हमने आदमी को सनी हुई मिट्टी से बनाया है '

।१२। कु० सू० मोमिनून पा० १८।।

'कौन है जो पहिले नई सृष्टि पैदा करता है और उसी तरह बारबार पैदा करता है...' ।६४। कु० सू० नम्ल पा० २०।।

'और (ऐ पैगम्बर) तेरा परवर्दिगार जो चाहता है पैदा करता है और चुन लेता है। चुनना लोगों के हाथ में नहीं है···

।६८। कु० सू० कसस पा० २०।।

'अल्लाह वह है जिसने ६ दिन में आसमान और जमीन और उन चीजों को पैदा किया है। आसमान और जमीन के बीच में है। फिर तख्त पर जा विराजा··· ।'

।४। कु० सू० सज्दह पा० २१।।

'फिर हमने मेंह के जरिये जमीन को उसके मरे पीछे जिन्दा किया है। इसी तरह मुर्दों को उठाना है ।९। वह रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल कर देता है ।१३। अल्लाह ने आसमान और जमीन को थाम रखा है कि टल न

जाँय, और टल जाँय तो फिर उसके सिवाय कोई नहीं जो उनको थाम सके···' ।४१। कु०सू० फातिर पा० २२।।

'उसीने तुम लोगों को अकेले शरीर से पैदा किया, फिर उसीने उसकी बीबी को पैदा किया और तुम्हारे लिये आठ तरह के चौपाये पैदा किये···' ।६। कु० सू० जुमर पा० २३।।

'आसमानों को और जमीन को पैदा करना आदमियों को पैदा करने के मुकाबिले बड़ा काम है मगर बहुधा लोग नहीं समझते ।५७। वह जब किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसे कह देता है कि 'हो' और वह हो जाता है ।'

।।६८। कु०सू० मौमिन पा० २४।।

'कयामत की घड़ी पास आ लगी और चांद फट गया।'

।१। कु० सू० कमर पा० २७।।

'और हमने आसमान को टटोला और उसको सख्त चौकीदारों और अंगारों से भरा पाया।

।८। कु० सू० जिन्न पा० २९।।

'आसमान की तरफ कि वह कैसा ऊँचा बनाया गया है।

।१८। कु० सू० गाशियह पा० ३०।।

समीक्षा–कुरान शरीफ से जगत की रचना का जो वर्णन पीछे दिया गया है वह सर्वथा मिथ्या है। वह बुद्धि, प्रत्यक्ष, भूगोल, खगोल तथा विज्ञान के विरुद्ध होने के साथ परस्पर विरुद्ध भी है। कुरानी खुदा छः दिन में विश्व की रचना की बात कहता है इससे प्रगट है कि उसे जगत रचना के वैज्ञानिक विधान की भी जानकारी नहीं थी। जगत की रचना तथा प्रलय का क्रम प्राकृतिक नियमों के अनुसार चला करता है। कोई भी लोक एक दम नहीं बन जाता है। उसके निर्माण में लाखों वर्ष का समय लगता है और जब वह विकसित होकर इस स्थिति में आ जाता है कि उस पर जीवन सम्भव हो तो

प्राणी जगत की उस पर सृष्टि की जाती है। इसी प्रकार जब धीरे २ पृथ्वी आदि लोकों की शक्ति का ह्रास होकर जब वह निर्वीर्य हो जाते हैं और उन पर प्राणी तथा बनस्पति जगत का अभाव हो जाता है तो लाखों वर्षों में उनकी पूर्ण प्रलय होती है। ईश्वर की सृष्टि में अनायास कुछ भी नहीं होता है। हर बात किसी नियम के अन्तर्गत होती है और उसकी उत्पत्ति तथा विनाश में क्रमिक विकास तथा ह्रास होता है। दृष्टान्त के लिये किसी भी वृक्ष आदि की उत्पत्ति तथा स्वाभाविक ह्रास का क्रम देखा जा सकता है अथवा किसी भी मनुष्यादि प्राणी के जीवन तथा मृत्यु के क्रम पर विचार किया जा सकता है। जो नियम यहां मिलेगा वही विश्व की उत्पत्ति तथा प्रलय में भी समझना होगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि छः दिन में खुदा का विश्व की रचना का दावा करना एक मिथ्या बात है। दो दिन में जमीन बन गई, दो दिन में पहिला आसमान और तारामण्डल बन गया और शेष दो दिन में खुदा ने अपने फर्जी ६ आसमान बना डाले, यह सब बच्चों को बहलाने की कहानी मात्र है। खुदा ने तारा मण्डल को शायद चमेली के फूल समझ लिया होगा। उसे यह भी नहीं मालूम था कि इस विश्व का कोई आदि अन्त नहीं है जिसको सात या कम ज्यादा हिस्सों में बांटा जा सके। हमारी पृथ्वी और सूर्य से भी बेहद बड़े २ लोक विश्व में हैं जिनकी गिनती की ही नहीं जा सकती है। तारागणों की संख्या एक आकाश गंगा में कितनी है यह भी अनुमान नहीं किया जा सकता है और ऐसी असंख्य आकाश गंगायें इस विश्व में मौजूद हैं जिनमें से अब तक कुछ को ही देखा जा सकता है। तब अनन्त विश्व के अनन्त लोक लोकान्तरों से

युक्त विश्व को शान्त बताकर उसे सात भागों में विभाजित करके परमात्मा को व उसके कार्यों को भी सीमित बताना कुरान बनाने वाले का अज्ञान नहीं तो क्या है। क्या आसमान कोई ठोस चीज है जो धुंऐ से बना कर खड़े किये गये हैं और मकान की छत की तरह उसे बनाकर उसमें तारे जड़े गये है आकाश तो पोल को कहते हैं जो कि स्वाभाविक (नित्य) होता है। आसमान को ठोस व बनी हुई चीज बताना, आसमान के टुकड़े करके जमीन पर डालने की बात कहना ओच्छी अक्ल वालों की बात है।

सूर्य, चन्द्रमा तथा तारों को फर्माबर्दार बताना भी गलत बात होगी। फर्माबर्दार जो होता है, वह जानदार होता है जो अपने मालिक के हुक्म को सुन व समझ सकता है। साथ ही हुक्म देने वाला और हुक्म मानने वाला दोनों एक दूसरे से अलग-अलग होते हैं। खुदा को तो जर्रे २ में व्यापक माना जाता है। वही सूर्य चन्द्रमा व तारों को बनाता व खुद ही उनको चलाता है तो फ़र्माबर्दारी की बात कहना नहीं बनती है।

खुदा ने दुनियां बनाई और फिर अर्श के तख्त पर सातवें आसमान पर जा बैठा। और नहीं थका। यह शब्द बताते हैं कि ज्यादा मैहनत और करनी पड़ती तो वह जरूर ही थक जाता। खुदा के शब्द बताते हैं कि उसे बड़ी भारी मैहनत दुनियाँ बनाने में करनी पड़ी थी। दूसरी ओर खुदा का कहना है कि जब वह किसी काम को करना चाहता है तो केवल 'कुन' अर्थात 'हो' कह देता है और सभी कुछ हो जाता है, तो दुनियां को बनाते वक्त क्या अल्लाह मियां 'कुन' कहने को भूल गया था। यदि 'कुन' कहने से ही सभी कुछ हो जाता तो खुदा बन्द करीम को छः दिन तक कड़ी मैहनत नहीं करनी

पड़ती। इससे स्पष्ट है कि दोनों में से खुदा की एक बात तो अवश्य ही गलत है। या तो 'कुन' का नुस्खा गलत है या छः दिन में दुनियां बनाने को बात गलत है। और जब इस छोटी सी जमीन को बनाने में खुदा को दो दिन तक कड़ी मैहनत करनी पड़ी थी तो इस जमीन से लाखों गुना बड़े सूर्य तथा अनेक गुना बड़े मंगल-बृहस्पत आदि अरबों खरबों असंख्य लोकों को बनाने में करोड़ों अरबों साल तो आसानी से लग गये होंगे। ऐसा लगता है कि कुरान बनाने वाले ने खुदा को भी एक अपने से बड़ा आदमी मान रखा था और उसकी महानता के बारे में उसे कुछ भी ज्ञान नहीं था।

जमीन में पहाड़ गाढ़ने की जो बात लिखी है, वह भी बेतुकी बात है। जो चीज किसी में गाढ़ी जाती है वह उससे पहिले अलग होती है। तो क्या पहाड़ों को जमीन से अलग बनाया था और फिर जमीन में ठोंक कर गाढ़ दिया था? 'पहाड़ों को इसलिये गाढ़ा गया कि जमीन एक तरफ को झुक न पड़ें, खुदा का यह कहना तो अपनी अक्ल का दिवाला निकाल देना है। कुरान बनाने वालों को साधारण सी समझ का भी अभाव था यह इससे प्रगट है।

अल्लाह का तख्त पानी पर था तो पानी किस पर था और फिर वह चीज किस पर कायम थी। यदि खुदा ही उस सबको धारण कर रहा था तो खुदा ने अपना तख्त फरिश्तों से क्यों उठवा रखा था। जब खुदा अर्श के तख्त पर बैठता है, तो कभी खड़ा तथा लेटता भी होगा। तब उसके पलंग का जिक्र कुरान में क्यों नहीं किया गया। खुदा की खुराक भी बतानी चाहिये थी कि वह क्या तथा कितना खाता पीता है।

"आसमान में ओलों के पहाड़ जमे रहते हैं" यह तो बड़ी

मजेदार बात कुरान ने बताई है। मुसलमान पढ़े लिखे लोगों को इसे साबित करने में अपनी अक्ल लगानी चाहिये। 'आसमान और जमीन को खुदा ने थाम रखा है' ऐसा कुरान में लिखा है, वरना ये टल या टकरा कर चूर २ हो जाते। जब ऐसी बात है तो खुदा का यह कहना कि यह मेरे फर्मांवर्दार हैं, गलत हो जाता है। क्योंकि फर्मांवर्दारी तो जभी होगी जब वे आजाद होंगे। दोनों में से एक बात जरूर ही गलत हो जाती है।

जमीन और आसमान से यह पूछना कि तुम खुशी से आये या लाचारी से, यह भी मजेदार बात है कि जमीन और आसमान बातें भी सुनते तथा जवाब भी देते हैं? कुरानी खुदा की हर बात लाजवाब है।

एक जगह खुदा कहता है कि हमने हर चीज को पानी से पैदा किया और दूसरी जगह कहता है कि हमने हर आदमी को सड़े हुए गारे से जो सूख कर खनखन बजने लगता है उस मिट्टी से पैदा किया। दोनों ही बातें गलत हैं। आदमी या हर जानदार की पैदायश में आग, हवा, मिट्टी, पानी और आकाश यह पांच चीजें शामिल होती हैं। अकेली एक चीज पानी या मिट्टी से कोई भी जानदार का जिस्म नहीं बन सकता है। खुदा ने आसमान में बुर्ज बनाये, उसमें सख्त चौकीदार भरे पड़े हैं, आसमान में दरार नहीं है, इस तरह की बातें लिखना कम समझी की बात है। न तो आसमान में बुर्ज बनते हैं और न उसमें चौकीदार लोग लाठी या भाला लेकर पहरा देते हैं। न पोल में दरारें हुआ करती हैं। इस तरह की बे सर पैर की कुरान में बातों का उल्लेख होने से कुरान व उसके खुदा का महत्व गिर जाता है, और कुरान

गलत किताब साबित हो जाती है। खुदा का यह कहना कि हमने आसमानों को अपने बाहुबल से बनाया, साबित करता है कि इन्सान और खुदा की हुलिया मिलती जुलती है। हाथ पैर नाक मुंह पेट आंखें बगैर सब खुदा के जिस्म में इन्सान की ही तरह हैं। तो शरीर वाला खुदा विश्व में सर्व व्यापक (हाजिर नाजिर) हो ही नहीं सकता है। यह तो खुदा की बड़ी भारी बदनामी की बात है।

सूरज और चांद को दायरे में फिरना बताना तो स्पष्टतया कुरान को किसी कम पढ़े लिखे अज्ञानी व्यक्ति का बनाया हुआ साबित करता है। तारा मण्डल को पहिले आसमान के चिराग बताना और उनको शैतानों को मारने के उद्देश्य से बनाना बताना भी ना समझी की बात है। पढ़े लिखे लोग कुरान की इन बेतुकी बातों पर हंसेंगे और विद्यार्थी मज़ाक करेंगे।

इन्सान की उत्पत्ति की यह कथा कि खुदा ने मिट्टी से आदम का पुतला बनाकर उसमें रूह फूंक दी और उसी आदम की पसली निकाल कर उससे एक औरत बनाई। फिर उन मर्द औरत से सारी दुनियां के लोग पैदा किये गये, यह भी बड़ी गलत सी कहानी है। क्या खुदा के यहां मट्टी का अकाल पड़ गया था जो मिस्टर आदम की पसली तोड़कर उससे औरत बनाई गई। आदम के शरीर से पैदा होने से आदम की बीबी उसकी बेटी हो जाती है। तब बाप बेटी का पति पत्नी का रिश्ता खुदा ने क्यों कायम कराया ? आदम की औलाद परस्पर में भाई बहिन हुई। तब सगे भाई बहिनों की शादियां कराकर आगे दुनियां के वंश क्यों चलाये गये ? इस कहानी को बिलकुल गप्प ही क्यों न माना जावे इससे अच्छी बात तो मानने की

यह है कि प्रारम्भ सृष्टि में सैकड़ों स्त्री पुरुषों की उत्पत्ति ईश्वर ने की और उनके सम्बन्ध से फिर प्रजा की वृद्धि हुई। इसे मानने से न तो ईश्वर पर दोष आता है और न बाप बेटी और भाई बहिन के विवाह का पाप किसी पर लागू होता है। जैसे खुदा ने एक को पैदा किया वैसे ही हजारों जोड़ों को पैदा कर दिया। वैदिक धर्म की यह मान्यता कुरान और बाइबिल की पहिली मान्यता से अधिक बुद्धिगम्य तथा निर्दोष है। अतः कुरान की मान्यता मिथ्या तथा दोष पूर्ण होने से अमान्य है।

आसमान जब कोई चीज ही नहीं है केवल खाली जगह (पोल) है तो उसे तराजू बताना ना समझी की बात है। आसमान को ठोस व पुख्ता तथा ऊंचे तर ऊपर बताना कुरान बनाने वाले को अज्ञानी साबित करता है। इसी तरह पहाड़ों को जमीन में मेखें तथा आसमान फटकर दरवाजे हो जावेंगे, ऐसी बातें लिखना कुरान वाले को बे पढ़ा लिखा आदमी साबित करता है। कसम हमेशा झूंठे लोग खाते हैं या वे लोग जिनकी बात का कोई भरोसा नहीं होता है। कुरानी खुदा भी आसमान की कसम खाने वाला होने से ठीक वैसा ही लगता है। मानव शरीर में वीर्य की उत्पत्ति सारे शरीर में से तत्वों के आकर्षण से होती है न कि पसली और पीठ की हड्डी में से वह निकलता है यह बात विज्ञान से सिद्ध है। मालूम होता है कि कुरानी खुदा को हिकमत व शरीर शास्त्र का भी ज्ञान नहीं था।

कुरान का यह कहना कि तारे बनाने का उद्देश्य इन्सान को रात में जंगल आदि में राह बताने का है, वे बुनियाद और

गलत है। तारे हमारी जमीन जैसे और उससे भी बड़े लोक हैं। उनमें आदमी तथा दूसरे प्राणी रहते हैं। जैसे इस जमीन को बनाने का उद्देश्य जीवों को जन्म देकर कर्म करने का अवसर देना होता है वैसे ही तारों को बनाने का उद्देश्य भी ईश्वर का उनमें रहने वाले प्राणियों को जन्म देकर उनका हित करना होता है। तारे हमारे ही लिये बनाये गये हों, यह गलत बात है। यह दूसरी बात है कि हम लोग उनकी मौजूदगी से लाभ उठाते हैं। कहीं कुरान तारों को इन्सान को राह दिखाने को बनाना बताता है, कहीं उनको जिन्नात व शैतानों को मारने के लिये बनाया गया लिखता है, कहीं आसमानों को सजाने के लिये लिखता है। यह सब बेतुकी परस्पर विरुद्ध अनर्गल की बातें हैं।

कु० सूरे हिज पा० १४ आयत २८ व २९ में खुदा का यह कहना कि जब मैं आदम को पूरा बना चुकूं और रूह उसमें फूंक दूं तब तुम उसके सिजदा करना—यह जाहिर करता है कि आदम का पुतला सूखकर खनखन बजने वाली पपड़ी से बनाने में खुदा को कड़ी मैहनत करनी पड़ी थी और उसमें वक्त भी काफी लग गया था। पता नहीं उस वक्त खुदा को अपना नुस्खा 'कुन' का क्यों भूल गया था। वरना केवल कुन कह देता और आदम का पुतला खुद व खुद बन जाता। न वक्त लगता, न मैहनत करनी पड़ती। एक बात हम और भी नहीं, समझ सके कि यह 'कुन' खुदा ने किससे कहा था और किसने सुना था। क्योंकि उस वक्त खुदा के अलावा और कोई जानदार तो था ही नहीं जो उस हुक्म को सुन पाता। कुरान की सारी ही बातें अक्ल की कसौटी पर गलत उतरती हैं, तब आंख बन्द करके कैसे उनको कोई अक्ल वाला आदमी मान सकता है।

'आसमान और जमीन का पिण्ड सा था उसे तोड़ कर खुदा ने अलग-अलग किया' यह बात भी किसी अक्ल के दिवालिया की ही कही हो सकती है। क्योंकि जब आसमान कोई ठोस चीज ही नहीं है तो वह जमीन के साथ चिपक कर एक पिण्ड कैसे बन सकता था। शून्य आकाश जमीन पर गिर ही नहीं सकता है। गिरने वाली वस्तु का ठोस चीज होना जरूरी है। कुरान के बनाने वाले की हर बात विद्यार्थियों व विद्वानों के लिये तफरीह (मनोरंजन) की चीज है।

केवल आदमी ही नहीं, कोई भी जानदार प्राणी सनी हुई मिट्टी से नहीं बन सकता है। कुरान की सूखी या सनी मिट्टी से आदमी बनाने की बात बे सर पैर की है। आसमान फट कर दरवाजे-दरवाजे हो जायगा और चांद फट जायगा यह सब बे पढ़े लिखे, कम अकल, सीधे, भोले लोगों का मन बहलाने की बातें हैं, वरना आसमान जो केवल पोल है उसका फटना या न फटना कहना निरर्थक बात है। चांद के फटने का क्या कारण होगा ? क्या खुदा उसे कुल्हाड़ी लेकर फाड़ेगा या उसमें कोई बिस्फोट होगा यह रहस्य नहीं खोला गया है। यदि खोल दिया जाता तो उत्तम होता। साथ ही आसमान क्या चाकू या छूरे से काटा जायगा यह भी बता देना चाहिये था। कुरान की बातें सारी ही ज्ञान विज्ञान के विरुद्ध हैं।

खुदा का यह कहना कि 'जो लोग अपनी पिछली जिन्दगी का विश्वास नहीं करते उनके दिन इन्कारी हैं और वह घमण्डी हैं' (कु० सू० नहल आ० २२) यह बताना है कि इन्सान की मौजूदा जिन्दगी (पैदायश) से पहिले एक या अनेक जिन्दगी (जन्म) हो चुकें होते हैं। वैदिक धर्म में इसे ही पुनर्जन्म

कहते हैं। पुनर्जन्म के सिद्धान्त को न मानने वाले कुरान भक्त लोगों को आंख खोलकर इस आयत पर ध्यान देना चाहिये।

कुरान सूरे नम्ल आ० ६४ पा० २० 'साफ-साफ बताता है कि जमीन को खुदा बार २ पैदा किया करता है अर्थात हर प्रलय के बाद नई सृष्टि और हर सृष्टि के बाद प्रलय होने का यह स्वाभाविक अनादि क्रम परमात्मा के कर्म का है जो कि वैदिक धर्म का सिद्धान्त है। यही बात कु० सूरे यूनिस आ० ३४ पा० ११ में तथा कुरान सू० अन्कबूत आ० १६ पा० २० में भी कही गई है। तो ऐसी दशा में जबकि स्पष्ट रूप से कुरान पुनर्जन्म (पिछली जिन्दगी) तथा सृष्टि को प्रवाह से अनादि के सिद्धान्त को स्वीकार करता है तब खुदा की मर्जी से इन्सान के पहिली बार पैदा होने और मरने पर कयामत के बाद हमेशा को बहिश्त दोजख में डाले जाने और फिर कभी उसमें से निकल कर काम करने का अवसर न मिलने का कुरान का जो दावा अन्य स्थानों पर दिया है वह अधूरा तथा गलत क्यों न माना जावे? कर्मानुसार जीवों को बार २ जन्म मिलने तथा प्रलय के बाद नई सृष्टि में उनको जन्म देकर फिर कर्म करने का अवसर देने का वैदिक तर्कयुक्त सही सिद्धान्त को कुरान के भक्तों को स्वीकार करने में क्यों आपत्ति होती है यह उनको भी विचारना चाहिये।

पांचवां अध्याय

कुरान और कयामत

(कुरान शरीफ़ में कयामत (प्रलय) के बारे में निम्न प्रकार वर्णन मिलता है ।)

'(ऐ पैगम्बर) तुम से नरक वासियों की बावत कुछ पूछ पाँछ नहीं होगी' ।१०६। कु० सू० बकर पा० १।

'और जब इब्राहीम ने खुदा से निवेदन किया कि हे मेरे परवर्दिगार ! मुझको दिखा कि तू मुर्दों को कैसे जिलाता है। खुदा ने फर्माया क्या तुमको इसका यकीन नहीं। अर्ज किया, क्यों नहीं। मगर मैं अपने दिल की तसल्ली चाहता हूँ। फर्माया तो चार पक्षी लो और उनको अपने पास मंगाओ, फिर एक-एक पहाड़ी पर उनका एक-एक टुकड़ा रख दो फिर उनको बुलाओ तो वह (आपसे आप) तुम्हारे पास दौड़े चले आवेंगे…'।२६०। सूरे बकर पा० ३।

'उस दिन (कयामत के दिन) जिसमें कुछ शक नहीं कैसी गत बनेगी जब कि हम उनको जमा करेंगे और हर शख्स को जैसा उसने (दुनियां में) किया है पूरा २ भर दिया जायगा और लोगों पर जुल्म नहीं होगा' ।२५।

'और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय किसी और दीन को तलाश करें तो खुदा के यहां वह दीन कबूल नहीं होगा और वह कयामत में नुकसान पाने वालों में से होगा।'

।८५। सू० अलइमरान पा० ३।

'क्या हल होगा जब हम हर गिरोह के गवाह को बुलायेंगे और हम तुझे (ऐ मुहम्मद) इन पर गवाह तलब करेंगे।'

।कु० सूरे निसा पा० ५ आ० ४१।

'कयामत के दिन वह तुमको जहर इकट्ठा करेगा···'

।२७। कु० सू० निसा पा० ५।

'सुनो तुमने दुनियां की जिन्दगी में उनकी तरफ होकर झगड़ा कर लिया तो कयामत के दिन उनकी तरफ से अल्लाह के साथ कौन झगड़ा करेगा और कौन उनका वकील होगा।'

।१०६। कु० सू० निसा पारा ५।

'मुर्दों को खुदा जिला उठायेगा फिर उसी की तरफ जायेंगे।'

।३६। कु० सू० अनआम पा० ७।

'जिस दिन सूर (नरसिंहा) फूका जायगा, उसी की हुकूमत होगी···'।७३। कु० सू० अनआम पा० ७।

'जिसने नेकी की तो उसका दस गुना उसको मिलेगा और जिसने बदी की तो वह उसके बराबर सजा भुगतेगा और उन पर जुल्म नहीं होगा'।१६०। कु० सू० अनआम पा० ८।

'तुम से कयामत के बारे में पूछते हैं कि कहीं उसका ठिकाना भी है। तुम जवाब दो कि उसका इल्म तो मेरे परवरदिगार को है। बस वही उसको उसके वक्त पर ला दिखावेगा। वह एक बड़ी भारी घटना आसमान और जमीन में होगी, कयामत अचानक तुम्हारे सामने आवेगी।'

।१८७। कु० सू० आराफ पा० ६।

'जो लोग जमा करते हैं और खुदा की राह में खर्च नहीं करते तो उनको दुःखदाई सजा की खबर सुना दो'।३४। जबकि वह सोना चांदी दोजख की आग में तपाया जायगा फिर उससे उनकी करवटें, उनकी पीठें माथे दागे जायेंगे···।'

।३५। कु० सू० तौबा पा० १०।

'कयामत का दिन वह होगा जब आदमी जमा किये जावेंगे और वह दिन देखने का है ।१०३। हमने उसमें एक ठहराये हुए समय तक देर की है ।१०४। जब वह दिन आवेगा तो खुदा के हुक्म के बिना कोई शख्स बात नहीं कर सकेगा । कोई अभागे कोई भाग्यवान होंगे ।१०५। जो अभागे हैं वे नरक में होंगे···। ।१०६। जब तक आसमान व जमीन है बराबर हमेशा उसी में रहेंगे' ।१०८। कु० सू० हूद पा० १२ ॥

'खुदा जालिमों को उस दिन तक की फुर्सत देता है जबकि आंखें फटी की फटी रह जायेंगी ।४२। अपने सिर को उठाये दौड़ते फिरेंगे, निगाह उनकी तरफ न करेंगे और उनके दिल उड़ जायेंगे ।४३। जब जमीन बदल कर दूसरी तरह की जमीन करदी जायेगी । और आसमान और सब लोग एक खुदा जब्बर्दस्त के सामने निकल कर खड़े होंगे ।४८। ऐ पैगम्बर तुम उसी दिन गुनहगारों को जंजीरों में जकड़े हुए देखोगे । ४९ । गन्धक के उनके कुर्त्ते होंगे और उनके मुंहों को आग ढांक लेती होगी ।५०। कु० सूरे इब्राहीम पा० १३ ॥

'लोगों की कार गुजारियों का रजिस्टर रखा जायगा तो (ऐ पैगम्बर) तुम गुनहगारों को देखोगे कि जो कुछ रजिस्टर में है उससे डर रहे हैं और कहते जाते हैं कि हाय हमारा दुर्भाग्य यह कैसा रजिस्टर है और जो कुछ इन लोगों ने किया था या कोई छोटी या बड़ी बात ऐसी नहीं जो उसमें न लिखी हो मौजूद पावेंगे और तुम्हारा परवर्दिगार किसी पर बेइन्साफी नहीं करेगा' ।।४९।। कु० सू० कहफ पा० १५ ।।

'तेरे परवर्दिगार की कसम हम उन्हें शैतानों के साथ इकट्ठा करेंगे और दोजख के इर्द गिर्द घुटनों ने बल बैठायेंगे ।'

।। कु० सू० मरियम पा० १६ अ० ६८ ।।

'जिस दिन नरसिंहा फूंका जायगा और हम उस दिन अपराधियों को जमा करेंगे, उनकी आंखें नीली होंगी।'

॥१०२॥ कु० सू० ताहा पा० १६ ॥

कयामत के दिन परवदिगार पहाड़ों को उड़ा देगा।१०५। और जमीन को चौरस मैदान कर छोड़ेगा।१०६। जिसमें तू न तो कहीं मोड़ देखेगा और न कहीं ऊंचा नीचा।१०७। उस दिन वे सब लोग बिना इधर उधर के मुड़े उसके पीछे हो जावेंगे और खुदा के आगे सबकी आवाजें बैठ जावेंगी।'

॥१०८॥ कु० सू० ताहा पा० १६ ॥

'और अफसोस तुम अपराधियों को देखो कि अपने परवदिगार के सामने सिर झुकाये खड़े हैं (और फरियाद कर रहे हैं) ऐ हमारे परवदिगार! हमारी आंख और हमारे कान खुले और हमें फिर (दुनियां में) भेज कि हम भलाई करें, हमको विश्वास आया।१२। हम चाहते तो हर आदमी को उसकी राह की सूझ देते, मगर हमारी बात पूरी होती है कि जिन्न और आदमी सबसे हम नरक को भर देंगे।'

॥१३॥ कु० सू० सज्दह पा० २१ ॥

'और कयामत के दिन (लोगों के कामों की तौल के लिए) हम सच्ची तराजू लगा देंगे तो किसी पर जरा भी जुल्म न होगा और मगर राई के दाने के बराबर भी अमल होगा तो हम उसे (तोलने को) लावेंगे। और हिसाब लेने को हम काफी हैं।' ।४। कु० सू० अम्बिया पा० १७॥

'कयामत का भूचाल एक बड़ी चीज है।१। जिस दिन यह तुम्हारे सामने आ मौजूद होगी, हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चों को भूल जावेगी और गर्भवती अपना गर्भ गिरा

देगी और लोग नशे में दिखाई देंगे। हालांकि वह मतवाले नहीं बल्कि खुदा की सजा बड़ी सख्त है।'

।२। कु० सू० हज्ज पा० १७।।

'जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में कागज लपेटते हैं। जिस तरह हमने पहिले पैदायश शुरू की हम उसे दुहरावेंगे, वायदा हमारे जिम्मा हैं हमें करना है।'

।१०४। कु० सू० अम्बिया पा० १७।।

'और हम किसी आदमी की ताकत से बढ़कर बोझ नहीं डालते और हमारे यहां (लोगों के काम का) रजिस्टर है जो ठीक हाल बताता है और उन पर अन्याय न होगा।'

।६२। कु० सू० मोमिनून पा० १८।।

जब इनकी जवानें और इनके हाथ और इनके पांव इनके कामों की जो कुछ वे करते थे गवाही देंगे।२४। उस दिन अल्लाह इनका पूरा २ बदला देगा···'।२५। सूरे नूर पा० १८।।

'अगर हम चाहें तो···इन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें।'

।९। कु० सू० सवा पा० २२।।

'और सूर फूंका जायगा तो एक दम से कब्रों से (निकल कर) अपने परवर्दिगार की तरफ चल खड़े होंगे।५१। कयामत बस एक जोर की आवाज होगी तो सब लोग एक दम से हमारे सामने पकड़ आवेंगे'।कु० सू० यासीन पा० २३।

'आज हम इनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और जैसे काम यह लोग कर रहे थे इनके हाथ हमको बता देंगे। और इनके पांव गवाही देंगे'।६५। कु० सू० यासीन पा० २३।।

'जब सजा देखी तब कहने लगा कि किसी तरह मुझको (दुनियाँ में) फिर जाना हो तो मैं नेकों में हो जाऊं।५२। हालांकि कयामत के दिन सारी जमीन उसकी मुट्ठी में होगी

और सब आसमान लिपटे हुए उसके दांये हाथ में होंगे···।६७। और सूर फूंका जायेगा तो जो आसमानों में हैं और जमीन में हैं, बेहोश हो जायेंगे, मगर जिसे खुदा चाहे (बेहोश न होंगे) फिर दुबारा सूर फूंका जायेगा फिर वे खड़े हो जायेंगे और देखने लगेंगे।६८। और जमीन अपने परवर्दिगार के नूर से चमक उठेगी और किताबें रखदी जायेगी और उनमें पैगम्बर गवाह हाजिर किये जायंगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जायगा और उन पर जुल्म न होगा।६९। और जिसने जैसे काम किये हैं सबको पूरा २ बदला मिलेगा···।७०। और काफिर नरक की तरफ टोलियां बना कर हांके जायंगे यहां तक कि जब नरक के पास पहुँचेंगे तो उसके दरबाजे खोल दिये जायंगे और नरक का दरोगा उनसे कहेगा कि क्या पैगम्बर तुम्हारे पास नहीं आये थे कि वह परवर्दिगार की आयतें पढ़ कर तुमको सुनाते ?···।७१। जो लोग परवर्दिगार से डरते थे उनकी टोलियां बनाकर जन्नत की ओर ले जाई जायेंगी। यहाँ तक कि जन्नत के पास पहंचेंगे और उसके दरवाजे खुले होंगे और जन्नत के कार्यकर्ता उनसे सलाम करके कहेंगे कि तुम मजे में रहे। जन्नत में दाखिल हो।७३। और उस दिन तू देखेगा कि फरिश्ते परवर्दिगार की खूबी बयान करते तख्त को आस पास घेरे हैं ··।७५। कु० सू० जुमर पा० २४।

'यहां तक कि (जब सब) नरक के पास जमा होंगे तो जैसे २ काम यह लोग करते रहे हैं उनके कान और उनकी आंखें और उनके चमड़े उनके मुकाबिले गवाही देंगे।२०। और यह लोग अपनी खाल से पूछेंगे कि तुमने हमारे खिलाफ क्यों गवाही दी, वह जवाब देगी कि जिस खुदाने हर चीज को बोलने की ताकत दी उसीने हमसे बुलवा लिया।'

।२१। कु० सू० हामीद सज्दह पा० २४।

'हम फरिश्तों को हुक्म देंगे कि उनको घसीटते हुए दोजख के बीचों बीच ले जाओ' ।४७। कु० सू० दुःखान पा० २५।।

'यह हमारा दफ्तर है तुम्हारे काम ठीक बताता है। जो कुछ तुम करते थे हम उनको लिखवाते जाते हैं।'

।२९ कु० सू० जासियह पा० २५।।

'जिस दिन मुर्दों से जमीन फट जायगी वे दौड़ेंगे। यह जमा कर लेना हमको सहल है ।४३। कु० सू० काफ पा० २६।।

'उस दिन दोजख से पूछोगे कि तू भर चुका। वह कहेगा कि क्या कुछ और भी है ।२९। बहिश्त परहेजगारों के पास लाया जायगा, दूर नहीं' ।३०। कु० सू० काफ पा० २६।

'जिस दिन आसमान लहरें भरने लगे ।९। और पहाड़ चलने लगेंगे। ।१०। कु० सू० तूर पा० २७।।

'फिर जब सूर फूंका जायगा ।१३। और जमीन और पहाड़ उठाये जायंगे और एक दम तोड़े जायंगे ।१४। और आसमान फट जायगा और वह उस दिन सुस्त हो जायगा ।१६। और फरिश्ते किनारों पर होंगे और उस दिन तुम्हारे परवर्दिगार के तख्त को आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाये होंगे ।१७। उस दिन तुम सामने लाये जाओगे और तुम्हारी बात छिपी न रहेंगी ।१८। सो जिसकी किताब उसके दाहिने हाथ में दी जायेगी वह कहेगा लो मेरा कर्म लेखा पढ़ो ।१९। तो वह खुशी की जिन्दगी में होगा ।२१। और वह शख्स जिसको उसकी किताब बांये हाथ में दी जायेगी, वह कहेगा, अफसोस मुझको मेरा कर्म लेखा न मिला होता ।२५। उसको पकड़ो और नरक में धकेल दो' ।३१। और इसे सत्तर हाथ लम्बी जंजीर से बांध दो।'

।३२। कु० सू० हाक्का पा० २९।।

'उस दिन आसमान पिघले तांबे की तरह हो जावेगा ।८।

और पहाड़ जैसे रंगी हुई ऊन ।९। कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा' ।१०। कु० सू० मआरिज पा० २९।।

'जिस दिन जमीन और पहाड़ कांपने लगेंगे और पहाड़ भुरभुरे टीले हो जायगे ।१४। और आसमान फट जायगा और उस (खुदा) का वायदा हो जावेगा ।'

।१८। कु० सू० मुज्जम्मिल पा० २९।।

'तो जब आँखें पथरा जायंगी ।७। और चन्द्रमा को ग्रहण लग जावेगा ।८। और सूर्य और चन्द्रमा जमा किये जायेंगे ।'

।९। कु० सू० कयामत पा० २९।

'जब सितारे धीमे पड़ जावें ।८। और जब आसमान फट जावे ।९। और जब पहाड़ उड़ाये जांय ।१०। और जब पैगम्बर नियत समय पर हाजिर किये जायं ।'

।११। कु० सू० मुर्सलत पा० २९।।

'उस दिन सूर फूँका जायगा और तुम लोग गिरोह के गिरोह चले आओगे' ।१८। और आसमान फट कर दरवाजे दरवाजे हो जांयगे' ।१९। 'और पहाड़ चलाये जायंगे वह धूल होकर रह जायंगे' ।२०। 'और हमने हर चीज को लिख रखा है' ।२९। तो (अपने किये का) मजा चखो और हम तो तुम्हारे लिये सजा ही बढ़ाते जांयगे' ।३०। कु० सू० नवा पा० ३०।।

'जिस दिन जमीन काँप उठेगी' ६। 'और भूकम्प के बाद भूकम्प आयेंगे' ।७। उस दिन लोगों के दिल धड़क रहे होंगे । ।८। उनकी आंखें झुकी होंगी ।९। कु० सू– नाजियात पा० ३०।।

'जिस वक्त सूरज लपेट लिया जाय' ।१। 'और जिस वक्त तारे झड़ पड़ें' ।२। 'और जिस वक्त पहाड़ चलाये जायं' ।३। और जिस वक्त १० महीने की गाभिन उटनियाँ छुटी छुटी फिरें' ।४। 'और जिस वक्त जंगली जानवर आ मरे' ।५। और

जिस वक्त दरिया पाट दिये जाये' ।६। और जिस वक्त रूहों (जीवों) को मिलाया जाय' ।७। और जिस वक्त लड़की से जो जिन्दा कब्र में रख दी गई थी पूछा जाय' ।८। कि किस कूसूर के बदले में मारी गई ।९। और जिस वक्त कर्मों का लेखा खोला जाय ।१०। और जिस वक्त आसमान की खाल खींची जाय ।११। और जिस वक्त दोजख की आग दहकाई जाय ।१२। और जिस वक्त बहिश्त को नजदीक लाया जाय ।१३। हर शख्स जान लेगा जो कुछ वह (आखिरत) लाया होगा ।'

।१४। कु० सू० तकवीर पा० ३०।।

'जब कि आसमान फट जाये ।१। जब सितारे झड़ पड़ें ।२। जब नदियाँ-बह चलें ।३। जब कब्रें उखाड़ दी जायें ।'

।४। कु० सूरे इन्फितार पा० ३०।।

'कुकर्मी लोगों के कर्म रोजनामचा के रजिस्टर और कैदियों के रजिस्टर में हैं' (७) 'और (हे पैगम्बर) तू क्या समझे कि कैदियों का रस्टिर क्या चीज है' (८) वह किताब है (जिसकी खाना पूरी होती रहती है ।९। कु० सू० वतफीर पा ३०।।

जब आसमान फट जायगा' (१) 'और अपने परवर्दिगार की बात सुनेगा और यह उसका फर्ज ही है' (२) और जब जमीन तान दी जायगी ' (३) 'और जो उसमें है बाहर डाल देगी और खाली हो जायगी' (४) 'और अपने परवर्दिगार की बात सुनेगी यह तो उसका फर्ज ही है' (५) 'तो जिसका कर्म लेखा दाहिने हाथ में दिया जायगा' (७) 'तो उससे आसानी से हिसाब लिया जायगा' (८) 'और वह खुश खुश अपने बाल बच्चों में वापिस जायगा' (९) और जिसको उसका कर्म लेखा उसकी पीठ के पीछे से दिया जायगा (१०) वह मौन मनावेगा (११) और जहन्नुम में जायगा ।'

।१२। कु० सू० इन्शिकाक पा० ३०।

'.....जब जमीन मारे धक्के के चकना चूर हो जाय।'

कु० सू० फजर पा ३०।

'जब जमीन अपने भूचाल से हिलाई जावे' (१) और जमीन अपना बोझ निकाल डाले' (२) और मनुष्य बोल उठे कि उसे क्या हो गया (३) उसी दिन वह अपनी खबरें सुनायगी (४) इसलिये कि तेरा परवर्दिगार उसको हुक्म भेजेगा।'

।५। कु० सू० जिल जाल पा० ३०।

'जिस दिन आदमी बिखरे हुए पतंगों की तरह होंगे। और पहाड़ धुनी हुई ऊन के मानिन्द हो जायंगे।'

कु० सू० कारिअह पा० ३०।

'यहां तक कि जब सबके सब नरक में जमा होंगे तो उनमें से पिछला गिरोह अपने से पहिले गिरोह के हक में बुरी दुआ करेगा कि ऐ हमारे परवर्दिगार! इन्हीं लोगों ने हमको भटका दिया तू इनको दोजख की दूनी सजा दे। कहेगा कि हर एक को दूनी सजा, मगर तुमको मालूम नहीं।'

।३८ कु० सू० आराफ पा० ८।

'और वही है जो अपनी दया के आगे खुश खबरी देने को हवायें भेजा करता है, यहां तक कि वह पानी के भरे बादल उठा लाती हैं, तो हम किसी मुर्दा बस्ती की तरफ उस बादल को हाँक देते हैं, फिर बादल से पानी बरसाते हैं फिर पानी से हर तरह के फल निकलते हैं, इसी तरह हम (कयामत के दिन) मुर्दों को निकाल खड़ा करेंगे। शायद तुम ध्यान दो'

।५७। कु० सू० आराफ पा० ८।

'ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग करे और नापाक को एक दूसरे के ऊपर रखकर उन सबका ढेर लगाये, फिर उस ढेर को दोजख में झोंक दे। यही लोग हैं जो घाटे में हैं।'

।३७। कु० सू० अन्फाल पा० १०।

'जिसने नेकी की तो उसका दस गुना उसको मिलेगा और जिसने बदी की तो वह उसके बराबर सजा भुगतेगा और उन पर जुल्म नहीं होगा' ।कु० सू० अनआम पा० ।८।

और जिन लोगों को खुदा ने अपनी कृपा से दिया है और वह उसमें कंजूसी करते हैं, वह इसको अपने हक में भला समझें बल्कि वह उनके हक में खरावी है, जिस (माल) की कंजूसी करते हैं कयामत के दिन के करीब उसकी तौक (हंसली) बनाकर उनके गले में पहिनाई जायगी··· ।'

।१८१। कु० सू० अलइमरान पा० ४।

'और हर गिरोह का एक पैगम्बर है तो जब वह अपने गिरोह में आता है तो उसके गिरोह में न्याय के साथ फैसला होता है और लोगों पर जुल्म नहीं होता है ।४७।

'फिर (कयामत के दिन) बे हुक्म लोगों को हुक्म होगा कि अब हमेशा की सजा चखो, तुमको सजा दी जा रही है, (यही) तुम्हारी कमाई का बदला है ।'

।५२। कु० सू० यूनिस पा० ११।

'जब हम हर एक गिरोह में उन्हीं में का एक गवाह (पैगम्बर) उनके सामने (कयामत के दिन) खड़ा करेंगे ।

।२९। कु० सू० नहल पा० १४।

'···आंख कान और दिल इन सब से पूछ ताछ होती है (३६) बड़ी बढ़ती तो उस दिन की है जब हम हर एक गिरोह को उनके पेशवाओं समेत बुलायेंगे, तो जिनका कारनामों का लेखा उनके हाथ में दिया जायगा, वह अपने लेखों को पढ़ने लगेंगे और उन पर रत्ती बराबर भी अन्याय न होगा ।'

।७१। कु० सू० बनीइसराइल पा० १५।

'जो कुछ यह बकता है हम लिख लेते हैं और इसके हक में सजा बढ़ाते चले जायंगे' ।७९। कु० सू० मरियम पा० १६।।

'और जिसने हमारी याद से मुंह मोड़ा तो उसकी जिन्दगी तंगी में होगी और कयामत के दिन हम उसको अन्धा उठावेंगे (१२४) वह कहेगा तूने मुझको अन्धा क्यों उठाया मैं तो देखता था (१२५) (खुदा) फरमायेगा ऐसे ही हमारी आयतें तेरे पास आईं मगर तूने उनकी कुछ खबर न की और इसी तरह आज तेरी खबर ली जायगी ।१२६। कु० सू० ताहा पा० १७।

'असली बात यह है कि ये लोग कयामत को झूठा समझते हैं और जो लोग कयामत को झूठा समझे हमने उनके लिये नरक तैयार कर रखा है ।११। कु० सू० फुर्कान पा० १८।

'और इब्लीस का सब लश्कर औंधे मुंह नरक में धकेल दिया जायगा' ।९५। कु०सू० शुअरा पा० १९।

'और जिस दिन नरसिंहा (सूर) फूंका जायगा तो जो आसमान में है और जो जमीन में हैं सब कांप जांयगे, मगर जिसको खुदा चाहे वही धैर्य से रहेगा, और सब उसके सामने झुके हाजिर होंगे (८७) और तू पहाड़ों को देखकर ख्याल करता है कि जमे हुए हैं। मगर (कयामत के दिन) बादल की तरह उड़े उड़े फिरेंगे। (यह भी) अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज को खूब पुख्ता तौर पर बनाया है।'

।८८। कु० सू० नम्ल पा० २०।

'और हर एक गिरोह में हम एक साक्षी (यानी पैगम्बर) को अलग करेंगे, फिर कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो··· ।'

।७५। कु० सू० कसस पा० २०।

'पापियों को उनकी सूरत से पहिचान लिया जायगा फिर पुट्ठे और पेट पकड़े जांयगे और उनको खींचकर नरक में ले जांयगे' ।४१। कु० सू० रहमान पा० २७।

'जब जमीन बड़े जोर से हिलने लगेगी (५) और पहाड़ के टुकड़े टुकड़े हो जांयगे (६) फिर उड़ती मिट्टी हो जांयगे (७)

तुम्हारी तीन किस्में हो जायेंगी।' (दाहिने, बांये और अगाड़ी वाले)

'हालाँकि तुम पर चौकीदार हैं (१०) अलीकदर लिखने वाले (११) जो कुछ तुम करते हो उनको मालूम रहता है।'

।१२। कु० सू० इन्फितार पा० ३०।।

कुकर्मी लोगों के कर्म रोजनामचा और कैदियों के रजिस्टर में है (७) वह एक किताब है जिसकी खानापूरी होती रहती है (९) अच्छे मनुष्यों का कर्म लेखा बड़े रुतवे वाले लोगों के रजिस्टर में है (१८) वह एक किताब है (जिसकी खानापूरी होती रहती है) (२०) फ़रिश्ते जो नजदीक हैं उस पर तैनात हैं।२१। कु० सू० ततफीफ पा० ३०।।

'कोई मनुष्य नहीं जिस पर चौकीदार न हो।'

।४ कु० सू० तारिक पा० ३०।।

'और यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवर्दिगार की आयतों को और उसके सामने हाजिर होने को न माना तो उन के काम अकारथ हो गये तो कयामत के दिन हम इनकी तौल न खड़ी करेंगे (१०५) यह नरक उनका बदला है कि उन्होंने इन्कार किया और हमारी आयतों और हमारे पैगम्बरों की हँसी उड़ाई।१०६। कु० सू० कहफ पा० १६।।

'और जब वायदा (कयामत) इन लोगों पर पूरा होगा, तो हम जमीन से इनके लिये एक जानवर निकालेंगे, वह इनसे बातें करेगा कि लोग हमारी बातों का विश्वास नहीं रखते थे।।८२। कु० सू० नम्ल पा० २०।।

समीक्षा– कुरान शरीफ में कयामत का वर्णन जहां मनोजक है वहां वह बुद्धि के भी विरुद्ध तथा अवैज्ञानिक भी है। उसमें अनेक बातें परस्पर विरुद्ध भी लिखी गई हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि आज का पढ़ा लिखा इन्सान अपनी आंख पर पट्टी बांध कर और दिमाग पर ताला लगाकर कैसे

इन बातों पर विश्वास कर लेता है, जबकि साधारण पढ़ा लिखा विद्यार्थी भी इन गल्पों को सही मानने को तैयार नहीं हो सकता है।

कयामत के दिन खुदा आसमान को कागज की तरह अपने दायें हाथ में कैसे लपेट लेगा जबकि वह कोई चीज ही नहीं है। आसमान फट कैसे जावेगा, और वह खुदा के सामने कैसे निकल कर खड़ा हो सकेगा यह नहीं बताया गया। क्या शून्यता (पोल) को भी फाड़ा या लपेटा जा सकता है और क्या पोल निकलकर खड़ी या बैठी भी हो सकती है। जो कुछ चीज ही नहीं है उसके लिये खड़ा होना, लपेटना, या फटना बताना, कुबड्डों की सी बातें नहीं तो क्या हैं।

कयामत के दिन पहाड़ रुई की तरह आसमान में कैसे उड़ते फिरेंगे और जमीन कहां चली जावेगी, सूरज, चांद किस में कैसे लपेट लिये जावेंगे यह भी नहीं बताया गया। दरिया बह चलेंगे और दरिया पाट दिये जावेंगे, यह परस्पर विरुद्ध बातें क्यों लिखदा गई है? जो पट जावेंगे वे फिर बह कैसे सकेंगे? जब पहाड़ जर्रा जर्रा हो जावेंगे तो फिर पहाड़ रुई की तरह कैसे उड़ते फिरेंगे? जब आसमान कोई चोज ही नहीं है, तो फिर उसकी तराजू कैसे बन सकेगी और उस पर लोगों के कर्म कैसे तौले जावेंगे? जब कर्म कोई ठोस चोज ही नहीं होते हैं तो उनकी तौल इतनी बड़ी भारी तराजू पर कैसे होगी और उस तराजू के बाट मन सेर छटांक, किलो, पौण्ड, लिटर आदि किस प्रणाली के होंगे। तौलने को खुदा खुद ही बैठेगा या कोई उसका फरिश्ता तौलेगा? सभी लोगों के कर्म अलग २ तौल जावेंगे तो कितने करोड़ वर्षों में यह तौल का काम खतम होगा, क्योंकि जपोन को लगभग दो अरब वर्षों की पिछली

उम्र में तथा आगे भी लगभग २॥ अरब वर्षों की जिन्दगी में इतने आदमी पैदा हो चुके होंगे और आगे होंगे जिनकी शुमार भी न हो सकेगी ? इतने आदमियों को तो जमीन पर खड़े होने को भी जगह नहीं होगी तो फिर फैसला कहां पर होगा। हर आदमी को बांधने को ७०-७० गज लम्बी जंजीरें किस कारखाने से बनकर आवेंगी और इतनी ही बड़ी जंजीरों की क्या जरूरत होगी। दो गज की रस्सी से भी तो एक आदमी बांधा जा सकेगा। दोजख कितनी लम्बी चौड़ी होगी और उसमें कितने आदमी आ सकेंगे साथ ही उसमें कितने दरोगा, छोटे थानेदार और सिपाही इन्तजाम को रखे जावेंगे यह भी क्यों नहीं बताया गया। क्या खुदा स्वयं वहां इन्तजाम नहीं करेगा ? क्या उसके बिना दरोगाओं की मदद के काम नहीं चलेगा ? अगर सारे कैदी बिगड़ कर बलवा कर दें तो उनको दबाने को फौज कहां से आवेगी। क्योंकि जिन्न और फरिश्ते भी तो दोजख के लोगों के साथ उसी में बन्द होंगे। तराजू पर दोजखी लोगों के कर्मों को भी क्यों नहीं तौला जावेगा ? क्योंकि उनमें भी तो कम पापी और बड़े भारी गुनहगार होंगे। सबको एक सी सजा देना भी तो खुदा का जुल्म होगा ? तब खुदा का यह वायदा कि किसी पर भी रत्ती भर जुल्म नहीं होगा झूठा हो जावेगा ?

इसी तरह बहिश्त में जाने वालों के भी कर्मों के दर्जे होंगे और उनमें सभी को एक जैसा आराम बहिश्त में मिलेगा, यह भी बेइन्साफी की बात होगी और दूसरों को शिकायत का मौका मिलेगा। सभी दोजखी लोगों के कपड़े गन्धक के होंगे तथा दोजख की तेज आग में वे फौरन जलकर राख हो जावेंगे तब फिर उनको खुदा नये कौन से कपड़े पहिनावेगा ? वहां

मर्द और औरतें, जवान लड़के लड़कियां मादर जात नंगे घूमा करेंगे तो क्या इससे वहां व्यभिचार नहीं फैलेगा ? उस वक्त इन्तजाम कौन व कैसे करेगा ?

हर शख्स का कर्मों का रजिस्टर तैयार होगा और अगर रजिस्टर गुम हो जावे तो फिर फैसला कैसे होगा ? इन रजिस्टों व कर्मलेखा पत्रों का स्टाक खुदा कहां पर रखता है ? और इन सबको तैयार करने की भी क्या जरूरत है ? क्या खुदा का जहन (याद्दाश्त) इतनी कमजोर है कि वह हर मनुष्य के कर्म भी कयामत तक याद नहीं रख सकता है ? हर गिरोह के गवाह और वकील वहां अपने २ मुवक्किलों की ओर से पैरोकारी करने को खड़े होंगे तो उनका महन्ताना और शुक्राना भी खुदा ने तैकर रखा है या मुवक्किलों को खुद तैकरना होगा। और यदि किसी का कोई वकील न हो तो क्या खुदा उसे बिना फीस का वकील अपनी ओर से देगा ? खुदा की अदालत का स्थान व दायरा कितना बड़ा होगा ? खुदा अपने इन्साफ के तख्त पर जब बैठेगा तो किस किस्म की पोशाक पहिने होगा ? और वह किस कम्पनी की बनी हुई होगी ?

एक बात और समझ में नहीं आई कि जब हर इन्सान के शरीर के हिस्से हाथ, आंख, नाक, चमड़ा पेट, पैर, मूत्रेन्द्रियां, गुदा, भग आदि अपने कर्मों को खुद ही ब्यान करेंगे यानी इकबाली होंगे और कर्मों के अनुसार ही सजा या इनाम मिलेगा तो फिर वकीलों और गवाहों की भी क्या जरूरत पड़ेगी। इकबाली मुल्जिम पर तो दफा लगाकर मजिस्ट्रेट खुद ही सजा का हुक्म सुना देता है। गवाहों या वकीलों की तो वहां जरूरत पड़ती है जहां मुल्जिम का जुर्म साबित करना हो और मुल्जिम के छूटने की गुञ्जायश हो। सो छूटने की तो गुञ्जायश

कयामत के दिन होगी ही नहीं। तब फिर यह ढोंग और तमाशा खुदा क्यों करेगा ?

कयामत के दिन अल्लाह एक लम्बे चौड़े तख्त पर बैठा होगा। फरिश्ते उसे घेरे खड़े होंगे। बड़े २ रजिस्टर और किताबें वहां पेश किये जावेंगे। पैगम्बर लोग अपने २ गिरोहों की वकालात करते होंगे। अल्लाह मियां बैठे २ सुनते होंगे और हुक्म देते होंगे। हर शख्स के हाथों में उसका कर्म लखा दिया जावेगा (जन्नती लोगों के दायें हाथ में और दोजखी लोगों के बायें हाथों में)। अल्लाहमियां का बड़ा भारी दफ्तर है जहां सब कागज सुरक्षित रखे जाते हैं। हर काम अदालती तरीके पर होता है। यह सारी बातें बताती हैं कि कुरानी खुदा भी कोई मामूली इन्सान जैसा ही आदमी है। वह हर बात के लिये मोहताज है। फरिश्ते–किताबें–कर्मलेखा पत्र, पैगम्बर वगैर सभी उसकी मदद करते हैं। वरना अकेला तो बिचारा कुछ भी नहीं कर सकता है। उसे तो बिना दोजख से पूछे कि 'तू भर चुकी है या नहीं' यह भी नहीं पता चल पाता है कि उसमें कितनी जगह बाकी है। खुदा का तख्त और खुदा का वजन इतना भारी है कि उसे आठ फरिश्ते बमुश्किल उठा पाते हैं। दो-चार फरिश्तों के बस की बात उसे उठाना नहीं है।

कयामत को सूर्य और चन्द्रमा को जमा किया जावेगा। पर यह नहीं बताया कि जमीन पर किस जगह इनको रखा जावेगा और क्यों इकट्ठा किया जावेगा ? यह बात भी बताना जरूरी था। सूरज को किसमें और कैसे लपेटा जावेगा तथा तारे झड़कर कहां पर जमा होंगे, यह भी नहीं बताया गया। ये गप्पें ऐसी हैं कि इनको सुनकर बड़े २ मशहूर उपन्यास लेखक भी शरमा जावेंगे। विद्यार्थी हंसेंगे। पढ़े लिखे लोगों

को ऐसी किताब को पढ़ने से अरुचि पैदा हो जावेगी। जिसमें एक भी अक्ल की बात नहीं है।

'जब आसमान फट जावेगा और कयामत के दिन परवर्दिगार की बात सुनेगा' यह शब्द बालकों की सी बातें नहीं हैं तो क्या है। शून्य आकाश की बातें सुनाना व फटना कैसे सम्भव होगा। जमीन क्या कोई चादरा है जो तान दी जावेगी। जब जमीन में से सब कुछ निकल पड़ेगा अर्थात् अलग २ हो जावेगा तो जमीन नाम की कोई चीज ही खुदा की बात सुनेने को बाकी नहीं रहेगी। और जड़ (बेजान) जमीन खुदा की बात भी कैसे सुनेगी। मरने के बाद जब सारे रिश्ते खत्म हो जाते हैं तो कयामत के दिन सबके बाल बच्चे और बीबियाँ कैसे मिलेंगी। क्या तब तक बाल बच्चे बड़े होकर पूरे जवां मर्द नहीं हो जायेंगे? कयामत के दिन जमीन के अन्दर से एक जानवर कौनसा कैसे और क्यों निकाला जायगा और उसकी शक्ल सूरत कैसी होगी और वह क्यों लोगों से सवाल जवाव करेगा, यह नहीं बताया गया। क्योंकि जिब्रील फरिश्ते द्वारा तीन बार सूर (नरसिंहा) फूंके जाने पर सारे मुर्दे खुद उठकर खुदा की तरफ भागते चले जावेंगे और वहां खुदा की कचहरी लगी ही होगी, हर गिरोह के पैगम्बर वहां चोगा पहिने विकालत को तैयार खड़े ही होंगे तो फिर यह मनहूस जानवर किस मर्ज की दवा बनेगा, यह भेद भी कुरान ने क्यों नहीं खोल दिया है?

कुरान शरीफ बनाने वाले का उद्देश्य केवल लोगों को अपने गिरोह में कयामत दोजख और बहिश्त की कहानियां

गढ़ २ कर सुनाकर भर्ती करने का था। इसीलिये उसने लोगों को डर दिखाया है कि जो लोग पैगम्बर मुहम्मद, कयामत, कुरान पर ईमान ले आवेंगे उनको बहिश्त मिलेगी, जो नहीं मानेंगे उनको दोजख मिलेगी। मुहम्मद साहब उनकी पैरोकारी नहीं करेंगे। कुरान बनाने वाले को न तो भूगोल-खगोल तथा विद्या की बातों की अधिक जानकारी थी और न उसे ईश्वर जीवात्मा, मोक्ष, कर्मफल, पुनर्जन्म आदि का ज्ञान था। इस लिये जैसी मन में आई वे तुकी बातें खुदा की तरफ से शायरी करके कुरान शरीफ के नाम से संग्रह करके भोलेभाले बे बढे लिखे अरब के लोगों में अपना नया मजहब इस्लाम के नाम से चालू कर दिया था। कुरान को गौर से पढने पर उसका सही स्वरूप खुद व खुद सामने आ जाता है। कयामत का जो भी वर्णन कुरान में दिया है वह सभी बुद्धि व तर्क के विरुद्ध होने से बुद्धिमानों की निगाह में सर्वथा हास्यास्पद तथा अमान्य है।'

———

छटा अध्याय

कुरान और बहिश्त

कुरान शरीफ में बहिश्त (स्वर्ग) के बारे में निम्न प्रकार वर्णन मिलता है—

'जो लोग ईमान लाये और उन्होंने काम किये उनको खुश खबरी सुना दो कि उनके लिए बहिश्त के बाग हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जब उनको उनमें का कोई मेवा खाने को दिया जायगा, तो कहेंगे, यह तो हम को पहिले ही मिल चुका है, और उनको एक ही तरह के मेवे खाने को मिला करेंगे और वहां उनके लिये बीबियां पाक साफ होंगी, और वह उनमें सदैव रहेंगे। (कु० सू० बकर पा० १ आ० २५)

'....परवर्दिगार के यहां बाग है, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं (वह) उनमें हमेशा रहेंगे और (बागों के अलावा) पाक साफ बीबियां है और खुदा की खुशी है और अल्लाह बन्दों को देख रहा है' ।कु० सू० आल इमरान पा ३ आ० २५।

'जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये हम उनको ऐसे बागों में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें हमेशा रहेंगे और उनके लिए बीबियाँ साफ सुथरी होंगी और हम उनको घनी छाहों में ले जाकर रखेंगे।'

(कु० सूरे निसा पा० ५ आ० ५७)

'जन्नत और दोजख के बीच एक आड़ होगी यानी आराफ उसके सिरे पर कुछ लोग हैं जो हर एक को उनकी शक्लों से

पहिचानते हैं, जन्नत वालों को पुकार कर सलामालेकुम करेंगे।
(कु० सूरे आराफ पा० ८ आ० ४६)

'ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों से अल्लाह ने बागों का वायदा कर लिया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें हमेशा रहेंगे और सदा रहने वाली जन्नत में अच्छे मकान हैं और खुदा की बड़ी खुशी और यही बड़ी कामयाबी है।' (कु० सूरे तौबा पारा १० आ० ७२)

'जो लोग तकदीर वाले हैं वह जन्नत में होंगे जब तक आसमान और जमीन है बराबर उसी में रहेंगे, मगर जिसको खुदा चाहे खूब देता है' ॥ कु० सू० हूद पारा १२ आ० १०८॥

'परहेज गार (जन्नत के) बागों और चश्मों में होंगे ॥४५॥ सलामती के साथ इतमीनान से इन बागों में आओ ॥४६॥ इनके दिलों में जो रंजिश है उसको निकाल दो, एक दूसरे के आमने सामने तख्तों पर भाई होकर बैठो ॥४६॥ इनको वहां जन्नत में किसी तरह का दुःख न होगा, न यह वहां से निकाले जावेंगे।
॥४७॥ कु० सूरे हिज पा० १४ ॥

'यही लोग हैं जिनके रहने के लिये (जन्नत) बाग हैं। इन लोगों के (मकानों के) नीचे नहरें बह रही होंगी। वहां सोने के कंगन पहिनाये जायेंगे और वह महीन और मोटे रेशमी हरे कपड़े पहिनेंगे (और) वहां तख्तों पर तकिये लगाये बैठेंगे। अच्छा बदला है और क्या खूब आराम है।'
॥ कु० सूरे कहफ़ पा० १५ आ० ३१ ॥

'और यहां (जन्नत में) तो तुमको ऐसा सुख है कि न तो तुम भूखे रहोगे न नंगे ॥११८॥ और यहां तुम न प्यासे होंगे न धूप में रहोगे' ॥११९॥ कु० सूरे ताहा पारा १६॥

'···वहां उनको गहना पहिनाया जायगा। सोने के कंगन और मोती और वहां उनको पोशाक रेशमी होगी।'

॥ कु० सूरे हज्ज पारा १७ आ० २३ ॥

'मेवे और इनको इज्जत होगी ॥४२॥ नियामत के बागों में ॥४३॥ तख्तों पर आमने सामने होंगे ॥४४॥ इनमें साफ शराब का प्याला घुमाया जावेगा ॥४५॥ सफेद रंग पीने वालों को मजा देगो ॥४६॥ न उससे सर घूमते हैं और न उससे बकते हैं ॥४७॥ और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी आंखों की औरतें होंगी ॥४८॥ गोया वह अण्डे छिपे रखे हैं।'

॥४९॥ कु० सूरे सायफात पा० २३ ॥

'रहने को जन्नत के बाग जिनके दरवाजे उनके लिये खुले होंगे ॥५०॥ उनमें तकिया लगाकर बैठेंगे, वहां जन्नत के नौकरों से बहुत से मेवे और शराब मंगावेंगे ॥५१॥ उनके पास नीची नजर वाली (बीबियाँ) हूरें होंगी और हम उम्र होंगी।'

॥५२॥ कु० सूरे साद पा० २३ ॥

तुम और तुम्हारी बीबियां जन्नत में जा दाखिल हों ताकि तुम्हारी इज्जत की जावे।७०। उनपर सोने की रकाबियां और प्यालों की दौड़ चलेगी और जिस चीज को उनका जी चाहे और नजर में भली मालूम हो जन्नत में होगी और तुम हमेशा यहीं रहोगे।७१। कु० सूरे जुफरुख पा० २५।

'परहेजगार चैन की जगह होंगे।५१। बाग और चश्मों में।५२। रेशमी महीन और मोटी पोशाकें पहिने आमने सामने बैठे होंगे।५३। ऐसा ही होगा और बड़ी २ आंखों वाली हूरों से हम उनका ब्याह कर देंगे।५४। वहां मेवे खातिर जमा से मंगवा लेंगे।५५। कु० सूरे दुरवान पा० २४।

'जिस बैकुण्ठ का वायदा परहेजगारों से किया जाता है

उसकी कैफियत यह है कि उसमें ऐसी पानी की नहरें हैं, जिनका स्वाद नहीं बदला और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों को बहुत ही मजेदार मालूम होंगी और साफ शहद की नहरें हैं और उनके लिये वहां हर तरह के मेवे होंगे।'

।१५। कु० सूरे मुहम्मद पा० २६।

तख्तों पर जो बराबर बिछाये गये हैं तकिये लगा कर बैठे हैं और हमने बड़ी २ आंखों वाली हूरें उनको ब्याह दी हैं ।२०। जो लोग ईमान लाये और उनकी औलाद ईमान में उनके पीछे चली, उनकी औलाद को हम उनसे मिला देंगे और उनके कर्मों से कुछ भी न घटायेंगे ।२१। और जिस मेवे और मांस को उनका जी चाहेगा हम उनको देवेंगे ।२२। वह आपस में वहां (शराब के) प्यालों की छीना झपटी करेंगे और उसमें न बकवाद लगेगी न अपराध होगा ।२३। और लड़के उनके पास आयेंगे जायेंगे गोया यत्न से रखे हुए मोती हैं।

।२४। कु० सूरे तूर पा० २७।

'फरशों पर तकिये लगाये बैठे होंगे। तापते और उनके अस्तर होंगे। और दोनों बागों के फल झुके होंगे ।५४। उनमें (पाक हूरें) होंगी जो आंख उठाकर भी नहीं देखेंगी और जन्नत वासियों से पहिले न तो किसी आदमी ने उन पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने ।५६। उनमें अच्छी खूब सूरत औरतें होंगी ।७१। हूरें जो खीमे में बन्द हैं ।७२। जन्नती लोग वहां सब्ज कालीनों और उम्दा २ फर्शों पर तकिये लगाये बैठे होंगे ।७६। दो बागों के सिवाय दो बाग और हैं ।६२। दोनों (बाग) गहरे सकूत हैं' ।६४।

।६४। कु० सूरे रहमान पारा २७।

'जड़ाऊ तख्तों के ऊपर ।१६। आमने सामने तकिये लगाये बैठे होंगे ।१७। उनके पास लौंडे हैं जो हमेशा (लड़के ही) बने

रहेंगे ।१८। उनके पास आब खोरे और लोटे साफ शराब के प्याले लाते और ले जाते होंगे ।१९। मेवे जो उनको अच्छे लगे ।२२। जिस किस्म के पक्षी का मांस उनको अच्छा लगे ।२२। और हूरें बड़ी २ आंखों वाली जैसे छिपे हुए मोती ।२३। हमने हूरों की एक खास किस्म पैदा की है ।३५। फिर इनको क्वारी बनाया है ।३६। प्यारी प्यारी हम उम्र वाली ।३७। यह सब दाहिनी तरफ (जन्नती लोगों) वालों के लिये हैं ।'

।३८। कु० सू० वाकिया पा० २७ ।

'सुकर्मी प्याले पीवेंगे जिनमें कपूर मिला होगा ।५। न वहां धूप ही देखेंगे न ठण्डा ।१३। उन पर चांदी के बर्तनों और गिलासों का दौर चलता होगा कि वह शीशे की तरह होंगे ।१५। शीशे भी चांदी के वह उन्हीं के लिये बने होंगे ।१६। और वहां उनको प्याले पिलाये जायेंगे जिनमें सोंठ मिली होगी ।१७। एक चश्मा होगा जिसका नाम सलसरील होगा ।११। और उनके इर्द गिर्द हमेशा नौजवान लड़के फिरते हैं । जब तू उन्हें देखे बिखरे मोती समझेगा ।१९। उनके ऊपर बारीक हरे रेशम और गाढ़े रेशम के कपड़े हैं और चांदी के कड़े पहिने हैं, और उनका परवर्दिगार उन्हें पाक शराब पिलावेगा ।'

।२१। कु० सूरे दहर पा० २९ ।

'खाने को अंगूर और नौजवान औरतें हम उम्र ।'

। कु० सूरे नवा पारा ३० आ० ३३ ।

'वहां बेहूदी बातें न सुनेंगे ।११। चश्मे बह रहे होंगे ।१२। उसमें ऊँचे तख्त होंगे ।१३। उसमें आब खोरे रखे होंगे ।१४। गाव तकिये एक पंक्ति में लगे होंगे ।१५। और मसनद बिछे होंगे' ।

।१६। कु० सूरे गाशियह पा० ३० ।

'हमेशा रहने के बाग हैं जिनमें वे जायेंगे और उनके बड़ों और उनकी बीबियों और उनकी औलाद जो भला काम करने

वाले होंगे सब उनके साथ जायेंगे। जन्नत के हर दरवाजे से फरिश्ते उनके पास आते हैं।२३। कु० सू० राद पा० १३।

'उनको खालिस शराब मुहर की हुई पिलाई जायगी'।२५। 'जिस (बोतल) की मुहर कस्तूरी की होगी और इच्छा करने वालों को चाहिये कि उसी पर इच्छा करें'।२६। और उसमें तसनीम के पानी की मिलावट होगी।२७। 'तसनीम (बहिश्त का एक) चश्मा है जिसमें से नजदीक (के लोग) पियेंगे'।२८। कु० सू० इन्शकाक पा० ३०।

'वहां बसने को बाग हैं, यह लोग उनमें दाखिल होंगे। वहां उनको सोने के कंगन और मोती का गहना पहनाया जायगा और उनकी पोशाक रेशमी होगी।'

।३३। कु० सू० फातिर पा० २२।

'जन्नत वाले उस दिन मजे में जी बहला रहे होंगे।५५। वह और उनकी बीबियां साये में तकिया लगाये तख्तों पर बैठी होंगी।५६। वहां उनके लिये मेवे होंगे और जो कुछ वे मांगें।५७। कु० सू० यासीन पा० २३।

'उनके लिये जन्नत में खिड़कियों पर खिड़कियां बनी हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी'।२०। कु० सू० जुमर पा०२३।

'उनको खालिस शराब मुहर की हुई पिलाई जायगी।२५। जिस बोतल की मुहर कस्तूरी की होगी और इच्छा करने वालों को चाहिये कि उसकी इच्छा करें।२६। और उस (शराब) में तसनीम के पानी की मिलावट होगी।२७।

समीक्षा—कुरान की कल्पित बहिश्त में रेशमी कपड़े हरे रंग के, शराबें, अय्याशी को खूब सूरत हूरे जो हम उम्र होंगा और हमेशा जवान बनी रहेंगी तथा खूब सूरत लोंडे (गिलमें) जिनकी संख्या हदीसों के अनुसार हर मर्द को ७०-७० हरें व

७२-७२ गिलमें मिलेंगे। यहां पर नहीं बताया कि मर्द तो दोनों से तफरीह करलेंगे, पर जो औरतें बहिश्त में जावेंगी वे उन हूरों और गिलमों का क्या करेंगी ? आखिर मिलेंगे तो उनको भी। अंगूरी शराबें सोंठ मिली हुई बढ़िया गिलासों में खूब पीने को मिलेगी। गोश्त भी मिलेगा। मेवे भी मिलेंग। पानी की नहरें और मेवों के बाग भी मिलेंगे। हर तरह की तफरीह वहां रहेगी उम्दा तख्त बिछे होंगे। सभी ठाठ होंगे। पर यह नहीं बताया कि इतना सब कुछ खाने पीने के बाद बहिश्ती जवान पाखाना पेशाब को कहां जाया करेंगे। अगर बहिश्त में ही जावेंगे तो उसकी सफाई कौन करेगा ? खुदा बन्द खुद करेंगे या मैहतर अथवा सुअर वहां रखे जावेंगे। और फिर मैहतर व सुअर बहिश्त में कैसे जा सकेंगे ? इसके अलावा अगर उन हूरों के हमल रह गये तो बाल बच्चों की पढ़ाई परवरिश उनकी टट्टी पेशाब आदि की सफाई का क्या इन्तजाम वहां होगा ? अगर आनन्द भोगते २ लोगों को तबियतें उकता जावें तो फिर वे कहां जावेंगे ? क्योंकि बहिश्त में तो हमेशा के लिये बन्द हो जावेंगे। निकल तो सकेंगे नहीं.। हां कभी इच्छा होगी तो खिड़कियों में बैठकर आसमान की ओर देख सकेंगे। न तो वहां हरे भरे खेत होंगे, न खूब सूरत जमीन के, पहाड़ों व जंगलों के, तरह २ के फूलों के नजारे होंगे न वहां कोई काम धन्धा मन बहलाने को होगा। न पढ़ने को अखबार, किताबें, रेडियो, नाच कूद आदि के नाटक सिनेमा घर, मनो-रंजन के लिये होंगे। न घी, दूध होगा। हर वक्त मेवा खाना, गोश्त खाना, शराबें पीना, हूरों व गिलमों से अय्याशी करना बस केवल यही काम होगा। ऐसे नापाक बहिश्त से तो हमारी यह दुनियां ही अच्छी है। बहिश्त से बढ़िया हर चीज यहां

मिलती है। रेडियो पर बढ़िया २ गाने मिलते हैं, सभी तरह के दृश्य व पशु पक्षी-मनुष्य मिलते हैं।

वास्तव में अरब के शौकीन व अय्याश लोगों को बहलाने के लिए हूरें-गिल्में, शराबें, मेवे, बाग, नहरों वाले बहिश्त का उपरोक्त फर्जी नकशा मुहम्मद साहब ने कुरान में पेश किया था कि भोले लोग उनके मजहब में बहिश्त के लालच में फंस जावें। और हजारों भोले नीच लोग उनके जाल में फँस गए थे। ऐसे बहिश्त और दोजख का विश्व में कोई अस्तित्व नहीं है।

सातवां अध्याय

कुरान और दोजख

(कुरान शरीफ में दोजख (नरक) के बारे में निम्न प्रकार वर्णन मिलता है।)

दोजख के बारे निम्न प्रकार उल्लेख मिलता है।

'दोजख की आग से डरो जिसके ईंधन आदमी और पत्थर होंगे, और वह इन्कार करने वालों (काफिरों) के लिये तैयार है।' (कु० सूरे बकर पा० १ आ० २४)

'उसीमें (दोजख में) हमेशा रहेंगे, न तो इनकी सजा हल्की की जायगी और न उनको मोहलत ही दी जायगी।'

(कु० सूरे आल इमरान पा० ३ आ० ८८)

'जिस दिन (कुछ के) मुँह सफेद और (कुछ के) काले होंगे। तो जिनके मुँह काले होंगे, उनसे कहा जायगा कि तुम ईमान लाये पीछे काफिर हो गये थे तो अपनी इन्कारी की सजा में अजाब भुगतो।' (कु० सूरे आलइमरान पा० ४ आ० १०७)

'काफिरों को कुफ्र की सजा में पीने को खौलता पानी और दुःखदाई सजा होगी' ।कु० सू० तौबा पा ११ आ० १३।।

'वे चाहेंगे कि आग से निकल भागें, मगर वह वहां से नहीं निकल पायेंगे और उनके लिये हमेशा की सजा है।'

(कु० सूरे मायदा पा० ६ आ० ३७)

जो लोग 'इसके बाद उसको दोजख है और उसको पीप का पानी पिलाया जावेगा ।१६। उसको घूंट २ पियेगा और उसको लीलना कठिन होगा और मौत उसको हर तरफ से आती (दिखाई देगी) और वह नहीं मरेगा और उसके पीछे दुःखेदाई सजा है' ।१७। कु० सूरे इब्राहीम पा० १३।।

'ऐसे तमाम लोगों के लिये दोजख का बायदा है ।४३। उसके सात दरवाजे हैं। हर दरवाजे के लिये दोजखी लोगों की टोलियां अलग अलग होंगी।'

।कु० सू० हिज्र पा० १४ आ० ४४।।

'जो लोग (खुदा को) नहीं मानते उनके लिये आग के कपड़े हैं। उनके सिरों पर खौलता पानी डाला जायगा, ।१९। जिससे जो कुछ उनके पेट में है और खालें गल जांयगी ।२०। और उनके लिये लोहे के हथोड़े मौजूद हैं ।२१। घुटे घुटे जब उसमें से निकलना चाहेंगे तो उसी में फिर ढकेल दिये जावेंगे ताकि जलने की सजा चखें' ।२२। कु० सूरे हज्ज पा १७।।

सैंहुड़ का पेड़ एक दरख्त है जो दोजख की जड़ में उगता

है ।६४ उसके फल जैसे शैतातों के सिर ।६५। सो यह उसीमें से खांयगे और उसी से पेट भरेंगे ।६६। फिर उनको उस पर खौलता हुआ पानी दिया जायगा ,'

।६७। कु० सूरे साफ्फात पा० २३।।

'खौलता हुआ पानी और पीव, इसे चख्खो ।'

।५७। कु० सूरे साद पा० २३।।

सैहुड का पेड़ पापियों का खाना होगा ।४४। जैसे पिघला तांवा खौलता है पेटों में खौलेगा ।४५। (हम फरिश्तों को हुक्म देंगे) इनको पकड़ो और घसीटते हुए नरक के बीचों बीच ले जाओ ।४७।···इनके सरों पर खौलता पानी डालो ।'

।४८। कु० सूरे दुरवान पा० २४।।

'जब यह लोग आग पर सेके जांयगे ।'

।१३। कु० सू० जारियात पा० २६।।

'बांई तरफ वाले···वह आँच की भाफ और गरम पानी में होंगे ।४२। सैहुड़ का दरख्त खाना होना ।५२। उबलता पानी पीना होगा ।५४। जैसे ऊंट पीते हैं ।'

।५५। कु० सूरे वाकिया पा० २७।।

(नाशुकों के लिये) हमने जंजीरें और तौक और दहकती आग तैयार कर रखी है ।४। 'और जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया वही बदबख्त होंगे ।१९।' इनको आग में डालकर किवाड़ भेड़ दिये जावेंगे ।'

।२०। कु० सूरे बलद पा ३०।।

यह भुगत लो और जान लो कि काफिरों को नरक की सजा है' । कु० सू० अनफात पा० ६ आ० १४।।

'और तू क्या जाने दोजख क्या चीज है ।२७। वह न बाकी रखती है और न छोड़ती है ।२८। शरीर को झुलसा देती है

।२९। उस पर २९ चौकीदार हैं ।३०। और हमने फरिश्तों को आग (नरक) का चौकीदार बनाया है और इनको गिनती हमने काफिरों की जाँच के लिये ठहराई है··· ।'

।३१। कु० सू० मुद्दस्सिर पा० २९।।

'जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया हम उनको आग में झोंकेंगे । जब उनकी खालें जल जावेंगी उनको दूसरी खाल बदल देंगे ताकि दण्ड भोगें । अल्लाह जबर्दस्त बड़ा हिकमत वाला है' ।कु० सू० निसा पा० ५।।

'वे चाहेंगे कि आग से निकल भागें मगर वह वहां से नहीं निकलने पायेंगे और उनके लिये हमेशा की सजा है ।'

।३७। कु० सू० मायदा पा० ६।।

'तुम्हारे परवर्दिगार का कहा हुआ पूरा हो कि हम जिन्नों और आदमियों सबसे दोज़ख भर देंगे ।'

।११९। कु० सू० हूद पा० १२।।

'जब उस (दोजख) में डाले जाँयगे तो वह उसका दहाड़ना सुनेंगे और वह भड़क रही होगी ।७। कु० सू० मुल्क पा० २९।।

और जब दोजख की किसी तंग जगह में मुश्कें बांध कर डाल दिये जावेंगे तो वहां मौत को पुकारेंगे ।'

।१३। कु० सू० फुर्कीन पा० १८।

'और यह लोग नरक में चिल्लाते होंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार ! हमको [यहां से] निकाल [दुनियां में ले चल] कि हम जैसे कर्म करते थे वैसे नहीं [बल्कि] सुकर्म करेंगे । (तो उनसे कहा जायगा) कि क्या हमने इतनी उम्र नहीं दी थी कि इसमें जो कोई सोचना चाहे सोच ले और तुम्हारे पास डराने वाला आयु का था । बस चक्खो [मजा दुःख का] जालिमों का कोई मददगार नहीं ।३० सू० कातिर पा २२।

"बल्कि यह उस दिन नीची गर्दन किये होंगे।'

।२६। कु० सू० साफ्फात पा० २३।

'इनके ऊपर आग का ही ओढ़ना और आग का ही बिछौना होगा" ।१६। कु० सू० जुमर पा० २३।

'जब इनकी गरदनों में तौक और जंजीरें होंगी, घसीटते हुए उनको झुलसते हुए पानी में ले जायगे ।७१। फिर आग में झोंके जायगे ।७२। कु० सू० मौमिन पा० २४।।

'...जो हमेशा आग में होंगे और उनको खौलता पानी पिलाया जायगा और वह उनकी आंतों के टुकड़े टुकड़े कर डालेगा। ।१५। कु० सू० मुहम्मद पा० २६।।

समीक्षा—स्वर्ग और नरक के स्थान विशेष होने की कल्पना संसार के अन्य सभी मतों के समान इस्लाम ने भी की हुई है। वैदिक धर्म में स्वर्ग का अर्थ सुख तथा वह योनियां अथवा जीवन की परिस्थितियां हैं जिनमें सुख मिलता है। उसी प्रकार नरक का अर्थ भी वह योनियां अथवा जीवन की स्थितियां हैं जहाँ दु:खों का अनुभव होता है। इसके विपरीत अन्य सभी मत वालों ने स्वर्ग तथा नरक (बहिश्त तथा दोजख) लोक विशेष माने हैं।

इस्लाम की दोजख एक विचित्र स्थान है जिसमें घुसने के सात दरवाजे हैं। हर दरवाजे में फाटक लगे हैं बड़ी २ किवाड़ उनकी हैं और हर दरवाजे पर चौकीदार हैं जिनकी कुल संख्या २९ है। ये लोग रखवाली करते रहते हैं कि कोई उसमें से निकलने न पावे।

हदीसों में लिखा है कि दोजख के सत्तर हजार बाग हैं। कुरान में लिखता है कि कयामत के दिन खुदा दोजख से पूछेगा कि क्या तू भर चुकी। दोजख जवाब देगी कि क्या अभी और

भी कुछ डालने को बाकी है ?

।कुरान सूरे काफ पा० २६ आ० ३०।।

इस प्रकार सिद्ध है कि दोजख कोई बातें करने वाला जानवर है। वरना खुदा से उसकी बातें कैसे सम्भव हो सकती थीं। दोजख में आग जल रही होगी, उसकी लपटें एक किले की बराबर ऊँचाई तक उठती होंगी। उसमें खाने के लिये सैहुड़ के पेड़ होंगे, पीने को खौलता पानी मिलेगा, ओढ़ने बिछाने को आग के ही कपड़े होंगे, इत्यादि। सैहुड के पेड़ आग में कैसे कायम रहेंगे यह नहीं बताया गया है।

दोजख की आग में जब आदमी जलकर राख हो जावेंगे तो ओढ़ने बिछाने या लेटने वाले कौन कहां से आवेंगे ? और सैहुड के पेडों को कौन खावेगा, क्यों कि बकौल कुरान के उनकी आंतें तो पहिले ही गल चुकी होंगी और शरीरों की खाल जल चुकी होंगी। पता नहीं वहाँ की आग कैसी आग होगी कि जल जाने पर भी आदमी जिन्दा बने रहेंगे आग तो १० मिनट में आदमी के सारे जिस्म की राख बना देती है, पर दोजख में जल भी जावेंगे और खाते पीते भी रहेंगे, आंतें गल जावेंगी फिर भी भूख लगेगी व पानी पीवेंगे, कैसी बेतुकी पागलों जैसी कल्पना है, दोजख के दरवाजों की किवाड़ें बन्द करदी जावेंगी, पर किवड़ें क्यों नहीं जलेंगी, यह नही बताया गया, जिन्न और आदमी दोजख में भरे जावेंगे पर यह नहीं बताया गया कि जिन्नों ने कौन से कुकर्म किये होंगे जिन की वजह से इनको (जिन्नों को) दोजख में भरा जावेगा, क्यों कि दोजख तो गुनहगारों के ही लिए होगी, उसकी खुराक आदमी-जिन्न और पत्थर होंगे, [पत्थरों की बात कु० सू० बकर पा० १ आ० २४ में लिखी है] जिन्नों को दुनियां में कोई काम कुरान

ने करना नहीं बताया है, जिन्नों की पैदायश के बारे में लिखा है कि 'हम पहिले जिन्नों को लू की आग से पैदा कर चुके थे'

।।कु० सू० हिज्र पा० १४ आ० २७।।

आग से पैदा हुए जिन्न तो आग में आराम से जिन्दा रह सकेंगे, फिर उनको दोजख की आग की तकलीफ भी क्या होगी रहे आदमी वह भी जल कर खाक हो जावेंगे, तब उनके वहाँ से निकलने की कोशिश करना और हमेशा उसी में रहने की बात भी गलत हो जाती है। जब कुरान के अनुसार दोजख में उनकी खालें जल जावेंगी और पेट के अन्दर के अंग आँतें, गुर्दे, जिगर, तिल्ली मसाना वगैरः सभी गल जावेंगे तो शरीर के ऊपर का गोश्त व हड्डी भी कैसे बचेंगी, और जब सब नष्ट हो जावेंगी और इन्सान ही नहीं रहेगा तो कौन दोजख की सजा हमेशा भुगतेगा ? यह बात दुनियां के अक्लमन्द लोगों की समझ के बाहर है।

जब दोजख केवल गुनहगारों के ही लिये है तो उसमें बेगुनाह फरिश्ते क्यों पहरे पर रखे गये हैं, जब कि फरिश्तों को (केवल शैतान को छोड़कर) कुरान में खुदा परस्त माना गया है।

इन्सान की जिन्दगी थोड़ी होती है। वह इन थोड़ी सी जिन्दगी में जो भी कर्म करता है वे भी थोड़ ही होते हैं। तो थोड़े से हद वाले (सीमित) कर्मों के बदले में दण्ड भी हदवाला (सीमित) होना चाहिये। सीमित कर्मों का असीम (बेहद) दण्ड देना भी तो घोर अन्याय है, दण्ड का उद्देश्य यदि अपराधी का सुधार करना होता है ताकि वह आयन्दा कभी गलती न करे, जहां दण्ड का अर्थ बदला लेना होता है वहां दन्ड देने वाले की नीयत खराब मानी जाती है। कुरान में

लिखा है कि दोजखी लोग खुदा से अपने गुनाहों की माफी मांगेंगे, और अपनी भूलों पर पछतावेंगे और आगे नेक काम करने का वायदा करेंगे, तो ऐसी दशा में उनको जबर्दस्ती हमेशा दोजख ही में बन्द रखना और दुबारा कभी अच्छे काम करने का अवसर न देना भी तो भारी गुनाह खुदा का होगा, इससे खुदा दुनियां की (इन्सानों की) भलाई चाहने वाला साबित नहीं होता है।

यहां हमें एक बात और पूंछनी है, और वह यह कि जब इन्सान को दुबारा पैदा होकर कर्म करने का मौका ही नहीं देना है, तो फिर उसे मरने के बाद ही नष्ट क्यों नहीं कर दिया जाता है? क्या जरूरत है कि कयामत के दिन उसे उठाया जावे, फैसले के लिऐ अदालत खुदा की बैठे गवाहियां, सिफारिशें हों और उनको दोजख में झोंका जावे। इस सारे तमाशे में खुदा को क्या आनन्द आता है? क्यों उसने इन्सान व जिन्नों को पैदा किया? क्यों दोजख को बनाया? यह सारा तमाशा करने की उसे क्या जरूरत थी? इन्सान को पैदा करना, उसे नेक राह न बताना, उसके दिल दिमाग, आंखों, कानों, पर मुहरें लगा देना ताकि वह नेक राह पर न चल सकें, और साथ ही यह भी कहना कि 'हमने इन्सान और जिन्नों को इसीलिये पैदा किया है ताकि उनसे दोजख को भरेंगे' खुदा की दुनियां बनाने की बद नीयत को जाहिर कर देता है। खुदा का उद्देश्य दुनियां बनाने में इन्सान को भलाई सोचना नहीं था, बल्कि खुदा की बेरहमी का सबूत है। बिना कारण दुनियां बनाना, खुद ही लोगों को जाहिल बनाना उन्हें सही रास्ता न दिखाना और फिर दोजख की भट्टी में झोंक कर उनके तड़फने पर खुश होना, यह किसी शरीफ खुदा

का जो रहम दिल है, यह सब बातें कुरान के खुदा को अव्वल नम्बर का बेरहम आदमी जाहिर करती हैं। वह न्यायप्रिय भी गिरे दर्जे का है।

आठवां अध्याय

कुरान और फरिश्ते

(कुरान शरीफ में जिन्न फरिश्ते और शैतान और आदम का वर्णन निम्न प्रकार मिलता है।)

'....जब तुममें से किसी का काल आता है तो हमारे फरिश्ते उसकी रूह निकालते हैं और वह कोताही नहीं करते।'

॥६१॥ कु० सू० अनआम पा० ७॥

'फिर हमने फरिश्तों को आज्ञा दी कि आदम के आगे झुको, मगर वह इब्लीस झुकने वालों में न हुआ।११। पूछा कि तुमको किस चीज ने माथा नवाने से रोका—बोला मैं आदम से अच्छा हूँ। तू ने मुझको आग से पैदा किया और उस (आदम) को मिट्टी से पैदा किया'।१२। बोला तू यहां से उतर जा क्योंकि तुझे मुनासिब नहीं कि घमण्ड करे, सो निकल तू नीचों में से है।१३। वह बोला कि जिस दिन लोग उठा खड़े किये जायेंगे उस दिन तक की मुझे मौहलत दे।१४। कहा तुझे मौहलत दी गई।१५। इस पर शैतान बोला जैसे तूने मेरी राह मारी है मैं भी सीधे रास्ते पर आदमियों की घात में जा बैठूंगा।१६। फिर उन पर आगे से और पीछे से और दाहिनी

तरफ से और बांई तरफ से आऊंगा। और तू उनमें से बहुतों को शुक्र गुजार नहीं पावेगा ।१७। फर्माया कि पापी निकाला हुआ यहां से निकल, आदम के बेटों में से जो तेरी पैरवी करेगा हम बिला शक तुम सबसे दोजख भर देंगे।'

।१८। कु० सू० अनआम पा० ८।

'जब कि तुम मुसलमानों को समझा रहे थे कि क्या तुमको इतना काफी नहीं कि तुम्हारा परवर्दिगार तीन हजार फरिश्ते भेज कर तुम्हारी मदद करे ।१२५। बल्कि अगर तुम मजबूत बने रहो और बच्चो और (दुश्मन) अभी इसी दम तुम पर चढ़ आवे तो तुम्हारा पालनकर्ता पांच हजार फरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा' ।१२६। कु० सू० आलइमरान पा० ४।O

'हमने आसमान में बुर्ज बनाये और देखने वालों के लिये उसको तारों से सजाया ।१६। और हर निकाले हुए शैतान से हमने उसकी रक्षा की ।१७। मगर चोरी छिपा कोई बात सुन भागे तो दहकता हुआ अंगारा एक तारा उसे खदेड़ने को उसके पीछे होता है' ।१८। कु० सू० हिज्र पा० १४।

'और हम जिन्नों को पहिले लू की आग से पैदा कर चुके थे' ।२७। (यहां आगे शैतान व आदम का हाल दिया गया है।')

।। कु० सू० हिज्र पा० १४ ।।

'हमारे मानने वालों को समझा दो कि ऐसी कहें जो भली हो, क्योंकि शैतान लोगों में झगड़ा डलवाता है और शैतान आदमी का खुला बैरी है' ।५३। कु० सू० बनीइसराइल पा० १५।

'और हमने उसके पीछे उसकी कौम पर आसमान से (फरिश्तों का) कोई लश्कर न उतारा और हम फौजें नहीं उतारा करते' ।२८। कु० सू० यासीन पा० २३।

'(इब्लीस) बोला मैं उस (आदम) से कहीं बेहतर हूँ।

मुझको तूने आग से बनाया और उसको तूने मिट्टी से बनाया है ।७६। कु० सू० साद पा० २३ । (यहां भी कुरान में शैतान व खुदा के झगड़े का व्यौरा दिया है ।)

'जो शख्स (खुदा) कृपालु की याद से बराता है हम उस पर एक शैतान मुकर्रर कर दिया करते हैं । और वह उसके साथ रहता है ।३६। और शैतान पापियों को राह से रोकता है···।'

। कु० सू० जुखरुफ पा० २५ ।

'और बहुत फरिश्ते आसमानों में हैं । उनकी सिफारिश कुछ भी काम नहीं आती । मगर जब खुदा किसी के बारे में सिफारिश कराना चाहे, इजाजत दे और (फरिश्तों की सिफारिश को पसन्द फर्मावे ।२६। कु० सू० जन्म पा० २७ ।

'और उन (फरिश्तों) की कसम जो घुस कर सख्ती से रूह निकालते हैं' । कु० सू० नाजिआत पा० ३० ।

और उन फरिश्तों की जो आसानी से जान निकाल लेते हैं।२।

'क्या यह लोग इसकी बाट देखते हैं कि अल्लाह फरिश्तों के साथ बादलों का छाता लगाये उनके सामने आवे···।'

।२१०। कु० सू० बकर पा० २ ।

'शैतान तुमको तंगी से डराता और बेशर्मी की तरफ लगाता है····'। कु० सू० बकर पा० ३ ।

'जो लोग अपने ऊपर आप जुल्म कर रहे हैं फरिश्ते उनकी जान निकालने के बाद उनसे पूछते हैं कि तुम क्या करते रहे···।'

।।९७।। कु० सू० निसा पा० ५ ।।

'खुदा ही ने जिन्नों को पैदा किया···।'

।।१००।। कु० सू० अनआम पा० ७ ।।

'फिर अल्लाह ने···ऐसी फौजें भेजीं जो तुमको दिखलाई नहीं पड़ती थीं और काफिरों को बड़ी सख्त मार दी और

काफिरों की यही सजा है' ॥२६॥ 'फिर अल्लाह ने···ऐसी फौजों से मदद दी जिनको तुम देख नहीं सके···।'

॥४०॥ कु० सू० तौबा पा० १०॥

'(ऐ पैगम्बर) यह वह वक्त था कि तुम्हारा परवदिगार फरिश्तों को हुक्म दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं तुम मुसलमानों को जमाये रखो, हम जल्द काफिरों के दिलों में डर डाल देंगे, बस तुम इनकी गर्दन मारो और इनके टुकड़े-टुकड़े कर डालो' ॥१२॥ कु० सू० अन्फाल पा० ९ ॥

'गरज (बादलों की कड़क) उसकी तारीफ के साथ पाकीज़गी बतलाती है और फरिश्ते उसके डर के मारे और बिजलियां भेजते हैं···'॥१३॥ सू० राद पा० १३ ॥

'मक्का के (काफिर) कहते हैं ऐ शख्स (मोहम्मद) अगर तू सच्चा है तो फरिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं बुलाता। ॥६-७॥ सो हम फरिश्तों को नहीं उतारा करते, मगर फैसले के लिये और फिर उनको आकाश भी न मिलेगा।'

॥ कु० सू० हिज्र पा० १३ ॥

'और (ऐ पैगम्बर) हम (फरिश्ते) तुम्हारे पालन कर्त्ता के बिना हुक्म दुनियां में नहीं आ सकते···।'

।६४। कु० सू० मरियम पा० १६ ।

'फरिश्ते खुदा के बेटे नहीं बल्कि इज्जतदार सेवक हैं ।२६। उसके आगे बढ़कर बात नहीं कर सकते और वह उसी के हुक्म पर काम करते हैं···यह फरिश्ते किसी की सिफारिश नहीं कर सकते, मगर उसके लिये जिससे खुदा राजी हुआ और वह खुद अल्लाह के डर से काँपते हैं' ।२८। कु०सू० अम्बिया पा० १७।

'अल्लाह फरिश्तों में से और आदमियों में से ईश्वरीय संदेशा पहुंचाने के लिये चुन लेता है'···।७५। कु०सू०हज्ज पा०१७।

'और जिस दिन आसमान बदली से, फट जायगा और फरिश्ते दर्जा व दर्जा उतारे जायेंगे' ।२५। कु०सू० फुर्कान पा०१६।

'और इब्लीस का सब लश्कर औंधे मुँह नरक में धकेल दिया जायगा' ।६५। कु० सू० शुअरा पा० १६।

'(ऐ पैगम्बर) इन लोगों से कहो कि मैं तुमको बताऊँ कि किस पर शैतान उतारा करते हैं ।२२१। वह हर झूठे कुकर्मी पर उतरा करते हैं ।२२२। कु० सू० शुअरा पा० १६।

'...उसी ने फरिश्तों को दूत बनाया जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर हैं। पैदायश में जो चाहता है ज्यादा कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज पर शक्तिमान है।'

।१। कु० सू० फातिर पा० २२ ।

'जो (फरिश्ते खुदा के) तख्त को उठाये हुए हैं और जो तख्त के आस-पास हैं अपने परवर्दिगार की तारीफ और पाकी के साथ याद करते हैं और उस पर ईमान लाते हैं और ईमान वालों के लिये क्षमा कराते हैं' ।७। कु० सू० मामिल पा० २४।

'या ख्याल करते हैं कि हम इनके भेद और मशविरे नहीं जानते। और हमारे फरिश्ते इनके पास लिखते हैं।'

।८०। कु० सू० जुखरफ पा० २५।

'जब दो लेने वाले दायें और बायें बैठे हुए लेते जाते हैं ।१६। जो बात आदमी बोलता है उसके पास निगहबान मौजूद हैं ।१७। कु० सू० काफ पा० २६। ऐ दोनों फरिश्तो! हर काफिर दुश्मन को नरक में डाल दो ।२३।

(नोट—हर आदमी के साथ दो फरिश्ते रहते हैं। आदमी जो काम करता है, या जो बात कहता है, ये दोनों उसको लिखते जाते हैं। इस प्रकार हर एक का किया उसके सामने लाया जायगा।) कु० सू० काफ पा० २६।

'और मैंने जिन्नों और आदमियों को इसी मतलब से पैदा किया है कि हमारी पूजा करें ।५६। कु० सू० जारियात पा० २७।

'तेरा परवर्दिगार आगया और फरिश्ते पांति-पांति' ।

।२२। कु० सू० फजर पा० ३० ॥

रूह 'ऐ इतमीनान पाने वाली रूह (आत्मा) ।२७। अपने परवर्दिगार की ओर चल, तू उससे राजी और वह तुझसे राजी ।२८। फिर मेरे बन्दों में जा मिल ।२९। और मेरे बहिश्त में जा दाखिल हो ।३०। कु० सू० फजर पा० ३० ।

'उसमें (कदर की रात में) हर काम के लिये फरिश्ते और अपने परवर्दिगार की आज्ञा से उतरते हैं ।

॥४॥ कु० सू० कदर पा० ३० ॥

आदम और शैतान

'जब तुम्हारे पालनकर्ता ने फरिश्तों से कहा—मैं जमीन में नायब बनाना चाहता हूँ' (तो फरिश्ते) बोले 'क्या तू जमीन में ऐसे के (नायब) बनाता है जो उसमें फिसाद फैलाये और खून बहाये । हम स्तुति बन्दना के साथ तेरी बड़ाई करते हैं । बनाना है तो नायब हमें बना (खुदा ने) कहा मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते' ॥३०॥ 'और आदम को सब (चीजों के) नाम बता दिये फिर उन चीजों को फरिश्तों के सामने पेश करके कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो हमको इन चीजों के नाम बताओ' ॥३१ '(फरिश्ते) बोले तू पाक है जो तूने हमको बता दिया है । उसके सिवाय हमको कुछ मालूम नहीं । सचमुच तू ही जानने वाला पहिचानने वाला है ॥३२॥ (तब खुदा ने) हुक्म दिया कि ऐ आदम ! तुम फरिश्तों को इनके नाम बता दो, फिर जब आदम ने फरिश्तों को उन (चीजों) के नाम बता

दिये तो खुदा ने फरिश्तों से कहा—क्यों हमने तुमसे नहीं कहा था कि आकाश और धरती की सब छिपी चीजें हमें मालूम हैं और जो तुम जाहिर करते हो और जो कुछ तुम हमसे छिपाते थे हमको सब मालूम है' ।३३। 'और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम के आगे झुको तो शैतान को छोड़कर (सारे फरिश्ते) झुक पड़े । उसने न माना और शेखी में आ गया और हुक्म उदूली कर बैठा' ।३४। और मैंने कहा ए आदम ! तुम और तुम्हारी बीबी बहिश्त में बसो और उसमें जहां कहीं से जो तुम्हारी तबियत चाहे बे खटके खाओ मगर इस पेड़ (गेहूँ) के पास मत फटकना (ऐसा करोगे) तो अपराधी हो जाओगे ।३५। पस शैतान ने उनको बहकाया और उनको निकलवा छोड़ा···'।३६। कु० सू० बकर पा० १ ।।

'शैतान तुमको तंगी से डराता और बेशर्मी की तरफ लगाता है···'।२६८। कु० सू० बकर पा० ३ ।।

'क्या तुमने उनकी तरफ नहीं देखा जो दावा करते हैं और चाहते हैं कि झगड़ा शैतान के पास ले जावें हालांकि उनको हुक्म दिया जा चुका है कि उसकी बात न माने और शैतान चाहता है कि उनको भटका कर बड़ी दूर ले जावे ।'

।६०। कु० सू० निसा पा० ५।।

'···हमने शैतान को उन्हीं लोगों का दोस्त बनाया है जो ईमान नहीं लाते' ।२७। कु० सू० आराफ पा० ८ ।।

'अल्लाह की युक्ति ज्यादा चलती है (वह फरमाता है) हमारे फरिश्ते तुम्हारी करतूतें लिखते हैं ।'

। कु० सू० यूनिस पा० ११ ।

'जब हमने फरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सिजदा करो (झुको) तो सभी ने सिजदा किया मगर इब्लीस झगड़ने

लगा कि क्या मैं ऐसे आदमी को सिजदा करूं जिसे तूने मिट्टी से बनाया ।६१। कहने लगा कि भला देख तो यही वह आदमी है जिसको तूने मुझपर बढ़ती दी है, अगर तू मुझको कयामत तक की मौहलत दे तो मैं सिवाय थोड़े लोगों के इसकी सब सन्तान की जड़ काटता रहूंगा ।६२। खुदा ने कहा चल दूर हो, जो आदमी तेरी पैरवी करेगा सो तुम सबको दोजख की सजा पूरा बदला देगो ।६३। इनमें से जिसे अपनी बातों से बहका सके बहका ले और उन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ा ला और उनके साथ मान और सन्तान में साझा लगा और इनमें वादे कर और शैतान तो इन लोगों से जितने वायदे करता है सब धोखे के होते हैं ।६४। हमारे सेवकों पर तेरा किसी तरह का काबू न होगा और तुम्हारा परवर्दिगार काम संभालने वाला है' ।६५। कु० सू० बनीइसराइल पा० १५ ॥

'ऐ ईमान वालो ! शैतान के कदम पर कदम मत रखो, और जो शैतान के कदम पर रखेगा तो शैतान उसको बेशर्मी और बुरे काम को कहेगा ···'।२१। कु० सू० नूर पा० १८ ॥

'जब तेरे परवर्दिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक आदमी बनाने वाला हूँ ।७। तो जब मैं उसे पूरा करलूं और अपनी रूह उसमें फूंक दूं तो तुम उसके आगे सिजदा में गिर पड़ना ।७२। चुनाचे सबही फरिश्तों ने उसे सिजदा किया ।७३। मगर इब्लीस ने गरूर किया और वह काफिरों में था ।७४। खुदा ने (इब्लीस से) पूंछा कि ऐ इब्लीस ! जिसको मैंने अपने हाथों बनाया उसे सिजदा करने से तुझे किसने रोका। क्या तूने घमण्ड किया कि तू दर्जे में बड़ा था ।७५। बोला मैं उससे कहीं बहतर हूँ। मुझको तूने आग से बनाया और उसको तूनें मिट्टी से बनाया है ।७६। फर्माया, तू यहां से

निकल, तू फटकारा हुआ है ।७७। और कयामत तक तुझ पर हमारी फटकार है ।७८। बोला ऐ मेरे परवर्दिगार ! मुझको उस दिन तक की मोहलत दे जब कि मुर्दे दुबारा उठा खड़े किये जायगे ।७९। फर्माया तुमको उस दिन तक की मुहलत है ।८०। फिर बोला, तेरी इज्जत की कसम मैं इन सबको गुमराह करूंगा ।८२। मगर जो तेरे चुने बन्दे हैं (उनको नहीं) ।८३। (खुदा ने) फर्माया तो ठीक बात यह है और ठीक ही कहता हूँ ।८४। कि मैं तुझसे और जो कोई उनमें से तेरी पैरवी करेगा उनसे नरक को भर दूंगा ।८५। कु० सू० साद पा० २३।'

'(हमने आदम से कहा कि) ऐ आदम तुम और तुम्हारी स्त्री जन्नत में रहो और जहां से चाहो खाओ, मगर इस दरख्त के पास न फटकना, वरना तुम पापी होगे ।१९ फिर शैतान ने मियां बीबी दोनों को बहकाया ताकि उनकी याद करने की चीजें जो तुमसे छिपी थीं, उन्हें खोल दिखादें और कहने लगा तुम्हारे परवर्दिगार ने जो इस दरख्त (के फल खाने) से तुमको मना किया है तो इसका कारण यही है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम दोनों फरिश्ते बन जाओ या अमर हो जाओ ।२०। और उसने कसम खाई कि मैं तुम्हारी भलाई चाहने वाला हूँ ।२१। गरज धोखे से उनको प्रसंग के लिए आकर्षित कर लिया तो ज्योंही उन्होंने दरख्त चखा तो दोनों के पर्दे करने की चीजें उनको दिखाई देने लगीं, और अपने ऊपर पत्ते ढांकने लगे उसके पालन कर्ता ने उनको पुकारा। क्या हमने तुमको इस वृक्ष की मनाई नहीं की थी और तुमसे नहीं कह दिया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है ।२२। दोनों कहने लगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार ! हमने अपने को आप तबाह किया और अगर तू हमको क्षमा नहीं करेगा और हम पर रहम नहीं करेगा

तो हम मिट जायंगे ।२३। कहा कि तुम तीनों (मियां बीबी और शैतान तीनों जन्नत से) नीचे उतर जाओ, तुममें एक का एक दुश्मन है, और तुमको एक खास वक्त तक जमीन पर रहना होगा और एक खास वक्त तक वर्तना होगा ।२४। फर्माया कि (जमीन ही में) तुम सब जिन्दगी व्यतीत करोगे और उसी में मरोगे और उसी में से निकाल खड़े किये जाओगे ।'

।२५। कु० सू० अनआम पा० ८।

'और हमने फरिश्तों से कहा कि आदम के आगे दन्डवत करो तो सबही ने दन्डवत की मगर इब्लीस ने इन्कार किया ।११६। तो हमने (आदम से) कहा ऐ आदम यह (इब्लीस) तुम्हारा और तुम्हारी बीबी का दुश्मन है तो ऐसा न हो कि कहीं तुम दोनों को जन्नत से निकलवा दे ।११७। फिर शैतान ने आदम को फुसलाया और कहा ऐ आदम ! कहो तो तुमको सदा बहार का दरख्त बता दूं कि जिसको खाकर हमेशा जीते रहो'''।१२०। चुनाचे दोनों के दरख्त के फल को खा लिया (तो उन पर) पर्दे की चीजें जाहिर हो गईं और अपने को (जन्नत के) बाग के पत्तों से ढांकने लगे और आदम ने अपने परवर्दिगार का हुक्म न माना और भटक गया ।'

।।१२१।। कु० सू० ताहा पा० १७।

और (ऐ पैगम्बर !) उस वक्त को याद करो जब कि तुम्हारे परवर्दिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं सड़े हुए गारे से जो खनखनाने लगता है एक आदमी को पैदा करने वाला हूँ ।२८। तो जब मैं उनको पूरा बना चुकूं और उसमें रूह फूंक दूं तो तुम उसके आगे सिजदा (दन्डवत) करना ।२९। चुनाचे तमाम फरिश्ते सबके सब सिजदा करने लगे ।३०। मगर इब्लीस जिसने सिजदा करने वालों में शामिल होने से इन्कार किया ।३१।

इस पर खुदा ने कहा ऐ इब्लीस ! तुमको क्या हुआ कि तू सिजदा करने वालों में शामिल नहीं हुआ ।३२। वह बोला कि मैं ऐसे शख्स का सिजदा नहीं करूंगा जिसको तूने सड़े हुये गारे से पैदा किया है जो खनखनाने लगता है ।३३। (खुदा ने) कहा पस (जन्नत से) निकल तू फटकारा हुआ है ।३४। कयामत के दिन तुझ पर फटकार होगी ।३५। कहा कि ऐ मेरे परवर्दिगार तू मुझको उस दिन तक की मुहलत दे, जब कि मुर्दे उठा खड़े किये जावेंगे ।२६ खुदा ने कहा कि मुहलत दी गई ।३७। कयामत के वक्त के दिन तक ।३८। शैतान ने कहा ऐ मेरे परवर्दिगार ! जैसी तूने मेरी राह मारी मैं भी दुनियां में इन सबको बहारें दिखाऊंगा और इन सबको राह से बहकाऊंगा ।३९। (खुदा ने कहा) जो हमारे सेवक हैं उन पर तेरा किसी तरह का जोर न होगा । मगर उन पर जो गुमराहों में से तेरे पीछे हो जांय ।४२। ऐसे तमाम लोगों के लिये दोजख का वायदा है।'

॥४३॥ कु० सू० हिज्र पा० १४॥

समीक्षा—कुरान के अनुसार सारे फरिश्तों तथा जिन्नों को खुदा ने आग की लौ से पैदा किया था। वे आसमान में रहते हैं। उनके बड़े २ लश्कर हैं, खुदा उनकी फौजें लड़ाई पर भेजा करता है। मुसलमानों की मदद के लिये तीन-तीन और पांच-पाँच हजार फरिश्तों की फौजें आ चुकी हैं. फरिश्ते से खुदा कई तरह के काम लेता है, हर आदमी के साथ दो फरिश्ते उसके हर वक्त के कामों को लिखते रहने को नियत किये जाते हैं और यह कर्म लेखा का रिकार्ड (Record) कयामत के दिन फैसले में काम आवेगा। जब आदमी मरता है तो फरिश्ते उसकी रूह शरीर में से निकालते हैं, किसी की आसानी से; किसी की सख्ती से, खुदा जब कहीं जाता है तो

फरिश्तों का लश्कर उसके साथ जाता है। फरिश्ते लड़ाई में मुसलमानों को मजबूत रखते तथा काफिरों को कत्ल करते हैं। बादलों में बिजली को फरिश्ते ही पैदा करते हैं। फरिश्ते खुदा के सच्चे सेवक हैं। फरिश्तों के दो, तीन या चार पंख होते हैं जिनसे वे उड़ा करते हैं, कयामत के दिन खुदा चाहता तो इनकी गवाही भी लेता है और सिफारिशें भी मानता है, खुदा के भारी तख्त को सातवें आसमान पर फरिश्ते ही उठाये रहते हैं।

यह सब कोरी गल्पें नहीं तो क्या हैं, क्या खुदा कादिरे (सर्व शक्तिमान) नहीं है जो उसे फरिश्तों की फौज की अपने हर काम के लिये मदद की जरूरत पड़ती है। लड़ाइयों में फरिश्ते मुसलमानों की तरफ से लड़ने आते हैं तो पाकिस्तान की फौजें भारतीय फौजों से क्यों पिट गईं? खुदा की मदद इस वक्त कहाँ भाग गई? अल्लाह मियाँ के तख्त को फरिश्ते ही क्यों उठाये फिरते हैं? वह खुदा की ताकत से ही आसमान में क्यों नहीं ठहरा रहता है? और सूरज-चांद-तारे वगैरह को कौन उठाये रहता है? जब अल्लाह मियां से अपना तख्त या कुर्सी भी बिना फरिश्तों की मदद के आकाश में निराधार नहीं सधती है तो वह इन असंख्य लोक-लोकान्तरों को कैसे धारण कर सकता है? और यदि वही इस विश्व को धारण करता है तो अपना तख्त क्यों आठ फरिश्तों से उठवाता है? फिर जब खुदा सातवें आसमान पर ही रहता है तो उसे हाजिर-नाजिर (सर्व व्यापक) बताना दुनियां को धोखा देना होगा। अगर आदमियों के कर्मलेखा कागज खो जावें या जल जावें या शैतान चुरा ले जावें तो खुदा कयामत के दिन फैसले का हिसाब कैसे करेगा? क्या खुदा का जहन (दिमाग)

इतना कमजोर है कि वह हर इन्सान के भले बुरे कर्मों को बिना लिखा पढ़ी के कयामत तक याद भी नहीं रख सकता है। ऐसी कमजोर याद्दाश्त वाला खुदा अनन्त विश्व का उत्पन्न पालन व व्यवस्थापक हो ही नहीं सकता है। आसमान में बादलों में बिजली की चमक तो रगड़ से पैदा होती है, उसे फरिश्तों का करिश्मा बताना कम इल्मी की बात है। आकाश में रात को जो उल्कापात होते हैं उनको तारा टूटना कहना और उनका शैतान को मारने को उसके पीछे भागना लिखना कुरान को किसी खगोल विद्या से शून्य व्यक्ति की रचना बताता है अथवा खुदा को अज्ञानी साबित करता है।

कुरान के अनुसार इब्लीस (शैतान) सिर्फ एक ही था। तब कु० सूरे हिज्र आ० १८ पा० १४ में खुदा का यह कहना कि 'हर निकाले हुए शैतान से हमने उसकी रक्षा की' गलत व्यानी है। शैतान बहुत से न होकर एक ही था।

खुदा फरिश्तों के जरिये इन्सान पर अपना सन्देशा भेजता है, कुरान का यह लिखना बताता है कि खुदा हाजिर नाजिर (सर्व व्यापक) तथा घट घट वासी (हर एक के दिल में) नहीं रहता है, न वह जर्रे जर्रे में समाया हुआ है। क्यों कि जो चीज अपने से अलग और दूर होती है उसी के लिये दलाल या दूत की जरूरत होती है। अगर खुदा सर्व व्यापक होता तो बिना किसी की मदद के अपनी बात खुद ही दूसरों के दिलों में डाल सकता था। फरिश्ते रूपी एजेन्ट या पोस्टमेंन की उसे जरूरत ही नहीं पड़ सकती थी। यह आयत खुदा के सर्व व्यापकत्व पर कलंक है। कुरान सू० जुरवरुफ आ० ३६-३७ पा० २५ में खुदा कहता है कि वह खुद ही आदमी पर शैतान मुकर्रर कर देता है जो उसके साथ लगा रहता है और उसे नेक रास्ते पर

जाने से रोकता है। तब इन्सान का कोई दोष नहीं रहता है। क्यों कि उसके पाप को ओर ले जाने तथा भेजने की सारी जिम्मेवारी खुदा की ही ठहरती हैं। खुदा को चाहिये तो यह था कि गलत रास्ते पर जाने से वह आदमी को रोकता और शैतान के फन्दे से उसे बचाता। बजाय इसके वह खुद इन्सान को गुमराह कराता है और फिर खुद ही उसे दोजख की सजा देने को कहता है। स्पष्ट है कि खुदा खुद जबर्दस्त गुनहगार है न कि इन्सान और शैतान है। क्यों कि इन्सान को गुमराह करने को शैतान को खुदा ही उसके ऊपर नियुक्त करता है।

आसमान में खुदा का बुर्ज बनाने की बात कहना भी उसकी अज्ञानता है। आसमान में कोई बुर्ज नहीं है और न तारे कोई फूल हैं, जिनसे आसमान सजाया गया है। तारे तो हमारी जमीन से भी बड़ २ लोक हैं जिनमें प्राणी रहते हैं। ऐसी गलत बातें जिस किताब में लिखो हों वह खुदाई किताब हरगिज नहीं हो सकती है।

कुरान शरीफ में खुदा और शैतान के झगड़े का कई जगह जिक्र आता है जैसा कि ऊपर दिया गया है। इस विवरण से स्पष्ट है कि दोषी वास्तव में खुदा ही है। शैतान का कोई दोष इस झगड़े में नहीं है। खुदा ने ही शरारत करके शैतान को बदमाश बनाया था। हदीसों के अनुसार मि० शैतान का असली नाम अजाजील था। उसने छः लाख वर्षों तक खुदा की घोर परस्तिश (भक्ति) की थी। जमीन और आसमान में कोई जगह ऐसी नहीं थी जहां उसने खुदा की इबादत (प्रार्थना) न की हो। खुदा ने उसे सला और बला की अनेक उपाधियां भी प्रदान कीं। एक बार खुदा ने फरिश्तों की परीक्षा लेने का विचार किया। उसने आदम को कुछ प्रश्नों के जवाब पहिले

ही से याद करा दिये। फिर फरिश्तों और आदम को सामने करके वे ही सवालात पहिले फरिश्तों से पूंछे तो वे उनका कोई जवाब न दे सके। तब बाद को खुदा ने वही सवालात आदम से पूंछे तो उसने पहिले से खुदा के रटाये हुए जवाब सुना दिये। उस पर खुदा ने कहा कि आदम को सिजदा करो। आदम तुमसे बड़ा है। उसने सवालों के जवाब बता दिये जो तुम न बता सके, तो अजाजील ने कहा कि जवाब ! यह तो आपने उसे पहिले ही से बता रखे थे और हमको नहीं बताये थे। इसमें आदम को कोई काबिलियत नहीं रही। खुदा ने कहा कि आदम को मैंने बनाया है। अजाजील ने कहा कि यह आदम मिट्टी से बना है और मैं लाखों साल पहिले से कुदरत से बनाया गया हूँ, इससे मैं उससे बड़ा हूँ, वगैरह। खुदा का आदम से शास्त्रार्थ चालू हो गया। जब खुदा से कोई जवाब न बन पड़ा तो उसने अजाजील से कहा कि तूने मेरा हुक्म नहीं माना और मेरे हुक्म से आदम को सिजदा नहीं किया है तू इब्लीस (हुक्म न मानने वाला) है। इब्लीस ने कहा कि तूने मुझे पहिले हुक्म दिया था कि खुदा के अलावा किसी और को सिजदा मत करना। अब तू पहिला हुक्म क्यों मंसूख करता है। मैं तुझको सिजदा कर सकता हूँ पर आदम को नहीं। इस पर खुदा मियाँ आपे से बाहर हो गये और इब्लीस को बहिश्त से निकल जाने का हुक्म दिया। तब उसने कहा कि यह तेरा घर है, मैं जाता हूँ। तू मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकता है। मैं तेरे बन्दों को हमेशा तेरे खिलाफ बहकाता रहूंगा। खुदा ने कहा जो तुझसे बने सो करना। जो तेरी पैरवी करेंगे मैं उनको दोजख में झोंक दूंगा। इब्लीस का ही नाम शैतान रखा गया है। वह तभी से बहिश्त से चला आया है और लोगों को बहकाया

करता है। यह वर्णन कुछ तो कुरान में दिया है और कुछ हदीसों में विस्तार से दिया है। हमने संक्षेप से यहां दे दिया है। हम इस पूरे किस्से को प्रथक भी 'शैतान की पैदायश और खुदा से झगड़ा' के नाम से प्रकाशित करा चुके हैं।

कुरान शरीफ में दिये वर्णन को देखकर भी यह स्पष्ट हो जाता है कि खुदा का कोई बस शैतान पर तो चला नहीं। न वह उससे आदम को सिजदा ही करा सका था। खुदा और शैतान के घरेलू झगड़ों में गरीब बेगुनाह इन्सान की मट्टी खराब है। और खुदा बन्दों की रक्षा उससे न करे यह कितने अन्याय की बात है जो शैतान खुदा से नहीं डर सका, बल्कि उसने खुदा का डट कर मुकाबिला किया वह नाचीज इन्सान को तो हर तरह से दबा सकेगा, इसमें शक की बात नहीं है।

इम्तहान लेने में भी खुदा ने आदम को पहिले से सवालों के जवाब बता कर और फिर उन्हीं सवालों को पूंछ कर अपने को बेईमान साबित किया है। कोई भी आदमी खुदा को ईमानदार इम्तहान लेने वाला नहीं मान सकता है।

आदम को खुदा हमेशा घोर अज्ञानी (मूर्ख) ही रखना चाहता था और इसीलिये उसे ज्ञान के पेड़ का फल खाने को इन्कार कर दिया था। आदम को शैतान ने समझा कर उस पेड़ का फल खिला दिया तो आदम की आंखें खुल गईं। उसे अच्छाई और बुराई में तमीज करने की अक्ल आ गई। इसी पर खुदा आदम से भी नाराज हो गया था। यह खुदा की कमजोरी साबित करता है। उसे तो आदम पर नाराज न होकर खुश होना चाहिये था, क्योंकि आदम ज्ञानवान बन गया था।

कुरान की फरिश्तों-जिन्दों तथा शैतान और आदम की

कहानियां कुरानी खुदा को साक्षात कम समझ-गुस्से वाला, कमजोर-एकदेशीय-पक्षपाती-बेइन्साफ इन्सान बताती है। या तो कुरान ही खुदाई किताब न होकर किसी कम समझ आदमी का लिखा हुआ है और या कुरान का खुदा खुदाई के गुणों से रहित आदमी है।

सारे कुरान शरीफ में रूह (जीवात्मा) का उल्लेख केवल एक स्थान पर पारा ३० आयत २७ से ३० सूरे फजर में आता है जहां लिखा है 'ऐ इत्मीनान पाने वाली रूह ! अपने परवर्दिगार की ओर चल। तू उससे राजी और वह तुझसे राजी। फिर मेरे बन्दों में जा मिल। और मेरे बहिश्त में जा दाखिल हो।'

इन आयतों पर एक गम्भीर प्रश्न पैदा होता है। आदमी के मरजाने पर शरीर नष्ट हो जाता है, चाहे भस्म होकर या कब्र में गल कर, सब मिट्टी में मिल जाता है। और रूह निकल कर चली जाती है। वैदिक धर्म के अनुसार उसे पुनः जन्म और जगह मिलता है कुरान के अनुसार कयामत के दिन मुर्दे फिर जिन्दा होते हैं, उन जिस्मों की रूहें अपने पहिले जिस्म में दाखिल होकर कयामत के दिन फैसले के बाद बहिश्त और दोजख में चली जाती हैं। इस तरीके से जिस्म के साथ बहिश्त दोजख में जाने की बात कुरान में सभी जगह बताई गई है। पर ऊपर की आयतों में खुदा केवल पाक रूहों को बहिश्त में दाखिल होने का आदेश दे रहा है न कि उनसे नष्ट हुए जिस्मों को। इस प्रकार कुरान में इस विषय में परस्पर विरोध नजर आता है। दुनियां के दूसरे मजहब भी जो बहिश्त (स्वर्ग) दोजख (नरक) में विश्वास करते हैं, वे केवल रूहों (जीवात्मा) का उनमें कर्मानुसार जाना मानते हैं, न कि शरीरों का।

क्यों कि नष्ट शरीरों का पुनः उत्पन्न होना बुद्धि व तर्क के विरुद्ध अनर्गल बात है जिसे इस्लाम ही केवल मानता है, और कोई नहीं।

कल्पना करो अल्लादीन नाम का मुसलमान तालाब में डूब कर मर गया और उसके जिस्म को मछलियां खा गईं। वे मछलियां पकड़ कर गांव के मुसलमान खा गये। बाद को वे मुसलमान हिन्दू हो गये और मरने पर जलाकर उनकी राख खेतों में खाद बनकर गेहूं, जौ की फसल में बदल गई। इसे पचासों आदमी खा गये तो कयामत के दिन अल्लादीन पहिला जिस्म कहां से पैदा होकर अपने 'कर्मों की शहादत खुदा को देगा? यह प्रश्न है जिसका कुरान भक्तों को उत्तर सोचना चाहिये।

नवां अध्याय

कुरान में छः मुहम्मद की बीबियां और खुदा

(खुदा और मुहम्मद साहब की बीबियों का निम्न वर्णन कुरान में मिलता है।)

'और जब पैगम्बर ने अपनी बीबियों में से किसी से एक बात चुपके से कही और जब उसने उसकी खबर करदी और खुदा ने उस पर इस बात को जाहिर कर दिया तो पैगम्बर ने कुछ कहा और कुछ टाल दिया। फिर जब वह उस बीबी को

जता दिया तो वह बोली, तुझको यह किसने बताया। वह बोला मुझको उस खबरदार करने वाले ने बताया है।३। अगर तुम दोनों (हिफसह और आयश) अल्लाह की तरफ तोबा करो क्योंकि तुम दोनों के दिल टेढ़े हो गये हैं, और जो तुम दोनों पैगम्बर पर चढ़ाई करोगी तो अल्लाह और जिब्राईल और नेक ईमान वाले उसके दोस्त हैं और उसके बाद फिरिश्ते उसके मददगार हैं।४। अगर पैगम्बर तुम सबको तलाक (छोड़) दे तो अजब नहीं कि उसका परवदिगार तुम्हारे बदले उसको तुमसे अच्छी बीबियां दे। जो ईमान वाली, हुक्म उठाने वाली, तोबा करने वाली, नमाज में खड़ी होने वाली, बन्दगी बजा लाने वाली, रोजह रखने वाली, ब्याही हुई और क्वारी हों।'

।५। कु० सू० तहरीम पा० २८।

'ए पैगम्बर ! अपनी बीबियों से कह दो कि अगर तुम दुनियां का जीना या यहां की रौनक चाहतो हो तो मैं तुम्हें दिला कर अच्छी तरह से बिदा करदूं।२८। और अगर तुम खुदा और उसके पैगम्बर और कयामत के घर को चाहने वाली हो तो तुम में से जो नेकी पर हैं उनके लिये खुदा ने बड़े फल तैयार कर रखे हैं।२९। ए पैगम्बर की बीबियो ! तुममें से जो कोई जाहिरा बदकारी करेंगी, उसके लिये दोहरी सजा की जायगी और अल्लाह के नजदीक यह मामूली बात है।'

।।३०।। कु० सू० अजहान पा० २२ ।।

'ए पैगम्बर की बीबियो ! तुम और औरतों की तरह नहीं हो। अगर तुमको परहेजगारी मंजूर है तो दबी जवान (किसी) के साथ बात न किया करो। (कि ऐसा करोगी) तो जिसके दिल में (किसी तरह की) खोटाई है वह तुमसे (किसी तरह की) आशा पैदा कर लेगी और तुम माकूल बात कहो

।३२। और अपने घरों में ठहरो और अपना बनाव शृङ्गार वगैरह न दिखाती फिरो जैसा पहिले नादानी के वक्त में दिखाने का दस्तूर था और नमाज पढ़ो, जकात दो, और अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा मानो···।३२। और जब तू (ऐ मुहम्मद) उस (जैद) से जिस पर अल्लाह ने और तूने कृपा की कहता था कि तू अपनी जोरू उसके पास रहने दे और अल्लाह से डर और तू अपने दिल में उस बात को छिपाता था, अल्लाह जिसे जाहिर किया चाहता था।···पस जब जैद ने (तलाक दी) तो हमने मुहम्मद तेरा निकाह उस औरत (जैनब) से कर दिया ताकि मुसलमानों को अपने मुंह बनाये बेटों (दत्तक पुत्रों) की जोरुओं से निकाह कर लेना पाप न रहे, जबकि उसे छोड़ दे और उससे अपना सम्बन्ध तोड़दे और यह खुदा ही का हुक्म था।३७। ऐ पैगम्बर! हमने तेरी वह बीबियां तुझ पर हलाल कीं जिनके मिहर तू दे चुका है और लोंडियां जिन्हें अल्लाह तेरी तरफ लाया और तेरे चचा की बेटियां और तेरी बुआ की बेटियां और तेरे मामा की बेटियां और तेरी मौसियों की बेटियां जो तेरे साथ देश त्याग कर आई हैं, और वह मुसलमान औरतें जिन्होंने अपने को पैगम्बर को दे दिया। (वे मिहर निकाह में आना चाहे) बशर्ते कि पैगम्बर भी उनके साथ निकाह करना चाहे। यह हुक्म खास तेरे ही लिये है, सब मुसलमानों के लिये नहीं···'।५०।

'अपनी बीबियों में से जिसको चाहो अलग रखो, जिसको चाहो अपने पास रखो और जिनको तुमने अलग कर दिया था इनमें से किसी को फिर बुलवा लो तो तुम पर कोई पाप नहीं। यह इस लिये कि बहुधा तुम्हारी बीबियों की आंखें ठंडी रहें और उदास न हों और जो तुम उनको दे दो उसे लेकर सब

राजी रहें···।।५१।। मुसलमानो ! पैगम्बर के घरों में न जाया करो, मगर यह कि तुमको खाने के लिये (आने की) इजाजत दी जाये कि तुमको खाना तैयार होने की राह न देखनी पड़े, मगर जब तुम बुलाये जाओ तब आओ, और जब खा चुको तो अपनी-अपनी राह लो और बातों में न लग जाओ, इससे पैगम्बर को दुःख होता है और पैगम्बर तुमसे शरमाते हैं और अल्लाह ठीक बात बताने में शर्म नहीं करता। और जब पैगम्बर की बीबियों से तुम्हें कोई वस्तु माँगनी हो तो पर्दे के बाहर खड़े होकर उसे मांगो। इससे तुम्हारे और उनकी औरतों के दिल पाक रहेंगे, और तुम्हें योग्य नहीं कि खुदा के पैगम्बर को दुःख दो और न, यह मुनासिब (योग्य) है कि पैगम्बर के बाद कभी उनको बीबियों से निकाह करो। खुदा के यहां यह बड़ा पाप है।५३। कु० सू० अहजाव पा० २२।

समीक्षा- कुरान शरीफ में खुदा की दशा मौहम्मद साहब के घरेलू मैनेजर की सी है। वह उनकी बीबियों का इन्तजाम कुरन्दा दिखाई देता है। उनको नसीहतें देता था, धमकाता था, मौहम्मद साहब के लिये नई बीबियों का प्रबन्ध करने की धमकी उनकी बीबियों को देता था। मुसलमानों को उनके घर म न जाने का उपदेश देकर उनकी परदा नशीनी की हिफाजत करता था। उनकी बीबियों की निजी बातों की खबर मौहम्मद तक पहुँचाया करता था। क्योंकि मुहम्मद साहब उनकी दुनियांवी जरूरतों को पूरा नहीं कर पाते थे, इसलिये खुदा बीबियों को बहिश्त की खुशी का लालच देकर दुनियाँ की चीजों की तरफ से उनका दिल हटाया करता था। बनाव श्रङ्गार करके दूसरों को न दिखाने का उपदेश देता था। उनकी लौडियों, मुहम्मद साहब की चचा जात बहिनें बुआयें

और मौसिआत बेटियों से निकाह करके अपनी ख्वाहिशों को पूरी करने की खास रियायत भी देता था जोकि और मुसलमानों के लिये कुरान सूरे निसा पारा ४ में आयत २३ में हराम की जा चुकी है। मुहम्मद साहब के लिये खुदा ने सारे कानून खतम कर दिये थे। एकबार मौहम्मद साहब की नजर अपने गोद रखे बेटे जैद की खूब सूरत बीबी पर पड़ गई और वे उसे चाहने लगे। तो खुदा ने फौरन लपक कर उनकी मदद की जैद ने यह देखकर कि पैगम्बर की तबियत उसकी बीबी पर है, उसे तलाक दे दी, तो मौहम्मद साहब ने उससे निकाह कर लिया और फौरन बेटे की बहू से निकाह करने को जायज बनाने वाली आयतें खुदा ने (या खुदा के नाम से मुहम्मद साहब ने) गढ़ कर कुरान में लिखदी जोकि ऊपर कु० सू० अहजाब पा० २२ में आयत ३७ में लिखा है। खुदा को मुहम्मद की सभी बीबियों की आंखें ठंडी रहें, इसकी भी फिक्र रहती थी अतः उसने मुहम्मद से उन सभी को कभी २ पास बुलाते रहने को भी कहा था। तात्पर्य यह है कि मुहम्मद का खुदा पर पूरा अधिकार था। वह जब जो कुछ चाहते थे खुदा से करा लेते थे या खुदा के नाम पर उसकी ओर से खुद शायरी करके कुरान में आयतें लिख देते थे।

कुरान पा० १० सूरे अन्फाल में आयत ६४ में लिखा हैं कि 'ऐ पैगम्बर ! अल्लाह और मुसलमान जो तुम्हारे आज्ञाकारी हैं तुमको काफी हैं।' इसमें साफतौर से अल्लाह को मुहम्मद का आज्ञाकारी लिखा है। यदि ऐसी बात थी तब तो मुहम्मद का दर्जा अल्लाह से भी बड़ा साबित है। और इसी लिये जब भी जैसी भी इच्छा मुहम्मद साहब करते थे, खुदा उसे पूरी कर दिया करता था। उनकी मर्जी के मुताबिक आयतें फौरन

उतार देता था। वास्तव में सारा कुरान ऐसी ही बातों से भरा पड़ा है। इसमें ज्ञान विज्ञान की एक भी बात नहीं है। मुहम्मद, उनकी बीबियों, फरिश्तों, मूसा, नूह, लूत के किस्से बहिश्त दोजख व कयामत की बेतुकी निरर्थक कथाओं की भरमार इसमें है और कुछ नहीं है। कोई अक्लमन्द आदमी सोच भी नहीं सकता है कि किसी इलहामी पुस्तक में किसी की बीबियों के किस्सों के लिखने से क्या मतलब है। उसमें तो दुनियां के लिये उत्तमोत्तम शिक्षायें ज्ञान विज्ञान की ऊंची बातें होनी चाहिये न कि किसी के घरेलू झगड़ों का उल्लेख होवे।

दसवां अध्याय

कुरान में बीबियां और तलाक

(बीबियां और तलाक के बारे में कुरान का निम्न वर्णन द्रष्टव्य है)

'तुम्हारी बीबियां तुम्हारी खेतियां हैं। अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ···।२२३। जो लोग अपनी बीबियों के पास जाने की कसम खा बैठे हैं उनको चार महीने की मौहलत है। फिर (अगर इस मुद्दत में) मिल जावें तो अल्लाह बख्शने वाला मेहरवान है।२२६। और अगर तलाक की ठान लें तो अल्लाह सुनता जानता है।२२७। और जिन औरतों को तलाक दो गई हो वह अपने आपको तीन दफा कपड़ों के आने तक निकाह से रोके रखें और अगर अल्लाह और कयामत का यकीन रखती

है, तो जो कुछ भी अल्लाह ने उनके पेट में (बच्चा) पैदा कर रखा है, उसका छिपाना उनको जायज नहीं, और उनके पति उनको अच्छी तरह रखना चाहें तो वह इस बीच में उनको वापिस लेने का हकदार है···।२२८। तलाक दो दफा करके दी जाय, फिर दस्तूर के मुताबिक रखना या अच्छे बर्ताव के साथ रुखसत कर देना और जो तुम उनको दे चुके उसमें से तुमको कुछ भी लेना जायज नहीं···(मगर) औरत (अपना पीछा छुड़ाने के एवज) कुछ दे निकले तो इसमें दोनों पर कुछ पाप नहीं···।२२९। अब अगर औरत को (तीसरी बार) तलाक दे दी तो इसके बाद जब तक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न करले, उसके लिये हलाल नहीं (हो सकती) हां अगर उसका दूसरा पति उससे विषय भोग करके तलाक दे दे तो दोनों मियां बीबी पर कुछ पाप नहीं कि फिर दूसरे से (परस्पर) प्रेम करले, बशर्ते कि दोनों को आशा हो कि अल्लाह की बंधी हुई हद्दों पर कायम रह सकेंगे···।२३०। और जब तुमने औरतों को (दो बार) तलाक दे दी और उनकी मुद्दत पूरी होने को आई तो दस्तूर के मुताबिक उनको रखो या उनको (तीसरी तलाक देकर) उनको रुखसत करदो···।२३१। और तुम में से जो लोग मर जांय और बीबी छोड़ मरें तो (औरतों को चाहिये) चार महीने दस दिन अपने को रोके रहें, फिर जब उनकी मुद्दत पूरी हो जाय तो जायज तौर पर जो कुछ अपने हक में करें उसका तुम पर कुछ पाप नहीं···।२३४। अगर तुमने औरतों के साथ हम बिस्तरी न किया हो और उनका मिहर न ठहराया हो, इससे पहिले उनको तलाक दे दो तो उसमें तुम पर कोई पाप नहीं ।२३६। और अगर हमबिस्तर होने के पहिले और मिहर ठहराने के बाद औरत को तलाक दे दो तो जो कुछ तुमने ठहराया था उसका आधा देना चाहिये, मगर

यह कि औरतें छोड़ बैठें मर्द जिनके हाथ में निकाह का करार (कायम रखना) है वह (अपना हक) छोड़ दें (यानी पूरा मिहर देने पर राजी हों) तो यह परहेजगारी से ज्यादा करीब है।'*

॥२३७॥ कु० सू० बकर पा० २ ॥

'अगर तुमको इस बात का डर हो कि बे सहारा लड़कियों में इन्साफ कायम न रख सकोगे तो अपनी इच्छा के अनुकूल दे दो और तीन-तीन, चार-चार औरतों से निकाह करलो। लेकिन अगर तुमको इस बात का शक हो कि बराबरी न कर सकोगे तो एक ही बीबी करना। या जो तुम्हारे कब्जे में हो उस पर सन्तोष करना। यह तदबीर मुनासिब है।३। जिन औरतों के साथ तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो तुम उनके साथ निकाह न करना मगर जो हो चुका सो हो चुका। यह बड़ी शर्म और गजब की बात थी और बहुत ही बुरा दस्तूर था

---

* (नोट—तलाक का दस्तूर यह है कि जब कोई मुसलमान मर्द अपनी औरत को तलाक दे देता है तो कम से कम दो आदमियों के सामने तलाक देता है। और एक महीने के बाद दूसरी तलाक देता है। यहाँ तक तो मियां बीबी में समझौता हो सकता है। इसके एक महीना बाद तीसरी तलाक दी जाती है। इस तलाक देने के बाद फिर मर्द उस औरत के पास नहीं जा सकता। यह औरत तीन माह दस दिन बाद निकाह कर सकती है। दूसरे पति के साथ निकाह हो जाने पर अगर दूसरा पति तलाक दे दे तो सिर्फ इस हालत में कि वह दूसरे पति के साथ सम्भोग कर चुकी हो, अपने पूर्व पति के साथ फिर निकाह कर सकती है। परन्तु जब तक किसी दूसरे के साथ निकाह करके विषय भोग न करले (यानी हम बिस्तर न होले) कदापि पूर्व पति से निकाह नहीं कर सकती।)

।२२। तुम्हारी मातायें बेटियां और तुम्हारी बहिनें और तुम्हारी बुआयें और तुम्हारी मौसियां और भाञ्जियां और तुम्हारी मातायें जिन्होंने तुमको दूध पिलाया और दूध शरीकी बहिनें और तुम्हारी सासें तुम पर हराम हैं। जिन औरतों के साथ तुम मुहब्बत कर चुके हो उनकी पूर्व पति से पैदा हुई लड़कियां जो तुम्हारी गोदों में परवरिश पाती हैं लेकिन अगर इन बीबियों के साथ तुमने भोग न किया हो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, और तुम्हारे बेटों की बहुऐं और दो बहिनों का एक साथ रखना भी तुम पर हराम है। मगर जो हो चुका सो हो चुका अल्लाह माफ करने वाला मिहरबान है।'

॥२३॥ कु० सू० निसा पा० ४ ॥

समीक्षा - कुरान शरीफ में दो-दो और चार-चार शादियाँ जायज बताई हैं इस पर हमें कुछ कहना नहीं है। पर यह साधारणतया व्यभिचार प्रिय लोगों को अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये खुली छूट देना ही है। तलाक का जो तरीका कुरान ने बताया है उस पर भी हमें कुछ विशेष नहीं कहना है। यह उस सम्प्रदाय की अपनी रिवाज की बात है, वह अपने यहां चाहे जैसे नियम बनावे। परन्तु एक बात हम नहीं समझ सके हैं। वह यह कि जब तीसरी तलाक हो जावे तो तीनबार मासिक धर्म होने के बाद औरत किसी गैर आदमी से जबतक निकाह करके संभोग न करा आवे और उस दूसरे पति को तलाक दे आवे तब तक पहिला पति उसे पुनः स्वीकार नहीं कर सकता है। यह दूसरे पति से 'विषय भोग करा लेने' के बाद ही पहिले पति द्वारा ग्रहण करने योग्य बनने की बात समझ में नहीं आती, कि आखिर दूसरे पति से विषय भोग करा लेने पर उस औरत में कौन सी खुशबू आने लगती है और

कौन सी पवित्रता पैदा हो जाती है जो कि बिना सम्भोग कराये नहीं होती है। यदि वह दूसरे पति से केवल निकाह करके फौरन ही उसे बिना संभोग कराये तलाक देकर आवे तो पहिला पति उसे स्वीकार नहीं कर सकता है, यह शर्त क्यों लगाई गई है? क्या इसका मतलब यह है कि दोनों ही उससे आगे लगे लिपटे रहेंगे, इस लिये यह कर्म कराना जरूरी है?

ज्यादा बढ़िया बात तो यह होती कि औरत बिना किसी गैर आदमी से मिले अपने पहिले शौहर के पास वापिस आ जाती और वह उसे पाक मानकर स्वीकार कर लेता। उसमें उसका ईमान भी खराब न होता तथा एक छोड़कर दूसरे से मिलने में जो शर्महिया नष्ट होकर आंख का पानी ढल जाता है वह भी न हो पाता। यह तो दुनियां में प्रत्यक्ष है कि जहां एक छोड़ के दूसरे का मुंह देखलिया वहां तीसरा चौथा और आगे भी सिलसिला जारी रहने का रास्ता खुल जाता है। शर्म संकोच निकल जाता है जो कि चरित्र के लिये जरूरी होता है।

अतः कुरान की यह आज्ञा व व्यवस्था बुद्धि विरुद्ध होने के साथ ही समाज में व्यभिचार फैलाने में सहायक हो रही है। वैसे तो तलाक का नियम भी समाज में गृहस्थ जीवन की पवित्रता तथा स्थायित्व को विध्वन्स करने वाली प्रथा है। मुसलमानों में कोई भी स्त्री या मर्द नहीं जानता कि न जाने दोनों में से कौन और कब एक दूसरे को तलाक देकर बरबाद कर दे। अतः वास्तविक प्रेम का अभाव रहता है। इसीलिये वैदिक धर्म में इस प्रकार की तलाक को बुरा माना गया है। यहां दाम्पत्य सम्बन्ध मरने के बाद ही भंग होता है।

कुरान में बीबियों को खेतियाँ बताना और जिस तरह चाहो उनके पास जाने का अर्थ स्पष्ट है कि मर्दों को उनके साथ प्राकृतिक और अप्राकृति तरीके से समागम करने का अधिकार दिया गया है। क्योंकि अरब में पु० मैथुन की प्रथा उस समय भी चालू थी। हर बुराई का समर्थन कुरान में मौजूद मिलेगा। उसकी यह भी विशेषता है।

ग्यारहवां अध्याय

कुरान और मांसाहार हराम तथा हलाल

(मांसाहार के बारे में कुरान में निम्न प्रकार वर्णन मिलता है)

'मैंने तुम पर बादल की छाया की और तुम पर। मन और सलवा (बटेर जैसी चिड़िया का मांस) भी उतारा और हमने जो तुमको पवित्र भोजन दिये है उनको खाओ···'।५७।

'उसने तो बस मरा हुआ (जानवर) और खून और सुअर का गोश्त और वह जानवर जिसको खुदा के सिवाय किसी और के लिये भेंट किया जाय, तुम पर हराम किया है। जो भूख से बेचैन हो परन्तु अवज्ञा करने वाला और हद से बढ़ जाने वाला न हो तो उस पर पाप नहीं। बेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरवान है'।१७३। कु० सू० बकर पा० २।

'···और जब अहराम से निकलो तो शिकार करो···।२।

मरा हुआ, लोहू और सुअर का मांस और खुदा के सिवाय किसी और के नाम पर चढ़ाया गया हो, और जो गला घोटने से मर गया हो, और जो चोट से मरा हो, और जो ऊपर से गिरकर मरा हो, और सींगों से मारा हुआ हो, यह सब चीजें तुम पर हराम करदी गई हैं और जिसको दांतों वालों ने खाया हो, मगर जिसको हलाल करलो और जो पत्थरों (काबे के आस पास वाले पत्थरों) पर जिबह (कत्ल) किया गया हो, हराम है। पांसे डालकर बांटना हराम है यह पाप का काम है।३। साफ चीजें तुम्हारे लिये हलाल हैं, और शिकारी जानवर जो तुमने शिकार के लिये सिखला रखे हों, उनके शिकार किये हुए जानवर हलाल हैं···तो जो तुम्हारे लिये (वे) पकड़ रखें उनको खालो। मगर शिकारी जानवर के छोड़ते वक्त खुदा का नाम ले लिया करो···।४। किताब वालों का खाना तुम्हारे लिये हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिये हलाल है···।'

॥५॥ कु० सू० मायदा पा० ६॥

'दरियाई शिकार और खाने की दरियाई चीजें तुम्हारे लिये हलाल की जाती हैं···और जंगल का शिकार जब तक अहराम में तुम रहो तुम पर हराम है···।'

॥९६ कु० सू० मायदा पा० ७॥

'वह चीज कि हराम तो है मगर भूख वगैर की बजह से तुम उस पर मजबूर हो जाओ तो वह भी हराम नहीं ।११९। जिस पर खुदा का नाम न लिया गया हो उसमें से मत खाओ और उसमे से खाना पाप है···।१२०। वह चीज मुर्दार हो या बहता हुआ खून हो या सुअर का मांस यह चीजें नापाक हैं या हुक्म उदूली की वजह हो या खुदा के सिवाय किसी दूसरे के नाम पर जिवह किया गया हो। उस पर भी जो शख्स लाचार

हो तो तेरा परवर्दिगार माफ करने वाला मेहरवान है ।१४५। यहूदियों पर हमने तमाम नाखून वाले जानवरों को हराम किया था और हमने गाय और बकरियों में से चरबी हराम की थी, वह चर्बी जो उनकी पीठ पर लगी हो या अंतड़ियों पर या हड्डी से मिली हो । यह हमने उनको उनकी नटखटी की सजा दी थी और हम सच्चे हैं ।१४६। कु० सू० अनआम पा० ८ ।

'वही जिसने नदी को आधीन कर दिया ताकि तुम उनमें से ताजा मांस (मछली आदि का) खाओ ।'

।१४। कु० सू० नहल पा० १४ ।

'उसने तुम पर मुर्दा को और खून को और सुअर के मांस को और उसको जो अल्लाह के सिवाय किसी और के लिये नामजद किया जाय हराम किया, फिर जो शख्स (भूख से) बेबस हो न जोर से और न ज्यादती से तो अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है' ।११५। कु० सू० नहल पा० १४ ।

'···जो तुमको कुरान से पढ़कर सुनाया जाता है वह सब चौपाये तुम पर हलाल हैं···।३०। और हमने तुम्हारे लिये कुरवानी के ऊंटों को उन चीजों में कर दिया है जो खुदा के साथ नामज़द की जाती हैं । उनमें तुम्हारे लिये फायदे हैं तो उनको खड़ा रखकर उन पर खुदा का नाम लो, फिर जब यह किसी पहलू पर गिर पड़े तो उनमें से खाओ और सब्र वालों और फकीरों को खिलाओ···।३६। खुदा तक न तो इनके गोश्त ही पहुंचते हैं और न इनके खून बल्कि उस तक तुम्हारी परहेजगारी पहुंचती है···।३७। (नोट—ऊंट के हलाल करने का तरीका यह है कि उसको काबे की ओर खड़ा करते हैं, फिर उसकी छाती पर भाला मारते हैं, ताकि उसका सारा खून निकल जावे । जब वह गिर पड़ता है तो काटते हैं ।)

।। कु० सू० हज्ज पा० १७ ।।

'और जिस मेवे और मांस को उनका जी चाहेगा हम उनको (बहिश्त में) देवेंगे' ।२२। कु० सू० तूर पा० २७ ।

समीक्षा—बुद्धिमान लोगों की निगाह में हराम वह वस्तु होती है जिसे अन्याय पूर्वक, दूसरों का दिल दुखा कर प्राप्त किया गया हो ।, जो वस्तु मानव के अथवा किसी भी प्राणी के लिये उसके स्वास्थ्य को उसकी शारीरिक, मानसिक अथवा आत्मिक (रूहानी) शक्ति को हानि पहुंचाने वाली हो, जिस चीज या बात से व्यक्ति, समाज अथवा देश को किसी भी प्रकार की हानि पहुंचने की सम्भावना होती हो तो ऐसी वस्तुऐं तथा कार्य शास्त्रों, बुद्धिमानों अथवा समाज व राष्ट्रों के द्वारा निषिद्ध (हराम) घोषित कर दिये जाते हैं । इसके विपरीत जो चीजें, बातें व्यक्ति अथवा नियम लाभकारी होते हैं उनको हलाल अर्थात् विहित बताया जाता है ।

मांसाहार शरीर के लिये सदैव हानिकारक है । वह तामसिक होता है । उससे बुद्धि तथा आत्मिक शक्ति का विकास रुक जाता है । मारे गये पशु के शरीर में जो भी विकार या रोग होते हैं, उसके मांस को खाने वाले के अन्दर वे प्रविष्ट कर जाते हैं । योगाभ्यास के मार्ग में मांसाहार घोर बाधक होता है । मानसिक शक्ति के विकास में वह रुकावट डालता है । अन्य जीवों के बध करने से मांस भोजन प्राप्त होता है अतः वह मांस भोजी तथा बधकर्ता के लिये पाप (पर पीड़न के दोष) का बन्धन पैदा करता है । दूसरों का जीवन नष्ट करने वाले सदैव जीवन में परेशान रहते हैं । उनका इहलोक के साथ परलोक भी बिगड़ जाता है ।

कुरान कहता है कि बलिदान किये हुए पशु का मांस व रक्त अल्लाह को नहीं पहुंचता है । तो फिर अल्लाह के नाम

पर प्राणियों की हत्या हो क्यों की जाती है ? क्या अल्लाह इन्सान की तरह सभी जीवों का पिता नहीं है ? क्या सभी जीवों को चोट लगने पर इन्सान की ही तरह पीड़ा, दुःख अनुभव नहीं होता है ? क्या हर जीव अपने मां बाप व बच्चों से प्रेम नहीं करता है और क्या उनके मरने पर वह प्रत्यक्ष में दुःखी होता नहीं दीखता है ? तो जब हर प्राणी परमात्मा (अल्लाह) का बेटा है, हर प्राणी समान दुःख सुख का अनुभव करता है, हर प्राणी अपनी भाषा में अथवा अपने तरीकों से अपने मनोभावों का मनुष्यों की ही तरह अपने साथियों पर प्रकाश करता है, तब किसी भी मनुष्य को दूसरों के साथ हृदय हीन बनकर उनकी हत्या करने का क्या अधिकार है। उनको भी दुनियां में जीने का अधिकार क्यों नहीं है ? यदि यह कहा जाये कि सारे पशुपक्षी मनुष्यों के भोजन के लिये पैदा किये गये हैं तो मनुष्य भी पशुओं के भोजन के लिये ही बनाया गया क्यों न माना जावे ? क्या अशरफुल्मखलूकात बनने वाले इन्सान की यह ज्यादती व हिमाकत नहीं है कि वह कमजोरों पर अपना पेट भरने के लिये जुल्म करता है उनको मारकर खाता जाता है। इन्सानियत तो उसकी तब देखी जाती है जब वह गरीबों और कमजोरों पर दया करता है, उनकी परवरिश करता है, दुखदर्द में उनका साथी बनता है और उनकी रक्षा करके उनको भी अपनी तरह जीवित रहने का अधिकार देता है।

कुरान में मांसाहार का समर्थन करके भारी गुनाह किया है। कुरान ईश्वरीय पुस्तक हरगिज नहीं हो सकती है, मांसाहार का समर्थन करना उस पर महान कलंक है। जो खुदा संसार के प्राणियों पर दया करना नहीं बताता है न तो वह खुदा माना जा सकता है और न ऐसी किताब खुदाई किताब मानी जा सकती है।

कुरान की बातें भी बेतुकी हैं। जो चीज हराम है, केवल खुदा का नाम उस पर ले लेने से वह हलाल कैसे हो जाती है। जो चीज हानिकारक है वह केवल किसी का नाम ले लेने मात्र से अपना दुर्मुख कैसे छोड देगी। संखिया अल्लाह का नाम ले लेने मात्र से अपना विषैला प्रभाव त्याग दे, आग अल्लाह का नाम ले लेने मात्र से जलाना त्याग दे यह कैसे संभव हो सकता है। अशुद्ध चीज शोधन करने के संस्कार चिकित्सा शास्त्र के अनुसार करने पर तो शुद्ध होकर लाभकारी बन सकती है पर अल्लाहमियां के नाम ले लेने से उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता है। अतः कुरान का अल्लाह का नाम लेने मात्र से हराम को हलाल बनाने का नुस्खा लोगों को धोखा देने वाला तथा मिथ्या है। साथ ही कुरान के इस तर्क में भी कोई वजन (बल) नहीं है कि खुदा के नाम पर की गई हत्या हलाल है और दूसरे किसी के नाम पर की गई हत्या हराम है। हत्या चाहे किसी के भी नाम पर की जावे, उसमें कोई फर्क नहीं आता है और न मारे हुए पशु के गोश्त में कोई खूबी या खराबी किसी का नाम लेकर हत्या करने से पैदा होती है। कुरान की उक्त व्यवस्था भी मजहबी ढोंग का प्रचार लोगों में करने के लिये है। उसकी दलील में कोई अक्ल की बात नहीं है।

कुछ जानवरों के गोश्त को कुरान हराम बताता है और साथ ही यह भी लिख देता है कि अगर मजबूरी हो तो उसे भी खालो वह भी हलाल हो जाता है। इसके साफ मानी यह हैं कि वास्तब में वह न हराम है और न हलाल है। जहां तक हो उसे न खावें और ज्यादा जरूरत हो तो खा भी लें, कोई पाप की बात नहीं है। कुरान को इतना लचकीला कानून नहीं बनाना चाहिये था। यदि इसी बात को सभी जगह लागू किया

जावे तो कुछ भी पाप पुण्य नहीं रहेगा। हर गुनाह, जरूरत पर जायज हो जावेगा। लोग गुनाहों से हरगिज नहीं डरेंगे। कानून एक बात को नाजायज बताता है तो वह बात नाजायज ही रहती है। उसे करने वाले जुर्म के भागीदार होते हैं, और लोग उससे डरते हैं। पर ऐसे कुरानी कानून की कोई कीमत नहीं हो सकती है जो हराम को हलाल बनाने का अधिकार भी मनुष्यों के दे दे और अल्लाह के नाम को लेकर हराम को हलाल बनाने का सरल सा नुस्खा भी खुद ही बता दे।

अपने को कुरान के अनुसार खुदा अपनी बात का पक्का बताता है तो यहूदियों पर चरबी व नाखून वाले जानवर उनसे नाराज होकर क्यों हराम कर दिये थे और मुसलमानों पर उन्हें क्यों हलाल कर दिया गया, यह उसने नहीं बताया। जबकि इन्सान को अपनी जिन्दगी में अपनी इच्छा के अनुसार कर्म करने देने का खुदा का वायदा है तो फिर उनको कयामत से पहिले सजा क्यों दे डाली गई जो चीज हराम की थी तो उसे यहूदी, मुसलमान, ईसाई वगैरः सभी पर हमेशा को हराम ही रखना था। क्या खुदा भी किसी से दुश्मनी और किसी से दोस्ती रखता है ? ऐसा आदमी हरगिज खुदाई के लायक नहीं है। मुसलमानों को चाहिये कि ऐसे खुदा को दूर से सलाम कर दें। जो अपने वायदे और कानून का भी पाबन्द खुद नहीं है उसकी बात का क्या भरोसा है।

कुरान में खुदा ने वायदा किया है कि बहिश्ती मुसलमानों को बहिश्त में भी मांस मुहय्या किया जावेगा पर यह नहीं बताया कि ऊंट-घोड़े तथा पक्षी जिनका माँस पकाया जावेगा वे बहिश्त के ही रहने वाले होंगे अथवा अरब और पाकिस्तान से गोश्त हवाई जहाजों से बहिश्त में परमिट से भेजा जाया करेगा ? अगर बहिश्ती जानवरों का होगा तो बहिश्त में

मनहूस जानवर और परिन्दे कैसे पहुंचेंगे क्योंकि वे मुसलमान तो होंगे नहीं। क्योंकि बहिश्त सिर्फ मुसलमानों के ही लिये होगी ? इस गुत्थी का समाधान मुसलमानों से पूछना चाहिये।

बारहवां अध्याय
कुरान और ईसामसीह

(हजरत ईसामसीह के बारे में कुरान में निम्न वर्णन मिलता है)

'मरियम के बेटे ईसा को (भी) हमने खुले करामात दिये और पाक रूह (यानी जिब्रील) से उनकी मदद की।'

॥८७॥ कु० सू० बकर पा० १॥

'अभी जबरिया कोठे में खड़े हुआ मांग ही रहे थे कि उनको फरिश्तों ने आवाज दी कि खुदा तुमको (एक पुत्र) यहिया (के पैदा होने) की खुशखबरी देता है और वह खुदा के हुक्म से मसीह की तसदीक करेंगे और पेशवा होंगे और औरतों की सगत से रुकेंगे और नेक बन्दों में से वे पैगम्बर होंगे।३९। जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरियम ! खुदा तुमको अपने हुक्म की खुशखबरी देता है (तुम्हारे पुत्र होगा) उसका नाम होगा ईसामसीह मरियम का बेटा-लोक और परलोक दोनों में इज्जत वाला और (खुदा के) नजदीकी बन्दों में से होगा।४५। झूले में और बड़ी उम्र का होकर (भी एक समान) लोगों के

साथ बातचीत करेगा और नेक बन्दों में से होगा।४६। वह कहने लगी कि ऐ परवदिगार ! मेरे कैसे लड़का हो सकता है हालांकि मुझको तो किसी मर्द ने छुआ तक नहीं (अल्लाह ने) फरमाया कि इसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसे फरमा देता है कि हो 'कुन' और वह हो जाता है।'

॥४७॥ कु० सू० आल इमरान पा० ३॥

'और उनके इस कहने की वजह से कि हमने मरियम के बेटे ईसामसीह को जो रसूल थे कत्ल कर डाला और न तो उन्होंने उनको कत्ल किया और न उनको सूली पर चढ़ाया मगर उनको ऐसा ही मालूम हुआ और वे लोग तो···इस मामले में शक में पड़े हैं। और इनको इसकी खबर तो है नहीं··· यकीनन ईसा को लोगों ने कत्ल नहीं किया।१५७। 'बल्कि उनको अल्लाह ने अपनी तरफ उठा लिया और अल्लाह जबर्दस्त हिकमत वाला है।१५८। जितने किताब वाले हैं जरूर उनके मरने से पहिले सबके सब उस पर ईमान लावेंगे और कयामत के दिन ईसा उनका गवाह होगा।१५९। मरियम के बेटे ईसामसीह बस अल्लाह के पैगम्बर हैं और खुदा का हुक्म जो उसने मरियम की तरफ कहला भेजा था और आत्मा खास अल्लाह की तरफ से आई। पस अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और तीन खुदा न कहो, मान जाओ तुम्हारा भला होगा। अल्लाह एक है वह इस लायक नहीं कि उसके कोई सन्तान हो···।१७१।' मसीह को खुदा का बन्दा होने में कदापि लज्जा नहीं···।१७२। कु० सू० निसा पा० ६॥

'जो लोग मरियम के बेटे को खुदा कहते हैं वही काफिर हैं। ऐ पैगम्बर लोगों से कहो कि अगर अल्लाह मरियम के

बेटे मसीह को और उनकी माता को और जितने लोग ज़मीन में हैं सबको मार डालना चाहें तो ऐसा कौन है जो उसकी इच्छा को रोके···।१७। कु० सू० मायदा पा० ६।।

"उस दिन अल्लाह कहेगा कि ऐ मरियम के बेटे ईसा ! हमने तुमपर और तुम्हारी माता पर जो जो अहसान किये हैं याद करो जब कि हमने पाक रूह से तुम्हारी सहायता की गोंद में और बड़े होकर भी तुम लोगों से बातचीत करते थे और जब कि हमने तुमको किताब और बुद्धिमानी और तौरात और इञ्जील दिखलाई और जब कि तुम हमारे हुक्म से चिड़िया की सूरत मिट्टी से बनाते फिर उसमें फूंक मार देते तो वह हमारे हुक्म से पक्षी बन जाता और जब तुम जन्म के अन्धे और कोढ़ी को हमारे हुक्म से चंगा कर देते और जब कि तुम हमारे हुक्म से मुर्दों को निकाल खड़ा करते और जब कि हमने याकूब के बेटे को (तुम्हारे मार डालने से) रोका··· ११०। जब हवारियों ने दरख्वास्त की कि ऐ मरियम के बेटे ईसा ! क्या तुम्हारे पालन कर्ता से हो सकेगा कि हम पर आसमान से एक थाल उतारे ।११२। ईसा मरियम के बेटे ने कहा कि ऐ अल्लाह हमारे परवर्दिगार ! हम पर आसमान से एक थाल उतार··· ।११४। अल्लाह ने कहा बेशक हम वह थाल तुम लोगों पर उतारेंगे···।११५। उस दिन अल्लाह पूछेगा कि ऐ मरियम के बेटे ईसा, क्या तुमने लोगों से यह बात कही थी कि खुदा के अलावा मुझको और मेरी मां को दो खुदा मानो···बोला मुझसे क्यों कर ऐसा हो सकता है कि मैं ऐसी बात कहूं जिसे कहने का मुझे कोई अधिकार नहीं···।···

११६। कु० सू० मायदा पा० ७।

"(ऐ पैगम्बर) कुरान में मरियम का जिक्र करो कि जब

वह अपने लोगों से जुदा होकर पूरब की तरफ जा बैठी ।१६। और लोगों की तरफ से पर्दा कर लिया तो हमने अपनी रूह को उसकी तरफ भेजा फिर हमारी आत्मा पूरा मनुष्य बनकर उसके सामने आई ।१७। मरियम कहने लगी अगर तुम परहेजगार हो तो मैं खुदा की शरण चाहती हूं ।१८। बोले कि मैं तेरे परवर्दिगार का भेजा हुआ (फरिश्ता) हूं, इसलिये (आया हूं) कि तुमको एक पाक लड़का दे जाऊं ।१९। वह बोली कि मेरे यहां लड़का कैसे हो सकता है जब कि मुझे किसी मर्द ने नहीं छूआ और मैं कभी बदकार नहीं रही ।२०। (शुद्धात्मा ने) कहा ऐसा ही तुम्हारा परवर्दिगार कहता है कि यह मामला मुझ पर आसान है और लोगों के लिये हम एक निशानी और दया अपनी तरफ से किया चाहते हैं और यह काम पहिले से ठहर चुका है ।२१। इस पर मरियम के गर्भ रह गया और वह फिर गर्भ लेकर कहीं अलग दूर के मकान में जा बैठी ।२२। फिर उसको एक खजूर के पेड़ की जड़ के पास जनने का दर्द उठा (मरियम ने) कहा अगर मैं इससे पहिले मर चुकी होती और भूली बिसरी हो गई होती ।२३। फिर उसको उसके नीचे से आवाज आई कि उदास न हो तेरे परवदिगार ने तेरे नीचे एक चश्मा बहा दिया है ।२४। खजूर की डाली को अपनी तरफ हिलाओ उससे तेरे लिए पक्के खजूर गिरेंगे ।२५। फिर खाओ और चश्मे का पानी पियो और (बेटे को देखकर आंखें ठंडी करो) फिर कोई आदमी दिखलाई पड़े और वह तुझसे पूंछे तो इशारे से कह देना कि मैंने रहमान (दयालु) का रोजा रखा है। सो मैं आज किसी आदमी से न बोलूंगी ।२६। फिर मरियम लड़के को गोद में लिये अपनी जाति के लोगों के पास आई ।२७। हारू की बहिन, न तो तेरा बापही बदकार था न तेरी माता ही बदचलन थीं ।२८। तो

मरियम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया (कि जो कुछ पूंछना है इससे पूंछलो) वह कहने लगे कि हम गोद के बच्चे से कैसे बात करें।२९। इस पर बच्चा बोला कि मैं अल्लाह का सेवक हूं, उसने मुझको किताब (इञ्जील) दी और मुझको पैगम्बर बनाया।३०। और कहीं भी रहूं मुझको बरकत दी और मुझको आजादी जब तक जिन्दा रहूँ नमाज पढ़ूं और ज़कात दूं।३१। और मुझको अपनी मां का सेवक बनाया।३२। और मुझ पर सलाम है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूंगा और जिस दिन दुबारा जिन्दा उठ खड़ा होऊंगा।३३। और सलाम है उस दिन पर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन दुबारा जिन्दा होगा।

॥५॥ कु० सू० मरियम पा० १६॥

'और वह बीबी (मरियम) जिसने अपनी शर्मगाह यानी शिहबत की जगह की हिफाजत की तो हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और हमने उसको और उसके बेटे (ईसा) को दुनियां जहान के लोगों के लिये निशानी करार दिया।

॥९१॥ कु० सू० अम्बिया पा० १७॥

समीक्षा – ईसामसीह के जन्म की यह कथा बाइबिल की कथा से भिन्न है। बाइबिल के अनुसार जब मरियम की शादी करके यूसुफ लाया था तो वह पिता के घर से ही गर्भवती आई थी, फिर चाहे वह किसी मर्द से गर्भवती हुई हो या खुदा के फरिश्ते से हुई हो, इस पर विवाद नहीं है। पर कुरान ने मरियम की शादी से भी इन्कार कर दिया है। वह बताता है कि मरियम के बाप के ही घर पर बेटा फरिश्ते से पैदा हो गया था। हमारे विचार से कुरान की बात के मुकाबिले में बाइबिल की बात ज्यादा माननीय है, क्यों कि वही ईसाई मत

की धर्म पुस्तक है और कुरान से लगभग ६०० वर्ष पहिले बनी बताई जाती है।

ईसा का पैदा होते ही लोगों से बातें करना, मुर्दों को जिन्दा करना आदि बातें ईसा का महत्व बढ़ाने के लिये बाद को कल्पित किये गये चमत्कार हैं। चमत्कारों की कल्पना करके महा पुरुषों के जीवन चरित्रों में यदि न जोड़ा जाता तो साधारण लोग उनको अपने से महान पुरुष, पैगम्बर आदि मानने को तैयार नहीं होते। ऐसा प्रायः सभी मतावलम्बी लोगों ने अपने मत प्रवर्तक महापुरुषों को बड़ा (महान) सिद्ध करने को किया है और करते हैं।

कुरान में ईसा के बारे में अनेक बातें बाइविल से उधार ली हैं और इनको खुदा की ओर से लिखा गया है। ईसा के मर कर कब्र में से जिन्दा होकर खुदा के पास चले जाने की बात भी बाइविल की ही नकल है। ईसाई लोग तीन खुदा (ईसा, पवित्रात्मा तथा खुदा) मानते हैं। कुरान ने ईसा व पवित्रात्मा को खुदा मानने का निषेध किया है। केवल एक खुदा माना है कयामत और उस दिन ईसा की गवाही की बात बाइविल में से कुरान ने ज्यों की त्यों ले ली है। आसमान से भोजन का थाल उतरना भी बाइविल से उधार लिया है। मुहम्मद साहब को पैगम्बर साबित करने के लिये ईसा-मूसा को भी पैगम्बर माना गया है। कुरान को खुदाई किताब बताने के लिये बाइविल व तौरेत को भी इलहाम माना गया है। अन्यथा दूसरे लोग मुहम्मद व कुरान के विरोधी बन जाते। यह सब चतुराई की बातें रही हैं। कुरानकार की नीति रही है कि तुम भी पैगम्बर और हम भी पैगम्बर। तुम्हारी भी किताबें खुदाई और हमारा कुरान भी खुदाई। तुम हमारा

विरोध करो, न हम तुम्हारा विरोध करते हैं। और इसी तरह इस्लाम का प्रचार हो सका है। खुदा के पैगम्बर बनकर ही लोगों ने अपने मजहब चलाये थे, मुहम्मद साहब ने भी ठीक वही लाइन पकड़ कर अपना मजहब चला दिया था। यही इस्लाम की विशेषता है।

तेरहवां अध्याय

कुरान और हजरत मूसा

(हजरत मूसा के बारे में कुरान शरीफ में निम्न प्रकार वर्णन मिलता है)

'मूसा ने कहा कि ए फिरऔन ! मैं दुनियां के परवदिगार का भेजा हुआ हूँ ॥१०५॥...मैं तुम लोगों के पास तुम्हारे परवदिगार से करामात लेकर आया हूँ...॥॥०५॥ (फिरऔन) बोला कि अगर तू कोई करामात लेकर आया है, सच्चा है, तो वह लाकर दिखा ॥१०६॥ इस पर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी, तो क्या देखते हैं कि वह जाहिरा एक अजगर होगई ॥१७॥ और अपना हाथ निकाला तो वह सफेद दिखाई देने लगा ॥१०८॥ फिरऔन के लोगों में से जो दरबारी थे कहने लगे कि यह तो बड़ा होशियार जादूगर है ॥१०९॥ चाहता है कि तुमको तुम्हारे देश से निकाल बाहर करे तो क्या राय देते हो ॥११०॥ सबने मिलकर कहा कि मूसा और उसके भाई हारू को इस वक्त ढील दे और गांवों में कुछ हलकारे भेजिये ॥१११॥

कि तमाम जादूगरों को आपके सामने ला हाजिर करें ॥११२॥ निदान जादूगर फिरऔन के पास हाजिर हुए, और कहने लगे कि अगर हम जीत जांय तो हमको इनाम मिलना चाहिये। ॥११३॥ जादूगरों ने कहा ऐ मूसा! या तो तुम (अपना डन्डा) लाकर डालो और या हम ही डालें ॥११५॥ मूसा ने कहा तुम ही डालो। जब उन्होंने (अपनी लाठियां और रस्सियां) डाल दी (कि चारों तरफ सांप ही सांप दिखाई पड़ने लगे) और उनको भय में डाल दिया और बड़ा जादू लाये ॥११६॥ और हमने मूसा की तरफ खुदाई पैगाम भेजा कि तुम भी अपना लाठी डाल दो (मूसा ने) लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि जादूगरों ने जो झूठमूठ बना खड़ा किया था उसको वह लीलने लगा ॥११७॥ पस फिरऔन और उसके लोग अखाड़े में हारे और जलील हो गये ॥११९॥ कु० पारा ९ सू० आराफ ॥

'(खुदा ने कहा) और मूसा तुम्हारे दाहिने हाथ में यह क्या है ॥११७॥ मूसा ने कहा यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लगाता हूँ, और इसीसे अपनी बकरियों के लिये पत्ती झाड़ता हूँ और इसमें मेरे और भी मतलब हैं ॥१८॥ फर्माया, ऐ मूसा उसको जमीन पर डाल दे ॥१९॥ चुनाचे मूसा ने लाठी डाल दी तो देखते क्या हैं कि वह एक भागता हुआ सांप बन गई ॥२०॥ फर्माया इसे पकड़ लो और डरो मत, हम इसकी फिर वही पहिली हालत कर देंगे ॥२१॥ और अपने हाथ को सिकोड़ कर अपनी बगल में रख लो और फिर निकालो तो वह बिना किसी तरह की बुराई के सफेद निकलेगा, यह दूसरा चमत्कार है ॥२२॥ कु० सू० ताहा पा० १६॥

'मूसा ने (फिरऔन बादशाह से) कहा अगर मैं तुझको एक खुला चमत्कार दिखाऊं ॥३०॥ (फिरऔन ने) कहा अगर तू

सच्चा है तो ला दिखा ।।३१।। इस पर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह एक जाहिरा सांप है ।।३२।। और अपना हाथ बाहर निकाला तो निकालने के साथ सब देखने वालों की नजर में बड़ा चमक रहा था ।३३। (नोट–इसके आगे जादूगरों वाली ऊपर की कहानी पुनः दी है) और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि हमारे बन्दों (इसाइल की सन्तान) को रातोंरात निकाल लेजा (क्योंकि) तुम्हारा पीछा किया जावेगा ।५२। तो दिन निकलते २ फिरऔन के लोगों ने इसाइल के बेटों का पीछा किया ।६०। फिर हमने मूसा को हुक्म दिया कि अपनी लाठी दरिया पर दे मारो। चुनाचे (मूसा ने दे मारी) दरिया फट गया और हर एक टुकड़ा गोया एक बड़ा पहाड़ था ।६३। और हमने मूसा और जो लोग उनके पास थे बचा लिया (यानी वे दरिया के पार चले गये) ।६५। फिर दूसरों (फिरऔन वालों) को डुबो दिया ।६६। इसमें एक चमत्कार है और फिरऔन के लोगों में से अक्सर ईमान लाने वाले न थे।

।।६७।। कु० सू० शुअरा पा० १९।।

'(ऐ मूसा) मैं जोरावर हिकमत वाला अल्लाह हूँ ।९। और अपनी लाठी डाल। तो जब (मूसा) ने देखा कि लाठी चल रही है मानिन्द जिन्दा सांप के तो पीठ फेर कर भागे और पीछे न देखा। (हमने फर्माया) मूसा डरो मत, हमारे पैगम्बर डरा नहीं करते ।१०। और अपना हाथ अपनी छाती पर रख फिर निकालो तो वह बे रोग सफेद निकलेगा। फिरऔन और उसकी कौम के लोगों की तरफ यह नये चमत्कार हैं कि वे अन्यायी हैं ।११। कु० सू० नम्ल पा० १९।

(फिरऔन बादशाह) इसाईल के वंश में लड़कों को मरवा देता था और लड़कियों को जिन्दा रखता था ।४। हमने मूसा

की मां को हुक्म दिया कि उसको (बच्चे को) दूध पिलाओ, फिर जब उसकी बाबत डर हो तो इनको नदी में डाल दे और डर न करना और न रंज करना, हम इनको फिर तुम्हारे पास पहुँचा देंगे। और इनको पैगम्बरों में से बनावेंगे ।७। तो फिरऔन के लोगों ने उस बहते को उठा लिया ।८। और फिरऔन ने उसकी परवरिश को धाय तलाश की तो मूसा की माता को ही धाय बनाया गया और मूसा की परवरिश होने लगी। ।९ से १३ तक का सारांश। मूसा ने लड़ाई में एक बैरी को घूंसे से मार डाला और डर के मारे वे वहां से पकड़े जाने की खबर पाकर भाग निकले ।१५ से २१ तक का साराँश। मूसा जब भागते २ मदीयन के कुए पर पहुंचे तो वहां दो औरतें मिलीं। वे उनको अपने घर ले गईं। उनमें से एक के साथ मूसा की शादी हो गई ।२२ से २८ तक का सारांश। मूसा वहां कुछ काल रहकर बीबी को लेकर चल दिया। 'तोतूर (पहाड़)' की तरफ से उसे एक आग दिखाई दी। मूसा ने अपने घर के लोगों से कहा कि तुम (इसी जगह) ठहरो, मुझको आग दिखाई दी है शायद वहां से तुम्हारे पास कुछ खबर लाऊं या आग की एक चिनगारी लेता आऊं, ताकि तुम तापो ।२९। फिर जब मूसा आग के पास पहुंचा तो उस पाक जगह मैदान के दाहिने किनारे के दरख्त से उसे आवाज सुनाई दी कि मूसा; हम सब संसार के पालन करने वाले अल्लाह हैं ।३०। और यह कि तुम अपनी लाठी जमीन पर डाल दो। तो जब लाठी को डालो और इसको इस तरह चलते हुए देखा कि गोया यह सांप है तो पीठ फेर भागा और पीछे को न देखा (हमने फर्माया) मूसा आगे आओ और डर न करो। तू बे खटके है ।३१। अपना हाथ अपने गिरहवान के अन्दर रखो। और फिर निकालो तो वह

बिना किसी बुराई के सफेद निकलेगा···। सारांश लाठी और सफेद हाथ दोनों चमत्कार खुदा की तरफ से दिये हुए हैं···।

॥३२॥ कु० सू० कसस पा० २०॥

समीक्षा—फिरऔन बादशाह इस्राइल के खानदान में हर लड़के को पैदा होते ही मरवा दिया करता था। खुदा ने मूसा के पैदा होने पर उसकी मां से मूसा को नदी में डलवा दिया था। जब बच्चा बहने लगा तो फिरऔन के लोग उसे उठाकर राजा के पास ले गये। रानी ने धाय की खोज की तो मूसा ने किसी धाय का दूध न पिया। फिर जब मूसा की मां धाय बनकर आई तो मूसा ने उसी का दूध पिया। बड़ा होने पर मूसा का एक आदमी से झगड़ा हो गया। मूसा ने उसे मार डाला। जब लोगों ने मूसा को पकड़ना चाहा तो मूसा खबर मिलने पर भाग गया। रास्ते में दो औरतें पानी भर रही थीं। मूसा को वे अपने घर ले गईं। कुछ दिन बाद उनके साथ मूसा की शादी हो गई। मूसा वहां से चल दिया। रास्ते में मूसा को दूरी पर आग दिखाई दी। मूसा वहां गया तो वहां खुदा मिल गया। खुदा ने मूसा को दो चमत्कार दिये। मूसा को बताया कि तेरी लाठी जमीन पर डालते ही अजगर बन जावेगी। तू अपना हाथ बगल में रखकर बाहर निकालेगा तो वह सफेद दिखाई देगा। इन दोनों चमत्कारों को दिखाने मूसा फिरऔन बादशाह के यहाँ गया और वहां सारे जादूगरों को जीत लिया।

केवल इतनी सी कहानी है जिसे कुरान में कितनी ही जगह बार-बार लिखा गया है जो ऊपर दिया है। आगे लिखा है कि इस चमत्कार को दिखाने के बाद मूसा को राजा ने पकड़ना चाहा तो मूसा अपने घर वालों को लेकर भाग गया। पीछे २ शाही लश्कर पकड़ने जा रहा था। रास्ते में नदी पड़ी। मूसा

ने पानी में लाठी दे मारी। नदी का पानी फट गया और रास्ता बन गया। मूसा और उसका परिवार पार निकल गये। जब शाही लश्कर नदी के बीच में पहुंचा तो नदी बह निकली और सभी उसमें डूब गये।

यह बेतुकी कहानी अरब में प्रचलित थी। मुहम्मद साहब ने अपनी शायरी करके उसे कुरान में लिखकर मूसा की जादूगरी के चमत्कार बताकर मूसा का गौरव बढ़ाने के लिये कई बार बयान किया है। लाठी सांप बन जावे, हाथ सफेद दीखने लगे, नदी का पानी रुका नजर आवे, यह सब तो मैस्मरेजम जानने वालों के साधारण से खेल हैं जो कि निगाह बांधकर दिखाये जाते हैं। सैकड़ों लोग आज भी इनको देखते हैं। इन चमत्कारों से किसी की शान बढ़ती हो या वह पैगम्बर मान लिया जावे, यह बात तो बच्चों के बहकाने जैसी हैं। मूसा ने बुद्धि का कोई चमत्कार या योग का कोई चमत्कार तो नहीं दिखाया था जिससे उसकी आध्यात्मिक शक्ति का पता लगता। न कोई और बड़ा काम किया था जिसका कुरान में उल्लेख मिलता। तब कुरान के सफे इन बेकार की बातों से काले करने का उद्देश्य केवल अरब के भोले लोगों को बहकाना नहीं तो क्या था ? क्या इस्लाम में जादूगरों को ही पैगम्बर माना जाता है ? मूसा की खुदा से बातें करने की बात कोरी गप्प है।

चौदहवां अध्याय

कुरान और हजरत नूह

(हजरत नूह के बारे में कुरान शरीफ में निम्न प्रकार वर्णन मिलता है ।)

'और नूह की तरफ खुदाई पैगाम आया कि तुम्हारी जाति में जो लोग ईमान ला चुके हैं उन के सिवाय अब हरगिज कोई ईमान नहीं लावेगा, और जैसे जैसे बदकारियां यह लोग करते हैं तुम इसका रंज न करो ।३६। हमारे सामने और हमारे इशारे के बमूजिब एक नाव बनाओ और अवज्ञा कारियों (हुक्म न मानने वालों) के सम्बन्ध में हमसे कुछ न कहो । क्यों कि यह लोग जरूर डूबेंगे । ।३७। चुनांचै नूह ने नाव बनानी शुरू की और जब कभी उनकी जाति के इज्जतदार लोग उनके पास होकर गुजरते तो उनसे हंसी करते । नूह ने जवाब दिया कि अगर तुम हम पर हँसते हो तो हम तुम पर हँसेंगे ।३८। थोड़े दिनों के बाद तुमको मालूम हो जायगा कि किस पर सजा उतरती है जो उसकी बदनामी करें और हमेशा की सजा उसके सिर पड़े ।३९। यहां तक कि हमारा हुक्म जब आ पहुंचा और अल्लाह की नाराजगी से तनूर ने जोश मारा तो हमने हुक्म दिया कि हर किस्म में से दो दो के जोड़े और जिसकी बाबत पहिला हुक्म हो चुका है उसको छोड़कर अपने घर वाले और जो ईमान ला चुके हैं उनको किश्ती में बैठा लो ।४०। और उनके साथ ईमान भी थोड़े ही लाये थे और उसने कहा सवार हो उसमें और किश्ती का बहाना और ठहरना अल्लाह

के नाम से है और अल्लाह बख्शने वाला मेहरवान है।४१। किश्ती उनको ऐसी लहरों में जो पहाड़ के समान थी ले गई और नूह का बेटा अलग था तो नूह ने उसे पुकारा कि बेटा हमारे साथ बैठ ले और काफिरों के साथ मत रह।४२। वह बोला मैं अभी किसी पहाड़ के सहारे जा लगता हूँ वह मुझको पानी से बचा लेगा। नूह ने कहा आज के दिन अल्लाह के गुस्से से बचाने वाला कोई नहीं, मगर खुदा ही जिस पर अपनी मेहरबानी करे, और दोनों के दरम्यान एक लहर आ गई और दूसरों के साथ नूह का बेटा भी डूब गया।४३। हुक्म हुआ कि ऐ ज़मीन! अपना पानी सोखले और ऐ आसमान! थमजा, और पानी उतर गया और काम तमाम कर दिया गया और किश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई। और हुक्म हुआ कि जालिम रहो।४४। और नूह ने अपने परवंदिगार को पुकारा और बिनती की कि परवदिगार! मेरा बेटा मेरे लोगों में है और तूने जो अहद किया था सच्चा है और तू सब हाकिमों में बड़ा हाकिम है।४५। खुदाने फ़र्माया कि नूह! तुम्हारा बेटा तुम्हारे लोगों में नहीं था। क्योंकि उसके कर्म बुरे थे जो तू नहीं जानता वह बात न पूंछ…।४६। हुक्म दिया गया कि ऐ नूह! हमारी तरफ से सलामती और बरकत वाली किश्ती से उतरो…।

॥४८॥ कु० सू० हूद पा० १२॥

'और हमने नूह को उनकी कौम के पास भेजा तो वह पचास वर्ष कम हजार वर्ष उनमें रहे. फिर उनको तूफान ने पकड़ लिया और वह पापी थे।१४। फिर हमने नूह को और जो किश्ती में थे उनको (तूफान से) बचा दिया।१५। और हमने इसको तमाम दुनियां के लिये शिक्षा बनादी…।'

॥१६॥ कु० सू० अन्कबूत पा० २०।

समीक्षा—भारत वर्ष के प्राचीन संस्कृत साहित्य एवं पुराणों में मनु की जल प्रलय तथा मत्स्यावतार के द्वारा उनकी किश्ती को जलमय भाग से ऊपर पर्वतीय भाग पर खींच ले जाना आदि की कथा विद्यमान है। यह कथा अन्य देशों में भी पहुँच चुकी थी। मनुः में से म निकाल कर अरब देश वालों ने मनुः का नूह बना लिया और थोड़े से परिवर्तन के साथ इसे अपने यहाँ की घटना बना डाला है। कुरान को बने हुए लगभग १४०० वर्ष से भी कम हुए हैं जब कि भारतीय साहित्य में कई सहस्र वर्षों से यह कथा विद्यमान है अतः यहाँ से ही इस कथा का जानना निश्चित है।

कुरान की इस कथा में नूह का खुदा से बातें करना, सवाल जवाब करना तथा नूह की उम्र ९५० साल बताना यह सब गप्पाष्टकें हैं जो कि भोलेभाले अरब वालों को प्रभावित करने को गढ़ ली गई थीं। कुरान की नूह की सारी कहानी हिन्दोस्तान के मनु की जल प्रलय की कथा के आधार पर गढ़ी हुई फर्जी है।

———

पन्द्रहवां अध्याय

कुरान और हजरत लूत

(हजरत लूत के बारे में कुरान शरीफ में निम्न प्रकार वर्णन मिलता है ।)

'हमने (खुदा ने) लूत को भेजा और अपनी कौम से (उसने) कहा दुनियां जहान में तुमसे पहिले किसी ने ऐसी बेशर्मी नहीं की ८०। क्या तुम स्त्रियों को छोड़कर सुहबत के लिए मर्दों पर दौड़ते हो बल्कि तुम हद पर नहीं रहते हो ।८१। लूत की जाति का जवाब यही था कि वह कहने लगे कि इन लोगों को अपनी बस्ती से निकल बाहर करो । यह लोग ऐसे हैं जो पाक साफ बनना चाहते हैं ।८२। बस हमने लूत को और उनके घर वालों को बचाया मगर उनकी बीबी रह गई, वह पीछे रहने वालों में थी ।८३। हमने इन पर पत्थरों का मेह बरसाया तो देखना कि गुनहगारों का नतीजा कैसा हुआ ।'

॥८४॥ कु० सू० आराफ पा० ८॥

'इब्राहोम ! इन लोगों का ख्याल छोड़ दो, तुम्हारे परवदिगार का हुक्म आ पहुंचा है और इन लोगों पर ऐसी सजा आने वाली है जो टल नहीं सकती ।७६। और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास आये तो उनका आना उनको बुरा लगा और उनके आने को वजह से तंगदिल जाति के लोग दौड़े २ लूत के पास आये और यह लोग पहिले से ही बुरे काम किया करते थे । लूत कहने लगे भाइयो, यह मेरी बेटियां हैं, यह तुम्हारे लिये ज्यादा पवित्र हैं तो खुदा से डरो और मेरे महमानों में मेरी

बदनामी न करो। क्या तुममें कोई भला आदमी नहीं ।७८। उन्होंने जवाब दिया कि तुमको तो मालूम है कि हमको तो तुम्हारी बेटियों से कोई ताल्लुक नहीं। हमारे इरादे से तुम भली भांति जानकार हो ।७९। (लूत) बोले आज मुझको तुम्हारे मुकाबिले की ताकत होती या मैं किसी जोरावर सहारे का आसरा पकड़ पाता ।८०। (फरिश्ते) बोले कि ऐ लूत! हम तुम्हारे परवर्दिगार के भेजे हुए हैं। यह लोग हरगिज तुम तक नहीं पहुँच पायेंगे। तो तुम अपने लोगों को लेकर कुछ रात से निकल भागो और तुममें से कोई मुड़कर न देखो मगर तुम्हारी बीबी देखें कि जो सजा इन लोगों पर उतरने वाली है वह उस पर भी जरूर उतरेगी। इनके वायदे का समय सुबह है···।८१।। फिर जब हमारा हुक्म आया तो हमने वस्ती लौट दी और उस पर जमे हुये खंजड बरसाये।'

।।८२।। कु० सू० हूद पा० १२।।

'फिर जब (खुदा के) भेजे फरिश्ते लूत की जाति के पास आये ।६१। (तो) शहर के लोग खुशियां मनाते हुए आये ।६७। (लूत ने उनसे) कहा कि यह मेरे महमान हैं सो मुझको बदनाम मत करो ।६८। लूत ने कहा अगर तुमको करना है तो मेरी यह बेटियां हैं इनसे निकाह करलो ।७१। (ऐ पैगम्बर) तुम्हारी जान की कसम यह अपनी मस्ती में बेहोश है ।७२। गरज सूरज के निकलते निकलते उनको एक बड़े जोर की आवाज ने घेर लिया ।७३। खैर हमने उस वस्ती को उलट पुलट दिया और उन पर कंकड़ के पत्थर बरसाये। ७४।। कु०सू० हिज्र पा० १४।।

'और लूत ने अपनी कौम से कहा कि तुम बेशर्मी करते हो और देखते जाते हो ।५४। क्या तुम औरतों को छोड़कर मर्दों पर ललचा कर दौड़ते हो। बात यह है तुम बे समझ हो।'

।।५५।। कु० सू० नम्ल पा० २०।।

'और लूत को भेजा जब उन्होंने अपनी कौम से कहा कि तुम बेशर्मी का काम करते हो जो तुमसे पहिले दुनियां जहान के लोगों में से किसी ने नहीं किया ।२८। क्या तुम लड़कों पर गिरते और राह मारते और अपनी मजलिसों में बुरे काम करते हो···

।।२९।। कु० सू० अन्कबूत पा० २०।।

'और बेशक लूत पैगम्बरों में से है।१३३। हमने लूत को और उनके तमाम कुटुम्ब को बचा लिया।

।।१३६।। कु० सू० साफ्फात पा० २३।।

समीक्षा—हजरत लूत को पैगम्बर माना गया है। खुदा के भेजे चन्द खूब सूरत फरिश्ते जब उनके पास पहुँचे तो उस शहर के रहने वाले बहुत से लोग लूत के घर पर दौड़े २ पहुंचे और लूत से बोले कि तुम इन खूबसूरत लौड़ों (फरिश्तों) को हमारे हवाले करदो। उस शहर के लोग सभी इगलाम बाजी (अप्राकृतिक) व्यभिचार के अभ्यस्थ थे। फरिश्तों को देखकर इस दुष्कर्म के लिये वे उनको लूत से मांगने लगे तो पैगम्बर लूत साहब ने उनसे कहा कि तुम लोग मेरी बदनामी न करो। ये लोग तो मेरे मेहमान हैं, इनको न छेड़ो। तुम लोग इनके बदले में मेरी दो बेटियों को जिन्हाखोरी के लिये ले जाओ। लूत साहब ने अपनी दो बेटियों को पचासों गुण्डों को अय्याशी करने को दे देने की बात कही थी जो कितनी मूर्खता पूर्ण थी यह हर व्यक्ति समझ सकता है। मेंहमानों (फरिश्तों) को बचाने के लिये बेगुनाह अपनी सुन्दर बेटियों को व्यभिचार के लिये सैकड़ों लोगों को देना भी एक जबर्दस्त कमजोरी की बात थी। दो लड़कियां इतने लोगों को सन्तुष्ट कैसे कर सकतीं थीं? और फिर लूत तो पैगम्बर थे। उनमें इतनी भी अक्ल नहीं थी कि वे यह भी जान जाते कि गुन्डे उनको छू भी नहीं सकेंगे

क्यों कि अल्लाह के फरिश्ते खुद ही उनसे निबटने के लिये काफी थे। फरिश्तों में ही घबड़ाये हुए लूत को समझाया कि जनाब परेशान न हों, न अपनी बेटियाँ इनको देवें। ये लोग तुम तक नहीं पहुंच सकेंगे। इस शहर की तो बरबादी दिन निकलने के वक्त हो जाती है। आप अपने घर वालों को साथ लेकर शहर से दिन निकलने से पूर्व ही बाहर भाग जाना। जो भी यहाँ रहेगा वह मारा जावेगा।

फरिश्तों के बताने पर लूत साहब अपने घर वालों के साथ सबेरे ही निकल कर भाग गये। उनकी बीबी ने जाते वक्त पीछे मुड़कर देखा तो वह भी मारी गई। सारे शहर को तूफान ने सबेरे ही घेर लिया और अल्लाह मियां ने पत्थर खंजड बरसा कर सारे शहर को मार डाला, लौट पौट कर डाला। जब कि कुरान का वायदा है कि काफ़िरों बदकारों के लिये एक मियाद कयामत के दिन की फ़ैसले के वास्ते नियत है और उसी दिन उनको कर्मानुसार दोजख की सजा दी जावेगी तो अल्लाहमियां ने अपने इस वायदे को तोड़कर उस शहर वालों को इतनी जल्दी सजा देकर क्यों मार डाला? क्या खुदा अपने वायदों का भी पक्का नहीं है। इससे तो यही पता लगता है कि कर्मों का नतीजा साथ-के साथ मिलता जाता है और कयामत के दिन फैसला होने की बात एक दम गलत है, वह लोगों को धोखा देने को गढ़ ली गई है।

सोलहवां अध्याय

कुरान और गौ

गौ के बारे में कुरान शरीफ में निम्न प्रकार वर्णन मिलता है)

'फिर तुमने उनके पीछे (पूजने के लिये) बछेड़ा बना लिया और तुम जुल्म कर रहे थे'।५१। 'जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि तुमने बछड़े की पूजा करके अपने ऊपर जुल्म किया तो अपने सृष्टिकर्ता के सामने तोबा करो'।५४।

'मूसा ने अपनी कौम से कहा अल्लाह तुम से फर्माता है कि एक गाय हलाल करो। वह कहने लगे कि क्या तुम हम से हंसी करते हो। (मूसा ने) कहा खुदा मुझको अपनी पनाह में रखे कि मैं ऐसा नादान न बनूं।६७। वह बोले अपने परवर्दिगार से हमारे लिये दरख्वास्त करो कि हमको भलीभांति समझा दे कि वह कैसी हो। (मूसा ने) कहा खुदा फर्माता है कि वह गाय न बूढ़ी हो और न बछिया हो, दोनों के बीच की रास, पस तुमको जो हुक्म दिया गया है उसको पूरा करो।६८।

'(मूसा ने) कहा खुदा फर्माता है कि उसका रंग खूब गहरा जर्द हो कि देखने वालों को भला लगे'।६९। 'वह न तो कमेरी हो कि जमीन जोतती हो और न खेतों को पानी देती हो, सही सालिम उसमें किसी तरह का दाग (धब्बा) न हो, वह बोले हां, अब तुम ठीक पता लाये, गरज उन्होंने गाय हलाल की और उनसे उम्मीद न थी कि करेंगे'।७१। (और

ऐ याकूब के बेटो) जब तुमने एक शख्स को मार डाला और झगड़ने लगे···।७२। पस हमने कहा कि गाय का कोई टुकड़ा मुर्दे को छुआ दो। इसी तरह खुदा कयामत में मुर्दों को जिलाएगा। वह तुमको अपनी कुदरत का चमत्कार दिखाता है ताकि तुम समझो' ।७३। कु० सू० बकर पा० १।

'···इब्राहीम ने देर न की और भुना हुआ बछेड़ा ले आया।'

।।६६।। कु० सू० हूद पा० १२ ।।

'इब्राहीम अपने घर को दौड़ा और एक बछेड़ा घी में तला हुआ ले आया।२६। फिर उनके सामने रखा और (उन मेहमानों से) पूंछा क्या तुम नहीं खाते।'

।।२७।। कु० सू० जारियात पा० २७ ।।

समीक्षा—ऊपर की आयतों से स्पष्ट है कि अरब में उस युग में गौ की पूजा हुआ करती थी। लोग उसका बड़ा आदर करते थे। कुरान शरीफ में गाय या बछड़े की पूजा होने का तो उल्लेख मिलता है पर किसी अन्य पशु की पूजा या सत्कार का कोई वर्णन नहीं आता है। इससे गौ की प्रधान मान्यता अरब के लोगों में उस युग में होने का प्रमाण मिलता है। यह दूसरी बात है कि मांसाहारी होने से अरब के मूसा व इब्राहीम परिवार के लोग अन्य पशुओं के समान गौ या बछड़े को भी मार कर खा जाते थे। समस्त कुरान में गाय को बध करने व बलिदान करने का कोई आदेश नहीं मिलता है। केवल एक ही स्थल पर कु० सू० बकर पा० १ में जो ऊपर दिया गया है लिखा मिलता है कि मूसा ने लोगों से कहा कि खुदा गाय को हलाल करने का आदेश देता है, और लोगों ने मूसा के बहकाने में आकर गाय को कत्ल कर दिया था। उस पर भी कुरान में खुदा ने कहा है कि मुझे यह उम्मेद न थी कि लोग ऐसा कर

ही डालेंगे। अर्थात मूसा वा खुदा ने या तो मखौल की थी और या खुदा इतना अज्ञानी था कि वह यह भी नहीं जानता था कि लोग मूसा की बात पर विश्वास करके गौहत्या कर बैठेंगे। पर जब उन भोले लोगों ने हत्या कर डाली तो खुदा ने गौ के गोश्त का यह चमत्कार दिखाया कि मरे हुए पक्षियों को उस गौ के गोश्त के स्पर्श मात्र से जीवित हो जाने का दृष्टान्त देकर कयामत के दिन मुर्दे जीवित होने की मिसाल पेश की थी। इससे गौ की प्रधानता ही प्रगट होती है कि उसके गोश्त के छू जाने से ही मुर्दा भी जिन्दा हो जाता है। अतः गौ परम आदरणीय पशु साबित होता है।

यह भी इससे स्पष्ट होता है कि मूसा ने लोगों में गौ की भक्ति देख कर एक जाल रचा था और उनमें गौ के प्रति घृणा पैदा कराने के लिये खुदा की ओर से फर्जी आर्डर उनको गौ बध करने का बताया था। अरब के चन्द भोले लोग मूसा की चाल में धर्म के नाम पर डर कर और मूसा की बातों को खुदाई पैगाम समझकर धोखे में गौ हत्या कर बैठे थे। इसीलिये कुरान में मुहम्मद साहब ने लिखा है कि खुदा को कहना पड़ा कि 'अगर्चे उनसे उम्मीद न थी कि वे ऐसा करेंगे।' कुरान में स्पष्ट लिखा है कि लोगों ने मूसा से कहा था कि तू हमारे साथ हंसी मजाक करता है। पर मूसा बड़ा चतुर व्यक्ति था, उसने खुदा के आदेश के नाम पर उनसे गौबध का पाप करा ही डाला।

कुरान में सूरे हूद और सूरे जरियह में केवल इब्राहीम के गौ मांस भक्षक होने का प्रमाण मिलता है। सारे कुरान में गौबध का एक भी अन्य प्रमाण नहीं है। ऊपर दी गई आयत में इब्राहीम स्वयं अपने मेहमानों से पूंछता है कि क्या तुम

गौ मांस नहीं खाते हो ? इससे भी स्पष्ट है कि अरब के लोग गौ मांस भक्षी नहीं थे। यह पाप मूसा, इब्राहीम तथा उसके ही वंशजों ने जारी किया था जो स्वयं खुदा के पैगम्बर बन बैठे थे और लोगों को धर्म के नाम पर गुमराह करते रहते थे।

आजकल भी जो गोवध मुसलमान करते हैं अपने इस कुकर्म को वे कुरान से समर्थित नहीं सिद्ध कर सकते हैं। सारे कुरान में इसका कोई आदेश नहीं होने से तथा अरब की लोक प्रथा में पूर्व से ही गौ की पूजा की प्रथा रहने से गोवध करना स्वतः पाप कर्म साबित हो जाता है। मुसलमानों को इस दुष्कर्म से बचना चाहिये। गौ सदैव से अरब, भारतवर्ष एवं संसार के मनुष्यों में आदरणीय (एवं पूज्य) पशु मानी जाती रही है। भारतीय तथा अरबी नस्ल के मुसलमानों को भी उसी प्रथा का आदर करना चाहिये। हां, अरबी, भारतीय शुद्ध नस्लों के अलावा अन्य मिली जुली गन्दी नस्लों के मुसलमानों से हमें जोर देकर कुछ कहने का अधिकार उनके पूर्वजों के नाम पर नहीं है। पर कुरान में गोवध का आदेश न होने से उनको भी यह कुकर्म नहीं करना चाहिये इतना तो उनसे भी कहा ही जा सकता है।

सत्रहवां अध्याय

कुरान में विचित्र दण्ड व्यवस्था के दृष्टांत

(दण्ड व्यवस्था के कुरान के निम्न दृष्टान्त दृष्टव्य हैं)

ऐ ईमान वालो ! जो लोग मारे जावें, उनमें तुमको (जान के) बदले जान का हुक्म दिया जाता है । आज़ाद के बदले आजाद और गुलाम के बदले गुलाम, औरत के बदले औरत । फिर जिस (हत्यारे) को उसके भाई (बध किये हुए की हत्या के बदले में) कोई अंश लेकर क्षमा कर दिया जाय, तो नियमित रूप से हत्यारे को क़त्ल किये प्राणी के वारिसों को खून का बदला अदा कर देना चाहिये । यह (हुक्म खून बहा) तुम्हारे पालने वाले की तरफ से तुम्हारे हक में आसानी और मिहरबानी है । फिर इसके बाद जो ज्यादती करे तो उसके लिये दुःखदाई सजा है ।१७२। कु० सू० बक़र पा० २ ।

'और जो लोग पाक औरतों पर (छिनाले का) लंफट लगावें और चार गवाह न ला सकें तो उनको अस्सी चाबुक मारो और कभी उनकी गवाही कबूल न करो और ये लोग बदकार हैं ।४। और जो लोग अपनी बीबियों पर छिनाले का लंफट लगावें और उनके पास सिवाय उनकी जानों के और गवाह न हों तो उनमें से एक की गवाही चार दफे ले लेना चाहिये कि वह सच्चों में है ।६। कु० सू० नूर पा० १८ ।

समीक्षा—कुरान की उपरोक्त दण्ड व्यवस्था बड़ी आपत्ति जनक है । यदि कोई आदमी किसी की औरत को कत्ल करके

का पाप (जुर्म) करे तो यह कहां का इन्साफ होगा कि दूसरा पक्ष उस मुल्जिम की बेगुनाह पाक औरत को कत्ल कर देवे। यह तो गुनाहों के प्रचार का तरीका हुआ। एक बदमाशी करे तो दूसरा भी बदमाशी करे इससे तो बदमाशी का प्रचार होगा न कि पहिले बदमाश को कोई सजा मिलेगी या उसका सुधार हो सकेगा। दण्ड का अर्थ प्रतिशोध न होकर यदि पापकर्ता का सुधार होता है ताकि वह पाप का प्रायश्चित भी कर सके और भविष्य में पुनः वह गलती न करे तो इस दण्ड व्यवस्था को आदर्श कहा जाता है। पर यदि दण्ड का उद्देश्य केवल ज्यों का त्यों बदला लेना होता है तो उससे निरपराधों की हत्या होती है साथ ही गुनहगारों का कोई सुधार नहीं हो पाता है। दुनियां को कोई सभ्य सरकार या शरीफ आदमी कुरान की उपरोक्त व्यवस्था को समर्थन नहीं दे सकता है। जिस आदमी ने दूसरे की हत्या या उसके साथ ज्यादती की है। तो उसे भरपूर मुनासिब सजा मिलनी चाहिये, न कि उसके गुनाहों के बदले उसके आश्रित अन्य वारिसान को सताया जावे। आज भी दुनियां में यही सभ्य नियम लागू है कि मुल्जिम को ही सजा दी जाती है न कि उसके बदले दूसरों को दी जाती है। इससे स्पष्ट हैं कि कुरान की दण्ड व्यवस्था गलत है। वह अच्छी नियत से इन्साफ करने के लिये नहीं है।

औरतों से छिनाले के लांच्छन पर भी चार गवाह झूठे लाने वाले पर विश्वास यदि कर लिया जावेगा अथवा अपनी बीबी पर झूंठा लांच्छन लगाने वाले की ही चार बार गवाही लेकर इन्साफ कर दिया जावेगा तो अन्याय होना निश्चित है। बजाय गवाह लाने के 'यदि सच्चाई की जांच करने के बाद फैसला देने का आदेश दिया जाता तो मुनासिब होता। यहां

भी कुरान की दण्ड व्यवस्था दोषपूर्ण तथा गलत सिद्ध है जैसा कि आज भी अदालतों में झूंठी गवाहियों के आधार पर मुकद्दमे छूटते व सजायाव होते देखे जाते हैं। पर इनमें तो मुंसिफ एक जगह बैठ कर ही फैसले गवाहियों के आधार पर देते हैं। कुरान के युग में काजी घूम फिर कर सच्चाई मालूम करके फैसले देते थे। वे सच बात मालूम कर सकते थे न कि गवाहियों पर निर्भर रहते थे।

अठारहवां अध्याय

कुरान में फौरन सजा की मिसालें

(कयामत के अलावा फौरन सजा के बारे में कुरान का निम्न प्रकार वर्णन मिलता है)

उन लोगों को जो तुमको जान चुके हैं। तुममें से जिन्होंने हफ्ते के दिन (शनिश्चर) में ज्यादती की तो हमने उनसे कहा बन्दर बन जाओ (कि जहां जाओ) दुतकारे जाओ।'

॥६५॥ कु० सू० बकर पा० १॥

'यह उटनी चमत्कार है पानी पीने की बारी उसकी है और तुम्हारे पानी पीने को एक दिन मुकर्रर है।१५५। इसको किसी तरह का नुकसान न पहुँचाना वरना बड़े दिन की सजा तुमको आयेगी।१५६। इस पर भी लोगों ने उसकी कूचें (एड़ी के ऊपर के हिस्से) काट डाले फिर पछताये।१५७। आखिरकार उनको सजा ने पकड़ लिया···॥१५८॥ कु० सू० शुअरा पा० १९।

'तो खुदा के पैगम्बर ने उनसे कहा कि यह खुदा की उटनी है इसे पानी पीने दो ।१३। इस पर भी उन लोगों ने उसे झुठलाया और उटनी के पांव काट डाले तो उनके परवदिगार ने उनके पाप के बदले उन्हें मार डाला और सबों को बराबर कर दिया' ।१४। कु० सू० शम्स पा० ३०।।

'फिर जिस काम से उनको मना किया जाता था जब उसमें हद से बढ़ गये तो हमने उनको हुक्म दिया कि फटकारे हुए बन्दर बन जाओ' ।१६६। कु० सू० आराफ पा० ९।।

'यह खुदा की भेजी हुई ऊटनी तुम्हारे लिये एक चमत्कार है तो इसे फिरने दो कि खुदा की जमीन में (से जहां चाहे) चरे और किसी तरह का नुकसान पहुँचाने की नीयत से उसको छूना भी नहीं वरना तुमको दुखदाई सजा है।'

।७३ कु० सू० आराफ पा० ८।

'अल्लाह ने उनको सौ बर्ष तक मुर्दा रखा फिर उनको जिला उठाया'''।२५९। कु० सू० बकर पा० २।

'मूसा ने कहा (ऐ खुदा)''' तू हममें और इन बे हुक्म लोगों में भेद डाल दे ।२५ खुदा ने कहा (कि) वह मुल्क ४० वर्ष तक इनको न मिलेगा। जंगल में भटकते फिरेंगे, तू बे हुक्म लोगों पर अफसोस न कर ।२६। कु० सू० मायदा पा० ६।

'कहो कि मैं तुमको बताऊं तो खुदा के नजदीक बुरे बदले के लायक हैं। वह जिन पर खुदा ने लानत की और उन पर अपना कोप उतारा और किसी को बन्दर और सूअर बना दिया था जो शैतान को पूजने लगे तो यह लोग दर्जे में हमसे कहीं खराब ठहरे और सीधी राह से बहुत भटक गये।'

।६०। कु० सू० मायदा पा० ६।

'हमने इन लोगों पर (लूत की बस्ती वालों पर) पत्थरों का मेह बरसाया तो देखना गुनहगारों का नतीजा कैसा हुआ। ।८४। कु० सू० आराफ पा० ८।

'और तुमसे पहिले कितनी उम्मतें हुई। जब उन्होंने नट-खटी पर कमर बांधी, हमने उनको मार डाला। उनके पैगम्बर उनके पास खुली करामात लेकर आये और उनको ईमान लाना नसीब न हुआ। पापियों को हम इस तरह दंड दिया करते हैं।९३। कु० सू० यूनिस पा० ११।

'और भाइयो, यह खुदा की ऊंटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है, तुम इसको छुट्टा रहने दो कि खुदा की जमीन में से खाती फिरे और इसको किसी तरह का नुकसान न पहुँचाना वरना फौरन ही तुमको सजा मिलेगी।'

।६४। कु० सू० हूद पा० १२।

समीक्षा—अल्लाह मियां की उटनी की हम चर्चा कुरान में कई जगह पाते हैं। पर हाल केवल इतना ही मिलता है कि खुदा की उटनी जमीन पर आई और पैगम्बर ने लोगों से कहा कि इसे चारा चरने व पानी पीने दो। उसे मारना नहीं। पर लोगों ने उसके पांव काट डाले और खुदा ने उन लोगों को तत्काल सजा में धर दबोचा। खुदा अपनी ऊटनी की भी रक्षा नहीं कर सका और न खुदा की उटनी ही अपनी रक्षा कर सकी। पैगम्बर भी रक्षा करने में फेल हो गया। इससे जहाँ खुदा की कमजोरी जाहिर होती है वहां उसका यह नियम भी टूट गया कि हम मुल्जिमों को कयामत के दिन ही सजा देंगे। क्यों कि खुदाई सजा तुरन्त उन लोगों पर आ गई थी। इसी तरह खुदा ने हजरत लूत की इगलाम बाज बस्ती को उसके गुनाहों के बदले तूफान और पत्थरों की वर्षा से मार डाला था।

कुछ लोगों को कुकर्मों के बदले फटकारे हुए बन्दर और सूअर बना दिया था। नटखटी करने वाले लोगों को खुदा ने अपना गुस्सा उतार के मार डाला था, इत्यादि।

यह सारी बातें बताती हैं कि कयामत के दिन तक लोगों को इच्छानुसार कर्म करने की छूट देने तथा उसी दिन सजा देने की बात कुरान की बिलकुल गलत है, वह लोगों को धोखा देने के लिये है। जब कि खुदा बुरे लोगों को बन्दर व सूअर की यौनि में उनके कुकर्मों के कारण डाल देता है तो यह तो कर्मानुसार पुनर्जन्म को साबित करता है। यही भारत के आर्यों का मान्य सिद्धान्त है कि हर जीव को कर्मानुसार विभिन्न योनियों में जन्म दिया जाता है जैसा कि कुरान में भी दिया गया है। यदि पुनर्जन्म न होता तो खुदा उनको बन्दर व सूअर न बना कर उनकी रूहों को दोजख में झोंक देता या किसी कैदखाने में बन्द रखता और कयामत के दिन उनका बकौल कुरान के फैसला करता। पर नगद सजा देना और वह भी जीवों की अन्य योनियों में भेज कर, यह बात कुरान के उसूल का ही खंडन कर देती है।

वास्तव में कुरान न तो खुदाई किताब है और न उसमें बुद्धिमानी की बातें हैं। यह तो ऐसी ही परस्पर विरुद्ध बातों से भरी पड़ी है। अतः वह मान्य ग्रन्थ नहीं हो सकती है।

उन्नीसवां अध्याय

कुरान में क़समें

(मुसलमानी खुदा ने कुरान में निम्न प्रकार कसमें खाई हैं)

'तारे (नक्षत्र) को कसम जब यह टूटता है।१। तुम्हारा मित्र (मौहम्मद) बहका नहीं और न बे राह चला।'

। कु० सू० नज्म पा० २७।

'और सलूक करने और परहेजगारी रखने और लोगों में मेल मिलाप कराने में खुदा की कसम मत खाओ। अल्लाह सुनता और जानता है' ।२२४। 'तुम्हारी फिजूल कस्मों पर खुदा तुमको नहीं पकड़ेगा। लेकिन उनको पकड़ेगा जो तुम्हारे दिली इरादे हैं और अल्लाह बख्शने वाला और बर्दाश्त करने वाला है' ।२२५। कु० सू० बकर पा० २।

'नून कलम की और जो कुछ वह लिखते हैं उसकी कसम' ।१। तू अपने परवर्दिगार की कृपा से पागल नहीं है।

।२। कु० सू० कलम पा० २९।

'तो मैं पूरब और पच्छिम के परवर्दिगार की कसम खाता हूँ कि हम उस पर सामर्थ रखते हैं।'

।४०। कु० सू० मआरिज पा० २९।

'नहीं-नहीं चांद की कसम' ।३२। 'और रात की जब वह गुजरने लगे' ।३३। 'और सुबह की जब वह रोशनी हो।३४। यह नरक एक बड़ी बात है'।३५। कु० सू० मुद्दसिर पा० २९।

'मैं कयामत के दिन की कसम खाता हूँ' ।१। और मैं जी की कसम खाता हूँ जो अपने आप मलामत करता है।

।२। कु० सू० कयामत पा० २६ ।

'उन हवाओं की कसम जो मामूली चाल से चलाई जाती हैं' ।१। कु० सू० मुर्सलात पा० २६ ।

'...और उन फरिश्तों की कसम जो घुसकर (सख्ती से) रूह निकालते हैं ।१। और उन फरिश्तों की जो आसानी से जान निकालते हैं' ।२। कु० सू० नाजिआत पा० ३० ।

'आसमान की कसम जिसमें बुर्ज हैं ।१। और उस दिन की जिसका वायदा है' ।२। 'और गवाह की और जिसके सामने गवाही देता है उसकी कसम' ।३। 'और खाइयां खोदने वाले मर गये' ।४। कु० सू० बुरुज पा० ३० ।

'आसमान को और रात को आने वाले की कसम' ।१। 'और तू क्या समझे कि रात को आने वाला क्या है' ।२।

'पानी वाले आसमान की कसम' ।११। 'और फट जाने वाली जमीन की कसम' ।१२। जरूर यह कथन बिलकुल सही है ।१३। कु० सू० तारिक पा० ३० ।

'सुबह की कसम' ।१। 'और दस रातों की (कसम) ।२। 'जुफ़्त और ताक़ की कसम' ।३। और रात की जब कि वह गुजरने लगे ।४। 'बुद्धिमानों के लिये इसमें बड़ी भारी कसम है' ।५। कु० सू० फजर पा० ३० ।

'मैं इस शहर मक्का की कसम खाता हूँ' ।१। 'तू इसी शहर में उतरा है' ।२। 'और कसम है पैदा करने वाले आदम की।' ।३। कु० सू० बलद पा० ३० ।

'सूरज और उसकी धूप की कसम' ।१। 'बाद में जब चांद उदय होता है उसकी कसम' ।२। और दिन की कसम जब कि

वह सूरज को उदय करे' ।३। और रात की कसम जब कि वह सूरज को छिपाले' ।४। 'और आसमान की और जिसने उसे बनाया' ।५। 'और जमीन की कसम और जिसने उसे बिछाया' ।६। 'और इन्सान की कसम और जिसने उसे दुरुस्त बनाया ।७। और उसके दिल में उसकी बदी और परहेजगारी सुझा दी'।

।७। कु० सू० शम्स पा० ३० ।

'और रात की कसम जब कि वह ढांक ले' ।१। और दिन की कसम जब वह खूब रोशन हो ।२। 'और उसकी कसम जिसने नर मादा को बनाया' ।३। 'तुम लोगों की कोशिश बेशक जुदा-जुदा है' ।४। कु० सू० लैल पा० ३० ।

'दिन चढ़े की कसम' ।१। 'और रात की कसम जब ढांक ले' ।२। तेरे परवर्दिगार ने तुझको छोड़ा नहीं···।

।३। कु० सू० जुहा पा० ३० ।

'अंजीर और जैतून की कसम' ।१। 'और तूरसीनोन (पहाड़) की (कसम)' ।२। और इस शहर (मक्का) की कसम जिसमें चैन है ।३। हमने मनुष्य को अच्छी से अच्छी सूरत में पैदा किया ।४। कु० सू० तीन पा० ३० ।

'हांफ कर दौड़ने वाले घोड़े की कसम' ।१। 'जो फिर टाप मार २ कर आग निकालते हैं' ।२। कु०सू० आदियात पा०३०।

'(असर) ढलते दिन की कसम' ।१। आदमी घाटे में है।

।।२।। कु० सू० असर पा० ३० ।।

'खुदा की कसम है तुमसे पहिले हमने बहुत उम्मतों (गिरोहों) की तरफ पैगम्बर भेजे, तो शैतान ने उनके बुरे काम उनको अच्छे कर दिखाये । सो वही शैतान इस जमाने में इनका मित्र है और इनको कड़ी सजा है' ।६३। कु० सू० नहल पा० १४।

'तारों के टूटने की कसम है' ।७५। 'और समझो तो यह बड़ी कसम है' ।७६। कु० सू० वाकिया पा० २७ ।

'जाहिर किताब की कसम' ।२। हमने मुबारिक रात (२७ वीं रात रमजान की और शब्बरात) में इसको उतारा हमें डराना मंजूर था' ॥ कु० सू० दुखान पा० २५ ॥

'उड़ाकर बखेरने वाली की कसम' ॥१॥ 'फिर बोझ उठाने वालों की कसम' ।२। 'फिर नर्मी से चलने वालों की कसम' ।३। 'फिर हुक्म से बांटने वालियों की कसम' ।४। बेशक जो वायदा तुमको मिला है सच है ।५। कु० सू० जारियात पा० २६।

'तूर की कसम' ।१। 'और लिखी किताब की' ।२। 'कड़े पन्नों में' ।३। और बैतुल मामूर (फरिश्तों का आसमानी काबा) की' ।४। 'और ऊंची छत आसमान की' ।५। 'और उमड़ते समुद्र की' ।६। 'बेशक तेरे परवर्दिगार की सजा होने को है।'

।७॥ कु० सू० तूर पा० २७ ॥

'हिकमत वाले पक्के कुरान की कसम' ।२। तू पैगम्बरों में है ।३। कु० सू० यासीन पा० २३ ।

'लश्करों की कसम जो कतारों में खड़े होते है' ।१। 'फिर झिड़ककर डाटने वाले की कसम ।२। फिर याद कर कुरान पढ़ने वाले की कसम' ।३। बेशक तुम्हारा हाकिम एक खुदा है।

।४। कु० सू० साफ्फात पा० २२ ।

'(मुसलमानों) तुम्हारी बेफायदा कस्मों पर खुदा तुमको नहीं पकड़ेगा, हां पक्की कसमें खालो तो खुदा पकड़ेगा। तो इस पाप की शान्ति के लिये दस भूखों को मामूली भोजन खिला देना···। जैसा अपने घर वालों को खिलाते हो या उनको कपड़े बना देना, या एक गुलाम छोड़ देना फिर जिसको ताकत न हो तो तीन दिन के रोजे रखना यह तुम्हारी कसमों का कफारा (शान्ति) है। जबकि तुम कसम खा चुके हो और अपनी कसमों को रोके रहो···'।८९। कु० सू० मायदा पा० ७ ।

'खुदा की कसम है तुमसे पहिले हमने बहुत उम्मतों (गिरोहों) की तरफ पैगम्बर भेजे···।६३। कु०सू० नहल पा०१४।

'तो (ऐ पैगम्बर) तेरे परवर्दिगार की कसम-हम उन्हें शैतानों के साथ इकट्ठा करेंगे···।६८। कु० सू० मरियम पा० १६।

'जाहिर किताब की कसम ।२। हमने इसको अरबी में बनाया है ताकि तुम समझो' ।३। कु० सू० जुखरुफ पा० २५ ।

'कुरान बुजुर्ग की कसम···'।१। सू० काफ पा० २६ ।

'तुम लोगों के लिये खुदा ने तुम्हारी कस्मों को भी तोड़ डालने का हुक्म रखा है और अल्लाह ही तुम्हारा मददगार और जानकार हिकमत वाला है' ।२। कु० सू० तहरीम पा० २८ ।

जो कुछ तुम देखते हो मैं उसकी कसम खाता हूँ ।३८। जो तुम नहीं देखते उसकी भी ।३६। यह कुरान एक फरिश्ते का है ।४०। कु० सू० हाक्का पा० २६ ।

'मैं उन सितारों की कसम खाता हूँ जो चलते-चलते पीछे हटने लगते हैं ।१५। और जो सैर करते और गायब हो जाते हैं ।१६। और रात की कसम जब उसका उठान हो ।१७। और सुबह की (कसम) जिस वक्त उसको पौ फटती है ।१८। बेशक यह कुरान एक प्रतिष्ठित फरिश्ते का पैगाम है ।'

।।१६।। कु० सू० तकवीर पा० ३० ।।

'मैं शाम की सुर्खी की कसम खाता हूँ ।१६। रात की जिन चीजों पर वह अंधेरा करती है ।१७। और चांद की कसम जब वह पूरा हो ।१८। कि तुम दर्जा व दर्जा मंजिल तै करोगे ।'

।।१६।। कु० सू० इन्शिकाक पा० ३० ।।

'साद कुरान की कसम जिसमें नसीहत है ।'

।।१।। कु० सू० साद पा० २३ ।।

समीक्षा—सभ्य संसार में लोग कसम खाने को बहुत बुरी बात समझते हैं। बड़े आदमी कभी कसमें नहीं खाते हैं। या तो उन लोगों को कसमें खिलाई जाती हैं जिनकी बात पर कोई भरोसा नहीं करता है और यह समझा जाता है कि यह आदमी अमुक की कसम खाकर झूंठ नहीं बोलेगा अथवा वे लोग कसमें खाते हैं जो यह समझते हैं कि हम इतने बदनाम या छोटे हल्की जवान के आदमी हैं कि हमारी बात पर कोई भरोसा नहीं करेगा। और या फिर झूंठे आदमी झूंठी कसमें खाया करते हैं।

जिम्मेवार लोग कसम खाना अपना अपमान तथा अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। वे लोग अपनी प्रत्येक बात को बड़ी जिम्मेवारी की बात समझते हैं और लोगबाग उनकी बड़ी इज्जत करते हैं। साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि हमेशा गैर जिम्मेवार लोग ही कस्में खाते हैं। जरा जरासी बात के लिये कस्में खाना कोई इज्जत या शोभा की बात नहीं है।

कुरान में खुदा ने जरा २ सी बातों के लिये पचासों बार कस्में खाकर उनका बयान किया है, इससे कुरानी खुदा स्वयं गैर जिम्मेवार व्यक्ति जैसा साबित होता है। घोड़े की कसम, रात की कसम, तूरसीना पहाड़ की कसम, चिराग की कसम, ऊंट, बकरी, कुतिया, बिल्ली, थाली, लोटा, कोट पतलून, चाय, बिस्कुट, जूता, चप्पल आदि की कोई कसमें खा खाकर बातें करने लगे तो लोग ऐसे आदमी को क्या समझेंगे, यह हर कोई समझ सकता है। तो घोड़ा, पहाड़, चिराग, दिन, रात, चांद, सूरज, धूप, तारे, आसमान वगैरः की सैकड़ों कसमें खाने वाले खुदा के बारे में भी वैसा ही समझा जा सकता है। खुदा

की अगर बातों का विश्वास जो नहीं करते हैं। वे उसकी कसमों पर भी कोई इतमीनान नहीं करेंगे। जिसकी बात का विश्वास नहीं होता है उसकी कसमों पर भी कोई भरोसा नहीं करता है।

खुदा ने कुरान में कहा है कि मुसलमान अपनी कसमों को भी तोड़ सकते हैं, अर्थात् झूंठी कसमें खा सकते हैं। तो इसका मतलब यह हुआ कि खुदा झूंठ बोलने, झूंठी कसमें खाने का प्रचार करता है। जो खुदा दूसरों को झूंठी कसमें खाने की इजाजत देता हो वह खुद भी झूंठी कसमें खा सकेगा। इसलिये यदि हम या कोई यह कह दे कि कुरान में खुदा ने सारी की सारी कसमें झूंठी ही खाई हैं तो उसमें क्या गलती होगी। इसके मानी तो यह होंगे कि दुनियां में कुरान के मानने तथा तदनुकूल आचरण करने वाले मुसलमानों की किसी भी बात पर कोई आदमी विश्वास नहीं करेगा। किस मुसलमान की कौनसी कसम पक्की है और कौन सी कच्ची होती है इसकी जांच कोई नहीं कर सकता है। हर कसम को वह अपना उल्लू सीधा करने के बाद कच्ची कह कर तोड़ सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि मुसलमान कौम हमेशा धोखेबाज रही है। पाकिस्तान की मौजूदा सरकार इसका जीता जागता नमूना है। हिन्दुओं ने झूंठी कसमों पर विश्वास करके हमेशा मुसलमानों से धोखे खाये हैं। आगे सावधान रहने की जरूरत है। क्योंकि उनके धर्म ग्रन्थ कुरान में उनको झूंठी कसमें खाने की इजाजत दे रखी है।

सबसे मजेदार बात यह रही है कि कु० सूरे नहल पारा १० आयत ६३ में कुरानी खुदा ने खुदा की कसम खाई है।

पता नहीं यह दूसरा खुदा कौन सा निकल आया जिसकी कसम कुरान के खुदा ने खाई है। मुसलमान मौलवी लोगों से पूछना चाहिये।

बीसवां अध्याय

कुरान में खुदा ने सलाम किये

'सारे जहान में (हर तरफ से) नूह पर सलाम' ।७९। इब्राहीम पर सलाम ।१०९। मूसा और हारून पर सलाम है ।१२०। इल्यास पर सलाम है ।१३०। पैगम्बरों पर सलाम है ॥१८१॥ कु० सू० साफ्फात पा० २३ ॥

और सलाम है उस (ईसा) पर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन जिन्दा होगा।

॥१५॥ कु० सू० मरियम पा० १६ ॥

समीक्षा—कुरान का दावा है कि खुदा से बड़ी कोई हस्ती नहीं हो सकती है, वह संसार में सबसे बड़ा है। यह भी सभी जानते हैं कि सलाम हमेशा छोटा अपने से बड़े को करता है फिर चाहे वह इल्म, दौलत, उम्र या पद (रुतबा) किसी में भी बड़ा हो। कुरानी खुदा ने बड़े आदाब के साथ नूह, इब्राहीम ईसामसीह, इल्यास तथा अन्य पैगम्बरों को सलाम बजाये (किये) हैं। इससे सिद्ध है कि ये लोग खुदा से किसी न किसी बात में बड़े जरूर थे। इससे मुसलमानों का खुदा इन्सान से किसी न किसी बात में छोटा सावित हो गया। ऐसा कमजोर

आदमी खुदाई का दावा यदि करता है तो वह मिथ्या है। उससे तो नाचीज इन्सान ही बड़ा है।

कुरान में मूर्ति पूजा निषेध

'(इब्राहीम ने) कहा क्या तुम ऐसी चीजों को पूजते हो जिनको तुम (आप) तराश कर बनाते हो ।९५। तुमको और जिन चीजों को तुम बनाते हो अल्लाह ही ने पैदा किया है' ।।९६।। कु० सू० साफ्फात पा० २३ ।।

समीक्षा—कुरान का मूर्ति पूजा के निषेध में ऊपर का तर्क तो सुन्दर है, पर यदि हम विचार पूर्वक सोचें तो संसार के सारे ही मुसलमान इसी तर्क पर काफिर साबित हो जाते हैं। क्योंकि वे काबे की मस्जिद को पूजते हैं, उसी की ओर मुह करके नमाज पढ़ते है, जिसे उन्होंने भी खुद ही बनाया है। वह भी तो खुद की बनाई हुई नहीं है। और इससे बड़ा कुफ्र वे यह करते हैं कि हज्ज को जाकर काबे में 'संगे अस्वद' नामी पत्थर को बड़े प्यार व भक्ति से बोसा (चूमा) लेकर, उसकी मनमें पूजा (आदर) करते हैं। दूसरों पर हमला करने से पहिले मुसलमानों को अपना घर ही देखना बेहतर होगा।

कुरान में नर बलि प्रथा

'फिर जब लड़का इब्राहीम के साथ चलने फिरने लगा तो इब्राहीम ने कहा कि बेटा मैं स्वप्न मे देखता हूँ कि मैं तुझको बलिदान कर रहा हूँ फिर देख कि तेरी क्या राय है। (बेटे ने) कहा कि ऐ बाप ! जो तुमको हुक्म हुआ है तू कर, खुदा ने चाहा तू मुझको संतोषी पायगा ।१०२। फिर जब दोनों (बाप बेटों) ने हुक्म पा और बाप ने (हलाल करने के लिये) बेटे को माथे के बल पछाड़ा ।१०३। और हम (खुदा) ने उसे पुकारा

कि ऐ इब्राहीम ! (१०४) तूने स्वप्न को सचकर दिखाया, नेको को हम ऐसा ही बदला देते हैं।१०५। कु०सू० साफ्फात पा० २३।

समीक्षा—इससे प्रगट है कि उस युग में मुसलमानों के देश में भी मनुष्यों को भी बलिदान देवता के नाम देने की प्रथा मौजूद थी और लोग उस पाप कर्म को अच्छा काम मानते थे। वरना इब्राहीम को न तो ऐसा ख्वाब हो सकता था और न वह ऐसे भयानक ख्वाब पर विश्वास करके अपने बेटे की बलि देने को ही तैयार होता।

रोजों में विषय भोग जायज कर दिया

'(मुसलमानो) रोजों की रातों में अपनी बीबियों के पास तुम्हारा जाना जायज कर दिया गया है। वह तुम्हारी पोशाक है और तुम उनको पोशाक हो। अल्लाह ने देखा तुम (चोरी चोरी) उनके पास जाने से अपना (दीन) नुकसान करते थे, तो उसने तुम्हारा अपराध क्षमा कर दिया और तुम्हारे अपराध से दर गुजर की। पस अब रोजों में (रात के वक्त) उनके साथ हम विस्तर हो और जो नतीजा खुदा ने तुम्हारे लिये लिख रखा है उसकी इच्छा करो और खाओ पियो…।

॥१८७॥ कु० सू० बकर पा० २ ॥

'(ऐ पैगम्बर ! लोग) तुमसे हैज के बारे में पूछते हैं तो समझा दो कि वह गन्दगी है। हैज के दिनों में औरतों से अलग रहो, और जब तक पाक न होलें उनके पास न जाओ। फिर जब नहा धोलें, तो जिधर से जिस प्रकार अल्लाह ने तुमको बता दिया है उनके पास जाओ…।२२२। तुम्हारी बीबियां तुम्हारी खेतियां हैं। अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिये आयन्दा का भी बन्दोबस्त रखो और

अल्लाह से डरो और जाने रहो कि उसके सामने हाजिर होना है। (ऐ पैगम्बर) ईमान वालों को खुश खबरी सुना दो।'

॥२२३॥ कु० सू० बकर पा० २ ॥

समीक्षा—कुरान का खुदा बड़ा कमजोर आदमी था जो आगे की बात भी नहीं जान पाता था। उसने पहिले तो रोजों में मुसलमानों को विषयभोग की मना कर दी थी। पर जब देखा कि वे लोग जोश में आकर गड़बड़ कर ही डालते हैं और मानते नहीं हैं तो उसने उस नाजायज बात को भी जायज करार दे दिया।

जो खुदा बिना सोचे समझे कानून बना देता है और बाद को अपनी गलती महसूस करके कानून को रद्द करके तरमोम (संशोधन) करता रहता है, ऐसा ना समझ खुदा दरसल खुदा नहीं माना जा सकता है। यह तो कम अक्ल खुदा की बातें हैं जो रोज अपनी बातों में तरमोम किया करता है। ऐसे खुदा और कम अक्ल इन्सान में फर्क ही क्या रह जाता है।

कुरान में ब्याज (सूद) खाना हराम है

'जो लोग ब्याज खाते हैं, (कयामत के दिन) खड़े नहीं हो सकेंगे ··· अल्लाह ने सूद को हराम (नापाक) कर दिया है। जिसके पास उनके परवदिगार की नसीहत पहुँची और उसने ब्याज खाना छोड़ दिया। जो सूद पहिले (ले चुका) है वह उसका हुआ, और उसका मामला खुदा के हवाले, और फिर जो वही काम करेगा सो ऐसे लोग दोजखी हैं और वह हमेशा नरक ही में रहेंगे।२७५। 'अल्लाह ब्याज को मिटाता और खैरात को बढ़ाता है···।२७६। कु० सू० बकर पा० ३ ॥

समीक्षा—सूद खाना यदि घोर पाप है तो मुसलमानी

मुल्कों में जो बैन्कें सूद लेती व रुपया जमा करने वालों को सूद देती हैं उनके चलाने वालों, उन मुल्कों की सरकारों को तो काफिर घोषित ही कर देना चाहिये ? ना पाकिस्तान, अरब, ईरान, टर्की आदि मुल्कों में क्या सब सरकारें दोजखी मानी जावेगी ?

कुरान और ओ३म

कुरान शरीफ पारा २० सूरे अन्कबूत आयत १ में लिखा है 'अल्लाह के नाम से जो रहमवाला कृपालु है। अलिफ, लाम, मीम।'

कुरान के टीकाकार मौ० बशीर अहमद M. A. ने अपने कुरान के पा० ३ सूरे अल इमरान आ० ७ पर फुटनोट में लिखा है···मुशाबिह वे हैं जिनको कई पहलुओं से समझ सकते हैं या वे अक्षर हैं जिनका तात्पर्य कोई नहीं जानता, जैसे अलिफ लाम, मीम।

इसका तात्पर्य यह है कि 'अलिफ लाम मीम' इन अक्षरों का अर्थ कुरान के भाष्यकार भी नहीं समझ पाये है या जान-बूझकर वे अर्थ खोलना नहीं चाहते हैं।

अरबी के व्याकरण के अनुसार वाड अक्षर लाम का स्थान, ग्रहण कर लेता है। तब अलिफ + वाड + मीम मिलकर सीधा सा शब्द ओ३म् बन जाता है जो कि परमात्मा का मुख्य नाम है। इस प्रकार कुरान में 'ओ३म्' के नाम का परमेश्वर के लिये प्रयोग स्पष्ट है।

कुरान और वेद

कुरान शरीफ पा० ११ सूरे यूनिस आ० ६१ में लिखा है 'तुम किसी दशा में हो और जो कोई सी कुरान की आयत पढ़ कर सुनाओ और तुम कोई भी कर्म करते हो–जब तुम उसमें लगे रहते हो हम तुमको देखते रहते हैं और तुम्हारे परवर्दिगार से जरा भी कुछ छिपा नहीं रह सकता न जमीन में और न आसमान में और जर्रे से छोटी चीज हो या बड़ी, रोशन किताब में लिखी हुई है।'

कुरान एक ऐसी किताब की ओर इशारा कर रहा है जिसमें सृष्टि विद्या की सभी बातें दी हुई हैं। वह किताब रोशनी (प्रकाश) वाली है। प्रकाश या रोशनी का अर्थ ज्ञान होता है तथा अन्धकार का अर्थ अविद्या होता है। वेद शब्द का अर्थ भी ज्ञान अथवा प्रकाश है। वेद (सभी सत्य विद्याओं को प्रकाशित करने वाले, सृष्टि के ज्ञान विज्ञान की कुञ्जी, समस्त सत्य विद्याओं के मूल) ग्रन्थ ही विश्व में ऐसे ग्रन्थ हैं जिनकी ओर कुरान की उक्त आयत का इशारा हो सकता है। अन्य ऐसा विश्वका कोई भी ग्रन्थ नहीं है जिसमें सभी विद्यायें बीज रूप से सन्निहित हों।

इससे स्पष्ट है कि कुरान में वेदों का उल्लेख इशारे के रूप में किया गया है।

मक्का और महादेव

मक्का जो विश्व भर के मुसलमानों की पुण्य भूमि है उसका मूल नाम 'महाकाया' है। अतीत काल में यहां महादेव जी के मन्दिर थे। इस स्थान पर ३६० शिवलिंग स्थापित थे। मुहम्मद

साहब के समय में उनके साथियों ने इस स्थल पर आक्रमण किया था। वहां के शैव लोग पराजित हो गये और मुहम्मद के अनुयायी लोगों का उस पर अधिकार हो गया। इन लोगों ने शिवलिंगों को नष्ट भ्रष्ट करके मन्दिर तोड़ डाले। किन्तु एक लिंग अभी तक वहाँ पूर्ववत स्थापित है। वह शिवलिंग इतना बड़ा और भारी है कि यदि चार हाथी एक साथ मिल कर उसे खींचें तभी वह हटाने में समर्थ हो सकते हैं। आज भी हाजी मुसलमानों की तीर्थ यात्रा (हज्ज) तब तक अधूरी रहती है जब तक कि वे उस शिवलिंग का चुम्बन नहीं लेते हैं। आज उस शिवलिंग को जो काले पत्थर का बना हुआ है 'संगे अस्वद' कहा जाता है। हाजी मुसलमान उसे बड़ी इज्जत की निगाह से देखते हैं।

अभी कुछ दिन पहिले की बात है कि मक्का से करीब २० मील की दूरी पर हनुमान जी की एक प्रतिमा (मूर्ति) मिली है। यह तथ्य इस बात के परिचायक हैं कि मध्य काल में मक्का का स्थान हिन्दू सभ्यता व संस्कृति का अरब में केन्द्र स्थल रहा था।

❀ समाप्त ❀

गुरु जिरजानन्द दण्डी
5332